04 - भारत जैसे देश में बहुभाषा के विरोध के खतरे

05 - सामाजिक क्रान्ति का पर्व है गणेशोत्सव

A Daily News Magazine

इंदौर

मंगलवार, 19 सितंबर, 2023

06- हरतालिका तीज पर पूजन हेतु बड़ी संख्या में ताप्ती तट पहुंची महिलाएं

07- जन आशीर्वाद यात्रा का धार विधानसभा में भव्य...

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 8 अंक 351 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

चीनी खतरा : भारतीय सेना भी सुरंग युद्ध कला को अपनाए

ले.जन. एच.एस. पनाग (रि)

भारत की उत्तरी सीमाओं पर इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास में नरेंद्र मोदी सरकार के तहत भारी तेजी आई है, खासकर सड़कों के निर्माण और हवाई अड्डों के आधुनिकीकरण के मामले में। इसकी शुरुआती योजना कांग्रेस नेतृत्व वाली यूपीए सरकार ने 2007 में ही बनाई थी लेकिन 2014 में आई वर्तमान सरकार ने इसके लिए बड़ा बजट निश्चित किया और वह इन सड़कों को आगे बढ़ाकर वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) तक ले जाने की इस योजना को लागू करने में ज़ोरशोर से भिड़ गई। अप्रैल-मई 2020 में चीनी सेना की घुसपैठ और इसके बाद सेना की भारी तैनाती ने इसे और जरूरी बना दिया।

गौरतलब है कि सेना की एहतियातन तैनाती के बिना एलएसी तक सड़कों के निर्माण ने अप्रैल-मई 2020 में चीनी सेना द्वारा हमले की पहल को कामयाब बनाया और भारत को लद्दाख में 1 हजार वर्ग किलोमीटर से ज्यादा जमीन पर अपना नियंत्रण गंवाना पड़ा। बॉर्डर रोड्स संगठन के महानिदेशक ले.जनरल राजीव चौधरी ने उम्मीद जताई है कि भारत अगले तीन-चार साल में सड़कों के मामले में चीन की बराबरी कर लेगा। अब युद्ध का स्वरूप मुख्यतः 'प्रीसीज़न गाइडेड म्यूनिशंस' (पीजीएम) और ड्रोनों पर जिस तरह निर्भर होता जा रहा है। इसके मद्देनजर हम स्थायी रक्षापंक्ति और संभारतंत्र के इन्फ्रास्ट्रक्चर की सुरक्षा को मजबूत करने में पिछड़ रहे हैं। उपग्रह, विमान, ड्रोन, रडार, इलेक्ट्रोनिक दखल, आदि के रूप में निगरानी और टोही व्यवस्था के जो आधुनिक साधन हैं, वे युद्धक्षेत्र में सेना को लक्ष्य के बारे में स्पष्ट रूप से बता देते हैं। तकनीक के युद्धक्षेत्र का अच्छा उदाहरण रूस-यूक्रेन युद्ध का है। लेकिन मसला सापेक्ष किस्म का है और सभी तरह के खतरों के खिलाफ सक्रिय और परोक्ष जवाबी कार्रवाई की जा सकती है। ऐसे माहौल में अच्छी तरह से सुरक्षित बचाव पक्ष उस आक्रमणकर्ता से साफ बढ़त ले सकता है, जिसे जमीन पर कब्जा करने के लिए खुली कार्रवाई करने को मजबूर किया गया हो। तकनीक के मामले में दोनों पक्षों के बीच बड़ा अंतर न हो तो अकेले तकनीक तुलनात्मक रूप से कमजोर बचाव पक्ष को परास्त करने की गारंटी नहीं दे सकती।

सैन्य मामलों में भारत और चीन के बीच फर्क मुख्यतः साइबर और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध और पीजीएम, ड्रोन, मिसाइल आदि के स्तर और उनकी संख्या को लेकर है। भारत जब तक इस फर्क को मिटा नहीं देता तब तक चीन को 'शह देने' के लिए सामरिक आक्रमण की क्षमता बनाए रखते हुए रणनीतिक स्तर पर सक्रिय रक्षात्मक रणनीति में भरोसा करना ही बेहतर होगा। फिलहाल, संख्या और स्तर के लिहाज से जवाबी कार्रवाई की भारत की क्षमता चीन के बराबर नहीं है। ऐसे में, अच्छी तरह सुरक्षित रक्षापंक्ति, और जमीन के नीचे तैनात सैन्य साजोसामान चीन की बढ़त को काफी हद तक नाकाम कर सकते हैं।

सुरंग युद्ध 4 हजार साल पुराना है और इस तरीके का इस्तेमाल हमला करने और बचाव करने के लिए भी किया जाता है। पिछले 200 साल में, पहले घोड़ों की वजह से और बाद में यंत्रों अथवा विमान/हेलिकॉप्टर की वजह से रफ्तार की सुविधा ने सुरंगों में की गई तैनातियों को निष्प्रभावी कर दिया। चीन सुरंग युद्ध में उस्ताद रहा है और उसने 1937-45 में चीन-जापान युद्ध के दौरान इस तरीके को नया जीवन प्रदान किया था। तब उसने हेबे प्रांत के रांझूयांग गांव में, जो आज सैलानियों का आकर्षण केंद्र है, युद्धक्षेत्र में 15 किमी लंबी सुरंग खोदी थी और मांदों को घरों से जोड़ दिया था ताकि वह जापानी सैनिकों पर पीछे से हमला कर सके। जापान ने यह युद्धकला चीन से सीखी और इसका इस्तेमाल प्रशांत सागर में द्वीपों के युद्धों में किया। पेलेलु और इवो जिमा द्वीपों, जिन्हें अमेरिकी नौसैनिकों ने बड़ी कीमत चुका कर जीता था, की लड़ाई इसका उल्लेखनीय उदाहरण है।

1950-53 के कोरियाई युद्ध में, उत्तरी कोरिया और चीन की सेनाओं ने अमेरिका के हवाई और तोप हमलों से बचने के लिए पहाड़ी जैसे क्षेत्र में भूमिगत अड्डे बनाए थे। वियतनाम में, वियतकोंग छापामारों ने सुरंग युद्ध को कला के रूप में बदल लिया था। आज के आतंकवादी भी अफगानिस्तान, सीरिया, इजरायल-फिलस्तीनी सीमा पर छापामार हमलों के लिए सुरंगों का इस्तेमाल कर रहे हैं।

सुरंगें बचाव के लिए कारगर हैं, क्योंकि वे पीजीएम की क्षमता की पोल खोल देती हैं और देशों को अक्सर बेहद विनाशक उपाय करने के लिए मजबूर करती हैं।

हमारे पहाड़ों की रक्षापंक्ति छोटे हथियारों और गैर-पीजीएम तोपों के हमलों का सामना करने में सक्षम है, लेकिन उलटी ढलान वाली रक्षपंक्ति के कारण उनकी ताकत कमजोर पड़ती है। ऊपरी चोटियों पर रक्षापंक्ति पारंपरिक गोलाबारी को झेल सकती है और बचाव पक्ष को हमलावर से बढ़त मिली होती है, जो खुले में होता है और ऑक्सीजन की कमी वाले इलाके में चढ़ कर हमला करना होता है।

पहाड़ की चोटी पर खड़े अंगूठे जैसी रक्षापंक्ति का यह स्वरूप करीब एक सदी से जस का तस बना हुआ है। ऐसी रक्षापंक्ति ड्रोन समेत हवाई या जमीनी मार करने वाले पीजीएम के आगे ध्वस्त हो सकती है। ठेठ नजदीकी लड़ाई बीती बात हो गई। चीनी सेना पीएलए प्रतिकूल इलाके में 'नजदीकी लड़ाई' से दूर रहकर, ऊंची चोटी पर 'बढ़त के साथ तैनात रक्षपंक्ति' को नाकाम कर सकती है। अगर वह जमीन पर कब्जा करने के लिए ताकत का प्रयोग करने का फैसला करती है तब वह पीजीएम, साइबर और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध का भारी सहारा लेकर आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल से करेगी। साइबर और इलेक्ट्रानिक युद्ध में पीएलए की महारत और आक्रमण तथा सुरक्षा के पीजीएम, ड्रोन, मिसाइलों जैसे साधनों के स्तर और उनकी संख्या में बराबरी करने में लंबा समय लगेगा, क्योंकि हमारा रक्षा बजट वैसा नहीं है और उसमें जल्दी वृद्धि की भी उम्मीद नहीं है। सुरंग युद्ध गतिरोध को तोड़ने और भौतिक तथा स्टैंड-ऑफ हमलों के लिए एक अंतरिम समाधान हो सकता है।

पीएलए संभवतः संभारतंत्र, संचार केन्द्रों, परमाणु हथियारों, ऊंचे हेडक्वार्टर्स कमान पोस्ट आदि के वास्ते एलएसी से 60-70 किमी दूर डीबीओ सेक्टर के सामने भूमिगत ठिकाने बना रही है। भारतीय सेना ने सही सबक सीखा है- स्थायी रक्षापंक्ति, संभारतंत्र, संचार केंद्र, कमांड पोस्ट, और हवाई अड्डों आदि के साथ स्थायी रक्षापंक्ति के निर्माण के लिए सुरंग युद्धकला को अपनाने का। लेकिन अटकलों के बावजूद, भारतीय सेना ने सामरिक अवधारणा के रूप में सुरंग युद्ध को औपचारिक रूप से अपनाया नहीं है। ऊंचे इलाके सुरंग युद्ध के लिए उपयुक्त होते हैं। सेना को पहाड़ी क्षेत्रों में हमारी स्थायी रक्षपंक्ति के वास्ते सुरंग युद्ध की संभावनाओं का विस्तृत अध्ययन करना चाहिए।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

पुरानी संसद से अपने आखिरी भाषण में बोले पीएम मोदी

संसद के लिए जिन्होंने सीने पर गोलियां झेली उन्हें नमन

यह लोगों के पसीने से बना है...

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद का विशेष सत्र सोमवार से शुरू हो गया है। पुरानी संसद से अपने आखिरी भाषण में पीएम मोदी ने लोकसभा सदन की पुरानी बातों का जिक्र किया। इस दौरान उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के कार्यकाल से लेकर पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी सरकार के उस वक्त को याद किया, जब एक वोट से उनकी सरकार गिर गई थी। पुरानी संसद में सोमवार को संसद की कार्यवाही का आखिरी दिन था। मंगलवार यानी आज 19 सितंबर से संसद की कार्यवाही नई पार्लियामेंट बिल्डिंग में होगी।

- **नेहरू, इंदिरा, राजीव की तारीफ की, कहा- सदन ने 370 को हटते देखा, कैश फॉर वोट भी हुआ**

संसद कवर करने वाले पत्रकारों की प्रशंसा की

पीएम मोदी ने अपने संबोधन में उन पत्रकारों को भी याद किया जिन्होंने संसद कवर कई सालों तक संसद कवर किया। पीएम मोदी ने कहादेश में ऐसे पत्रकार जिन्होंने संसद को कवर किया शायद उनके नाम जाने नहीं जाते होंगे लेकिन उनको कोई भूल नहीं सकता है। सिर्फ खबरों के लिए ही नहीं भारत की इस विकास यात्रा को संसद भवन से समझने के लिए उन्होंने अपनी शक्ति खपा दी।

मीडिया से बोले मोदी-ये सत्र समय के हिसाब ये बहुत बड़ा, भारत गर्व करेगा

ये सत्र समय के हिसाब ये बहुत बड़ा, भारत गर्व करेगा कि संसद के विशेष सत्र के आगाज से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संसद के बाहर मीडिया को संबोधित किया। उन्होंने अपने संबोधन की शुरुआत चंद्र मिशन की सफलता से की। पीएम ने कहा कि चंद्रयान-3 हमारा तिरंगा फहरा रहा है। शिवशक्ति पॉइंट नई प्रेरणा का केंद्र बना है हमें गर्व से भर रहा है।

पीएम ने जी20 की सफतला का जिक्र किया

संसद के विशेष सरकार ने 18 से 22 सितंबर के लिए बुलाया है, जिसमें कई बिल पेश किए जाएंगे। पीएम मोदी ने संबोधन में हल ही में समपन्न हुए जी20 का जिक्र करते हुए कहा, जी20 की अभूतपूर्व सफलता, 60 से अधिक स्थानों पर विश्व भर के नेताओं का स्वागत, मंथन और टू स्पिरिट में फेडरल स्ट्रक्चर का एक जीवंत अनुभव भारत की विविधता, भारत की विशेषता के साथ जी20 अपने आप में एक त्योहार बन गया।

21 सितम्बर को ओंकारेश्वर में होगा 'स्टैच्यु ऑफ वननेस' का अनावरण, शिवराज ने की तैयारियों की समीक्षा

पूर्ण गरिमा, भव्यता और दिव्यता के साथ हो 'वननेस स्टैच्यु' अनावरण कार्यक्रम : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि 21 सितम्बर को ओंकारेश्वर में हो रहा 'स्टैच्यु ऑफ वननेस' का अनावरण कार्यक्रम पूर्ण गरिमा, भव्यता और दिव्यता के साथ किया जाए। कार्यक्रम में शामिल होने वाले देश के सभी प्रमुख साधु-संतों का परंपरागत स्वागत-सत्कार किया जाए। वर्षा ऋतु को देखते हुए आयोजन स्थल तथा यातायात व्यवस्था के लिए जिला प्रशासन विशेष रूप से संवेदनशील और सतर्क रहे तथा बिन्दुवार प्लानिंग करें। मुख्यमंत्री श्री चौहान कार्यालय भवन समत्व में ओंकारेश्वर स्थित एकात्म धाम में एकात्मता की मूर्ति के अनावरण कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा कर रहे थे। संस्कृति मंत्री सुश्री ऊषा ठाकुर, मुख्य सचिव श्री इकबाल सिंह बैंस बैठक में वर्चुअली शामिल हुए। समत्व भवन में अपर मुख्य सचिव कृषि श्री अशोक वर्णवाल, प्रमुख सचिव संस्कृति श्री शिवशेखर शुक्ला, प्रमुख सचिव ऊर्जा श्री संजय दुबे तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे। बैठक से इन्दौर संभागायुक्त तथा खण्डवा कलेक्टर वर्चुअली जुड़े।

केरल की धार्मिक परम्पराओं के अनुसार होगा साधु-संत का स्वागत

मुख्यमंत्री श्री चौहान 21 सितम्बर को प्रातः 11 बजे केरल की धार्मिक परम्पराओं अनुसार साधु-संतों का स्वागत करेंगे। इसके बाद मुख्यमंत्री और पूज्य संतों द्वारा वैदिक यज्ञ अनुष्ठान में आहुति दी जाएगी। इस अवसर पर देशभर की शैव परंपरा के नृत्यों की प्रस्तुतियों के साथ ही भारतीय प्रदर्शनकारी शैलियों के कलाकारों द्वारा आचार्य प्रवर्तित पंचायतन पूजा परंपरा का प्रस्तुतिकरण होगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान तथा पूज्य संतों द्वारा एकात्मता की मूर्ति के अनावरण और अद्वैत लोक का भूमि एवं शिला-पूजन किया जाएगा। कुल 101 बटुकों द्वारा वेदोच्चार व शंखनाद के बीच मुख्यमंत्री श्री चौहान और पूज्य संत एकात्मता की मूर्ति के चरणों में पुष्पांजलि अर्पित करेंगे। इसके बाद मुख्यमंत्री श्री चौहान, संतगण और विशिष्टजन सहित ब्रह्मोत्सव के लिए प्रस्थान करेंगे।

सुप्रभात

खड़े हैं मुझको ख़रीदार देखने के लिए
मै घर से निकला था बाज़ार देखने के लिए
हज़ार बार हज़ारों की सम्त देखते हैं
तरस गए तुझे एक बार देखने के लिए
क़तार में कई नाबीना लोग शामिल हैं
अमीरे-शहर का दरबार देखने के लिए
जगाए रखता हूँ सूरज को अपनी पलकों पर
ज़मीं को ख्वाब से बेदार देखने के लिए
अजीब शख्स है लेता है जुगनुओ से खिराज़
शबों को अपने चमकदार देखने के लिए
हर एक हर्फ़ से चिंगारियाँ निकलती हैं
कलेजा चाहिए अख़बार देखने के लिए

- राहत इंदौरी

मध्य प्रदेश समेत 5 राज्यों के चुनाव टलने की आशंका

मध्यप्रदेश समेत पांच राज्यों में चुनाव की सरगर्मियां लगातार बढ़ रही है। मतदाताओं को लुभाने के लिए सारे दांव-पेंच आजमाए जा रहे हैं। लेकिन, अभी यह आशंका बनी हुई है, कि ये विधानसभा चुनाव होंगे भी या नहीं! यदि 'वन नेशन-वन इलेक्शन' जैसा कोई बड़ा फैसला हो गया, तो इन चुनावों को संभवतः 6 महीने के लिए टाला जा सकता है। एक साथ चुनाव के लिए संवैधानिक स्थितियों को अनुकूल बनाया जाना जरुरी है और ये तभी संभव है संवैधानिक रूप से एक साथ चुनाव के लिए बदलाव कर लिए जाएं।

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

मध्य प्रदेश समेत देश के पांच राज्यों में अगले 3 महीने बाद चुनाव होने की रूपरेखा बना रही है। राजनीतिक पार्टियां भी उसी के मुताबिक अपनी रणनीति बनाने में लगी हैं। किसी को यह आशंका नहीं है कि विधानसभा चुनाव नहीं होंगे! इस बात में किसी को कोई शंका-कुशंका भी नहीं है। लेकिन, लाख टके का सवाल है, कि यदि यह चुनाव आगे बढ़ गए तो क्या होगा! अभी किसी को इस बात का अंदाजा तो नहीं है, पर यदि ऐसा हुआ तो? इसी 'तो' ने ही सवाल खड़े किए हैं। क्योंकि, जिस तरह का माहौल बनाया जा रहा है, उससे ये आशंका प्रबल होती है कि 'वन नेशन-वन इलेक्शन' को लेकर सरकार कोई बड़ा फैसला ले सकती है।

क्या पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव निर्धारित समय पर होंगे, यह सवाल उठना इसलिए लाजिमी है कि केंद्र सरकार जिस तरह 'वन नेशन-वन इलेक्शन' की बात को आगे बढ़ा रही है, उसे देखकर इस बात की संभावना नहीं है कि चुनाव समय पर हों। संभावना तो इस बात की भी व्यक्त की जा रही कि पांचों राज्यों के चुनाव अगले 6 महीने के लिए टाले जा सकते हैं। यदि ऐसा होता है, तो इस अवधि में राष्ट्रपति शासन लगाना पड़ेगा। फिर छह महीने पूरे होने से पहले विधानसभा चुनाव कराए जाएंगे। ऐसी स्थिति में संभव है कि 5 राज्यों विधानसभा और लोकसभा के चुनाव साथ करवाकर केंद्र सरकार अपनी मंशा पूरी करे। लेकिन, जिन राज्यों में अभी विधानसभाओं को लम्बा समय है, वहां छेड़छाड़ होना संभव नहीं है।

दरअसल, केंद्र की बीजेपी सरकार की मंशा भी यही है, कि जब राज्यों में राष्ट्रपति शासन होगा और जनता के सामने कोई सरकार नहीं होगी, तो चुनाव टलने से जो संभावित एंटी इनकंबेंसी का माहौल बना है, वह भी ठंड पड़ जाएगा। कम से कम मध्य प्रदेश के अब तक सामने आए सभी अनुमानों का इशारा है कि यहां भाजपा सरकार की वापसी की संभावना नहीं है। राजस्थान, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिजोरम में भी बीजेपी सत्ता में नहीं है। मिजोरम में 'मीजों नेशनल फ्रंट' (एमएनएफ) की सरकार है, जहां एनडीए सहयोगी है।

मध्यप्रदेश में अभी तक जो इशारा और जनता का मूड दिखाई दे रहा, वो बीजेपी के पक्ष में दिखाई नहीं दे रहा। ऐसे में लगता है कि बीजेपी के लिए मध्यप्रदेश आसान नहीं है। ऐसे में यदि 'वन नेशन-वन इलेक्शन' की स्थितियां बनती है और विधानसभा चुनाव अगले साल तक टल गए, तो यह स्थिति बीजेपी के लिए फायदेमंद होगी। निश्चित रूप से चुनाव टलने की स्थिति में बहुत बड़ा राजनीतिक फायदा साफ नजर आ रहा है। क्योंकि, जब मतदाता वोट डालने जाता है, तो वह दो मानसिकता से नहीं जाता। तब वो यह नहीं देखेगा कि मध्य प्रदेश की सरकार से हमारी नाराजी है, लेकिन केंद्र में हम मोदी की सरकार देखना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में वह केंद्र के समर्थन में मध्य प्रदेश में भी भाजपा को वोट दे सकता है। यह संभावना इसलिए प्रबल होती दी, कि सरकार ने संसद का विशेष सत्र बुलाया, पर जिसका कोई एजेंडा सामने नहीं आया। इसलिए अनुमान लगाया गया है कि संभवत सरकार का यही एजेंडा हो!

कयास लगाए जा रहे हैं, कि सरकार इस संदर्भ में जरूरी संविधान संशोधन की रूपरेखा बना सकती है। यदि संवैधानिक प्रावधान के तहत 'वन नेशन-वन इलेक्शन' की भूमिका बन गई, तो विपक्ष के सुप्रीम कोर्ट जाने की संभावनाएं भी क्षीण हो जाएगी। यह सिर्फ मध्य प्रदेश के संदर्भ में नहीं है, बाकी के चार राज्यों में भी यही स्थिति बन सकती है। सरकार ने 'वन नेशन-वन इलेक्शन' के सुझाव के लिए पूर्व राष्ट्रपति की अध्यक्षता में एक समिति भी गठित कर दी। यही वो इशारा है, जो बताता है कि केंद्र सरकार इसका मूड बना चुका है, बस उसके लिए ढांचा तैयार किया जा रहा है।

इस संबंध में विधि आयोग ने भी कहा है कि संविधान का मौजूदा ढांचा एक साथ चुनाव कराने के अनुकूल नहीं है। यदि 'वन नेशन-वन इलेक्शन' का अंतिम रूप से फैसला होता है, तो इसके लिए जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 के संविधान में विभिन्न संशोधनों और लोकसभा और राज्य विधानसभाओं की प्रक्रिया के नियमों में संशोधन की जरूरत होगी। लेकिन, विधि आयोग के मुताबिक, संवैधानिक संशोधनों की पुष्टि के लिए राज्य विधान सभाओं में भी 50 फीसदी वोटों की जरूरत पड़ेगी। विधि आयोग का यह भी सुझाव है, कि संविधान में इस तरह से संशोधन करना होगा कि कोई भी ऐसी नई लोकसभा या विधानसभा जो बीच में बनी हो, वो सिर्फ बचे हुए शेष कार्यकाल के लिए गठित की जाए।

भारत में एक साथ चुनावों को लेकर और भी कई चुनौतियां हैं। दरअसल, विधानसभा चुनाव राज्य का विषय हैं, इसलिए इन्हें किसी भी स्थिति में राष्ट्रीय स्तर पर नियंत्रित नहीं किया जा सकता। फिलहाल इन चुनावों को राज्य का चुनाव आयोग नियंत्रित करता है। लेकिन, यदि लोकसभा के साथ विधानसभा के भी चुनाव साथ होते हैं, तो इसके लिए एक और संवैधानिक संशोधन की जरूरत होगी। देश के लिए लोकसभा और राज्यों के लिए विधानसभा के एक साथ चुनाव को संभव करने के लिए, अनुच्छेद 83 (यह संसद के सदन की अवधि से संबंधित है), अनुच्छेद 85 (ये लोकसभा के विघटन से संबंधित है) और अनुच्छेद 172 (ये राज्य में विधानसभा की अवधि से संबंधित है) जैसे विभिन्न अनुच्छेदों में संवैधानिक बदलाव करना होगा। ये सब इतना आसान नहीं है कि चुटकी बजाते संभव हो! लेकिन, यदि केंद्र सरकार ने तय कर लिया तो मुश्किल भी नहीं होगा!

21वें विधि आयोग ने अपनी मसौदा रिपोर्ट में भी कहा कि देश में जिस तरह का माहौल है, उसे देखते हुए एक साथ चुनाव की जरूरत महसूस की जा रही है। विधि आयोग के मुताबिक, देश को लगातार चुनावी मूड में रहने से रोकने के लिए 'वन नेशन-वन इलेक्शन' ही अच्छा उपाय है। सैद्धांतिक रूप में यह एक अच्छा चुनाव सुधार भी है। इसलिए नीति आयोग ने संवैधानिक विशेषज्ञों, चुनाव विशेषज्ञों, प्रबोध वर्ग, सरकारी अधिकारियों के साथ राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को शामिल करते हुए एक केंद्रीय समूह के गठन का सुझाव दिया। इस समूह के लिए उचित कार्य विवरण तैयार करने की भी जरूरत होगी, जिसमें संवैधानिक और वैधानिक संशोधनों का मसौदा तैयार करना शामिल होगा। ऐसी सारी स्थितियों को देखकर ये आशंका गलत नहीं है कि पांच राज्यों के टाले जा सकते हैं। पर, यह कब और कैसे होगा, इसके लिए थोड़ा इंतजार करना होगा।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ मंगलवार, 19 सितंबर 2023

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

केबीसी 15-में बिग बी ने पूछा 7 करोड़ का सवाल

- पैरों में गिरकर रोया कंटेस्टेंट, बिग बी ने सीने से लगा लिया

मुंबई (एजेंसी)। सोमवार को सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन ने 'कौन बनेगा करोड़पति सीजन 15' के आगामी एपिसोड के लिए नया प्रोमो रिलीज किया। एक क्लिप में, अमिताभ बच्चन को एक कंटेस्टेंट को अपनी डिजाइनर जैकेट गिफ्ट में देते हुए देखा गया। जब उन्होंने

कहा कि उसे ठंड लग रही है, तो बिग बी ने उन्हें अपनी जैकेट दे दी। एक दूसरे प्रोमो में वही कंटेस्टेंट गेम शो में 7 करोड़ के प्रश्न की कोशिश करते हुए दिखाई देगा। कंटेस्टेंट भावुक हो गया और रोते हुए अमिताभ के पैरों पर गिर पड़ा। जब कंटेस्टेंट बिलखकर रो रहे थे, तो अमिताभ उनके पास पहुंचे। जब कंटेस्टेंट लगातार रोते रहे तो अमिताभ ने उनकी पीठ थपथपाई।

एशिया कप 2023

बाबर आजम-शाहीन अफरीदी की जोरदार लड़ाई

कराची (एजेंसी)। बाबर आजम की कप्तानी में पाकिस्तान क्रिकेट टीम बीते कुछ साल से शानदार प्रदर्शन कर रही है। एशिया कप 2023 में 10 सितंबर को भारत के हाथों मिली

रिकॉर्ड 228 रन से हार के साथ ही पाकिस्तान का बोरिया बिस्तर बंधना शुरू हो गया। पाकिस्तानी खेमे में एशिया कप से बाहर होने के बाद से खलबली मची हुई है। बाबर आजम पाकिस्तान के लिए सुपरस्टार हैं, उन्होंने एक बल्लेबाज के रूप में कई उपलब्धियां हासिल की हैं। एक कप्तान के तौर पर भी उन्होंने बेहतरीन प्रदर्शन किया है, लेकिन एशिया कप में उनके फैसलों की काफी आलोचना हुई थी। खासतौर पर फील्डिंग और गेंदबाजों के इस्तेमाल को उनकी कमजोरियों के तौर पर उजागर किया गया। एशिया कप के आखिरी मैच के बाद खबर आई थी कि शाहीन अफरीदी और बाबर आजम के बीच तीखी बहस हुई।

आकाशीय बिजली का कहर

यूपी के इन जिलों में 12 लोगों की दर्दनाक मौत.... कई गंभीर घायल

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल सहित अन्य हिस्सों में तेज बारिश हुई तो वहीं, आकाशीय बिजली ने भी अलग-अलग जिलों में जमकर तबाही मचाई।

आकाशीय बिजली की चपेट में आने से उत्तर प्रदेश के कुशीनगर, गाजीपुर, देवरिया, गोंडा और अंबेडकर नगर में अब तक 12 लोगों की जान चली गई। इसके अलावा मवेशियों पर भी आकाशीय बिजली का कहर टूटा और उनकी मौत की खबर है। आइए आपको बताते हैं कि यूपी के अलग-अलग जिलों में आकाशीय बिजली ने किस कदर कहर बरपाया।

आज से गणेशोत्सव शुरु

बेंगलुरु में गणेश चतुर्थी की धूम, ढाई करोड़ रुपए के सिक्कों और नोटों से सजाया गया मंदिर

नईदिल्ली/मुंबई/बेंगलूर (एजेंसी)। देशभर में गणेशोत्सव की तैयारियां पूरी हो गई हैं। आज 19 सितंबर से देशभर में गणपति बप्पा की धूम रहेगी। कर्नाटक के बेंगलुरु में जेपी नगर स्थित सत्य गणपति मंदिर परिसर को करीब ढाई करोड़ रुपए के सिक्कों और नोटों से सजाया गया है। बेंगलुरु और समूचे कर्नाटक में सोमवार से गणेश चतुर्थी उत्सव धार्मिक उत्साह के साथ शुरू हो गया। श्रद्धालु भगवान गणेश का आशीर्वाद लेने के लिए मंदिरों और पंडालों में जा रहे हैं। अपनी अनूठी सजावट के चलते सत्यगणपति मंदिर श्रद्धालुओं का ध्यान आकर्षित कर रहा है।

न्यासियों के मुताबिक, इस मंदिर का प्रबंधन संभाल रहे गणपति शिर्डी साई न्यास ने पांच, 10 और 20 रुपए के सिक्कों की मालाएं तैयार की हैं। इसी के साथ-साथ 10,20,50,100,200 और 500 रुपए के नोटों की भी मालाएं तैयार की गई हैं।

मुंबई में 69 किलो सोने और 336 किलो चांदी से बनी बप्पा की मूर्ति, 360.45 करोड़ का हुआ है बीमा

महाराष्ट्र में गणेश पूजा की तैयारियां धूमधाम हो गई है। इस बार गणपति पूजा के लिए मंडल ने सोने-चांदी की बरसात कर दी है। मुंबई की जीएसबी सेवा मंडल ने इस बार गणेश भगवान की प्रतिमा को 69 किलो सोने और 336 किलो चांदी से बनावाया है। मंडल के एक प्रतिनिधि ने मीडिया को बताया कि उन्होंने 360.45 करोड़ का बीमा भी कराया है।

कनाडा में हिंदी की दशा और दिशा पर विमर्श

(कनाडा से मोहन वर्मा) हिंदी दिवस पखवाड़े के अंतर्गत कनाडा में बसे प्रवासी भारतवासी साहित्यकारों की संस्था हिंदी राईटर्स गिल्ड द्वारा विगत 16 सितम्बर को एक आयोजन किया गया जिसमें हिंदी की दशा और दिशा पर सार्थक विमर्श हुआ। इसके साथ ही कोरोनाकाल की चुनौतियों को सम्भावनाओं में बदलती हिंदी विषय पर भी रचनाकारों ने अपनी बात रखी।

दो सत्रों में हुए इस कार्यक्रम का संचालन श्री संदीप ने किया और विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि आज हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर स्थापन करने और सम्मानित करने की ज़रूरत है। कार्यक्रम के आरम्भ में मानसी चटर्जी ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की।

श्रीमती आशा बर्मन ने कहा कि ज़ूम,गूगल मीट और वर्क फ्राम होम कोरोना काल की देन है। चुनौतियों के बीच उपजी सम्भावनाओं से वैश्विक रूप से हिंदी का भला हुआ है। ऐसे समय में जबकि लोग घरों में बन्द रहने को विवश थे हिंदी लेखनी को नये आयाम मिले और नई तकनीक ने प्रवासी लेखकों को भी नए श्रोताओ से जोड़ा। विदेशों में भी हिंदी का सम्मान बढ़ा है।

सुश्री शैलजा सक्सेना ने कहा कि कोरोनाकाल की बंदिशों के दौरान लोगों ने तकनीक की बाँह पकड़कर एक नई दुनिया का दरवाज़ा खोला। दुनिया के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक सम्भावनाओं के बीच अब ये चुनौती भी हमारे सामने है कि हम तकनीक के साथ साथ यथार्थ रूप में भी ज़मीन से जुड़कर हिंदी की बेहतरी की दिशा में काम करते रहें । साथ ही रचनात्मकता में दोहराव से बचते हुए नया सृजन करते हुए हिंदी का सम्मान बढ़ाएँ।

सुमन घई ने कहा कि कोरोनाकाल की चुनौतियों के बीच वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा की सम्भावनाएँ भी बढ़ी हैं। गूगल मीट,ज़ूम,यु ट्यूब, सोशल मीडिया के माध्यम से लेखक और पाठक के बीच की दूरी कम हुई है जिसे कोरोनाकाल की देन ही कहा जा सकता है। हिंदी के लिए चुनौतियों के बीच उपजी इन सम्भावनाओं का स्वागत किया जाना चाहिए।

कृष्णा वर्मा ने कहा कि कोरोनाकाल ने हमें बहुत से परिवर्तन दिखलाएँ हैं। आत्मकेन्द्रित व्यक्ति और अच्छे बुरे समय से हमें रूबरू करवाया है। साहित्य भी इससे प्रभावित हुआ है। विश्व की अनेक भाषाओं संग ख़ासकर हिंदी तकनीक के सहारे कोरोना काल में घर घर पहुँची है। ई-पत्रिकाओं के साथ अख़बारों के पीडीएफ ने अपनी जगह बनाई। वंदिता सिंहा ने कहा कि अब तक अनदेखे,अनसुने समय के बीते दो सालों ने चुनौतियाँ के बावजूद सम्भावनाओं के साथ एक नई राह दिखलाई है। हिंदी के लिए ये दो साल बहुत महत्वपूर्ण कहे जा सकते है।

दूसरे सत्र में कनाडा के उन रचनाकारों और सामाजिक कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया जो किसी न किसी रूप में हिंदी के प्रचार प्रसार में अपना योगदान दे रहें हैं, फिर चाहे वो किसी थिएटर के माध्यम से हो या एनजीओ या फिर हिंदी की दशा और दिशा बदलने में लगी किसी संस्था के माध्यम से हो। संस्था हिंदी राईटर्स गिल्ड के इस आयोजन में श्रुति शाह, आशा बर्मन,पंकज शर्मा,इंद्रा वर्मा, पुरुषोत्तम गुप्ता, सविता अग्रवाल,मानसी चटर्जी, विध्याभूषण दर,राज माहेश्वरी को कनाडा के कांसलेट प्रमुख श्री संजीव सकलानी द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

10वें भोपाल विज्ञान मेले में

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय को शैक्षणिक संस्थानों में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ

आरएनटीयू का स्टाल 10वें भोपाल विज्ञान मेले में बना आकर्षण का केन्द्र

भोपाल (नप्र)। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय को 10वें भोपाल विज्ञान मेले में शैक्षणिक संस्थानों में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय भोपाल के कुलपति डॉ संजय तिवारी, डॉ अनिल कोठारी महानिदेशक एमपीसीएसटी, श्री अमोघ गुप्ता अध्यक्ष विज्ञान भारती मध्य भारत के हाथों से विश्वविद्यालय के उपकुलसचिव डॉ अनिल तिवारी व टीम द्वारा प्राप्त किया गया। भोपाल विज्ञान मेले में पधारे चंद्रयान-3 के प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. पी वीरामुथुवेल द्वारा भोपाल विज्ञान मेले में आरएनटीयू का स्टाल विजिट किया और विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे कार्यों की बहुत सराहना की। इस मौके पर विश्वविद्यालय के डॉ. अनिल तिवारी व टीम द्वारा चंद्रयान-3 मिशन की सफलता हेतु शॉल श्रीफल भेंट कर उनका सम्मान भी किया गया। वहीं स्टाल पर श्री सुधांशु मनी जिन्होंने ट्रेन 18 के नाम से जानी जाने वाली वंदे भारत एक्सप्रेस का सपना साकार किया है, ने भी आरएनटीयू के प्रोजेक्ट्स की सराहना की।

चार दिवसीय विज्ञान मेले में आरएनटीयू का स्टाल आकर्षण का केंद्र रहा। इस स्टाल में एआईसी-आरएनटीयू के स्टार्टअप द्वारा बनाई गई इलेक्ट्रिक बाइक को सभी के द्वारा खूब सराहा गया। यह बाइक एक बार चार्ज होने पर 80 किलोमीटर तक चलती है और इसकी दर 10 से 15 पैसे प्रति किलोमीटर आती है। यह स्टार्टअप जीवाश्म ईंधन का एक अच्छा विकल्प है। वहीं स्मार्ट सोलरी इको फ्रेंडली साइकिल भी लोगों का ध्यान आकर्षित की। स्मार्ट सोलरी को विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों शिवम कुमार और शुभांशू कुमार ने डॉ. राकेश कुमार, सेंटर फॉर आईओटी एंड एडवांस्ड कम्प्यूटिंग रिसर्च सेंटर के हेड के मार्गदर्शन में बनाई है। जिसमें 48 वॉट की बैटरी का उपयोग किया गया है। यह सोलर पैनल, डायनेमो और चार्जिंग प्वाइंट से चार्ज होती है। फुल चार्ज होने पर तीस किलोमीटर तक चलती है। यह साइकिल इंटरनेट ऑफ थिंग्स टेक्नोलॉजी पर आधारित है। यह साइकिल बाइक का किफायती विकल्प है। प्रदर्शनी में मटेरियल साइंस केन्द्र के सुपरहाइडो फोबिक कोटिंग फार इंडस्ट्रीयल एप्लिकेशन, मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा निर्मित एडवांस सेफ्टी व्हीकल्स, आईसेक्ट पब्लिकेशन की किताबों को भी प्रदर्शित किया गया। साथ ही वर्तमान में आधुनिक जीवन शैली में स्वस्थ्य और ऊर्जा से भरपूर बने रहने हेतु आइसेक्ट रमन ग्रीन दारा निर्मित मिलेट प्रोडक्ट्स (श्री अन्न) भी रखे गए, जिनकी खूब तारीफ हुई।

5 राज्यों में विधानसभा चुनाव के बाद हो सीट बंटवारा

हैदराबाद (एजेंसी)। इंडिया गठबंधन के सहयोगियों के साथ सीट शेयरिंग पर चर्चा इस साल होने वाले पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के बाद की जाए। हैदराबाद में 16-17 सितंबर को हुई कांग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग में कांग्रेस के कुछ नेताओं ने पार्टी हाईकमान से इसकी मांग की है।

मीडिया सूत्रों के हवाले से बताया कि यह मांग करने वाले ज्यादातर नेता उन राज्यों से हैं, जहां कांग्रेस का सीधा मुकाबला इंडिया गठबंधन की दूसरी पार्टियों से है। इन नेताओं को भरोसा है कि पार्टी 5 राज्यों के विधानसभा

चुनावों में अच्छा परफॉर्म करेगी, जिससे वे सीट शेयरिंग के दौरान मजबूत स्थिति में रहेंगे। राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिजोरम में इस साल के आखिरी में चुनाव होने हैं। हालांकि चुनाव आयोग ने अब तक तारीखों की घोषणा नहीं की है, लेकिन संभावना है कि अगले महीने के पहले हफ्ते में इसका ऐलान हो जाए।

मांकन समेत कई नेताओं ने आप का विरोध किया- पूर्व केंद्रीय मंत्री अजय मांकन, प्रवक्ता अलका लांबा और प्रताप सिंह बाजवा समेत दिल्ली और पंजाब के कुछ नेताओं ने आम आदमी पार्टी के व्यवहार पर नाराजगी जाहिर की। उन्होंने कहा कि आप नेता पार्टी पर हमले कर रहे हैं और पार्टी नेताओं को नुकसान पहुंचा रहे हैं। अजय मांकन ने कहा कि आम आदमी पार्टी उन राज्यों में चुनाव लड़ने की घोषणा कर रही है, जहां कांग्रेस सरकार बनाने की स्थिति में है।

कश्मीर में अब तक की सबसे लंबी मुठभेड़

- 6 दिन से एनकाउंटर जारी, 6 आतंकी मार गिराए, 2 की तलाश जारी; 5 जवान शहीद

श्रीनगर (एजेंसी)। कश्मीर के अनंतनाग में सोमवार 18 सितंबर को छठे दिन एनकाउंटर जारी था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, यह इस इलाके में चलने वाली अब तक की सबसे लंबी मुठभेड़ है। पिछले 6 दिनों में सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच तीन जगहों पर मुठभेड़ हुई। इसमें कर्नल, मेजर और डीएसपी समेत 5 जवान शहीद हो चुके हैं, जबकि सेना ने अनंतनाग में 1, बारामूला में 3 और राजौरी में दो कुल 6 आतंकियों को मार गिराया है। सेना को अभी भी गडूल कोकेरनाग के जंगलों में दो और आतंकियों के छिपे होने की आशंका है। सबसे एडवांस्ड ड्रोन हेरॉन मार्क-2 से उनके ठिकानों की तलाश की जा रही है।

शिवसेना विधायकों की अयोग्यता पर फैसला टालना गलत

सुप्रीम कोर्ट का महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष को निर्देश- समय सीमा तय करें

मुंबई (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को शिवसेना शिंदे गुट के 16 विधायकों की अयोग्यता पर सुनवाई की। कोर्ट ने विधानसभा अध्यक्ष से कहा कि आप इस मामले पर फैसला लंबे समय तक टाल नहीं सकते। आपको इसकी समय सीमा तय करनी होगी। इसके बाद मामले की सुनवाई दो हफ्ते के लिए स्थगित कर दी गई। उधर, कोर्ट ने शिवसेना के नाम और सिंबल से जुड़े मामले की सुनवाई 3 हफ्ते के लिए स्थगित कर दी है। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच ने दोनों मामले पर सुनवाई की। सुप्रीम कोर्ट ने कहा विधानसभा अध्यक्ष संविधान की दसवीं अनुसूची के तहत कार्यवाही को अनिश्चित काल तक विलंबित नहीं कर सकते।

छोटे बच्चों से प्राइवेट पार्ट्स के बारे में पूछना वामपंथी विचारधारा, बो रहे विनाश के बीज: मोहन भागवत

पुणे (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत ने वामपंथी विचारधारा पर तीखा हमला किया है। उन्होंने कहा कि वामपंथी नेता मार्क्सवाद के नाम पर दुनिया को बर्बाद कर रहे हैं। आरएसएस प्रमुख ने कहा कि वामपंथी विचारधारा और राजनीति से हुए विनाश से दुनिया को बचाने की जिम्मेदारी भारत पर है। प्रमुख मोहन भागवत ने यह पता लगाने की शैक्षणिक कवायद को वामपंथी परिवेश का हमला बताया कि क्या केजी (किंडरगार्टन) के छात्र अपने निजी अंगों के बारे में जानते हैं। भागवत ने रविवार को पुणे में 'जगला पोखरणारी दवी वाल्वी' नामक एक मराठी पुस्तक के विमोचन के अवसर पर यह टिप्पणी की। अभिजीत जोग की लिखित और दिलीपराज प्रकाशन की इस पुस्तक में वामपंथी विचारधारा और राजनीति पर विस्तार से चर्चा की गई है। भागवत ने कहा, मार्क्सवाद के नाम पर वामपंथी पश्चिम में विनाश के बीज बो रहे हैं।

गुजरात के केजी स्कूल का किया जिक्र- आरएसएस प्रमुख ने कहा, मैं गुजरात में एक विद्यालय में गया था, जहां एक विद्वान ने मुझे एक किंडरगार्टन (केजी) स्कूल का निर्देश दिखाया।

समाज को पहुंचा रहे नुकसान

मोहन भागवत ने कहा, वे गलत आदर्शों और सिद्धांतों को आगे बढ़ा रहे हैं, जो समाज को नुकसान पहुंचा रहे हैं। मानव स्वभाव और व्यवहार तेजी से बर्बरता की ओर बढ़ रहे हैं। न केवल समाज, बल्कि परिवार भी संकट का सामना कर रहे हैं। भागवत ने कहा कि समाज के सदस्यों के रूप में, हम सभी को इस संकट के प्रति जागृत और सतर्क रहने की आवश्यकता है।

भारत ही नहीं, दुनिया के विरोधी

आरएसएस प्रमुख ने कहा कि वामपंथी हमारी संस्कृति की सभी पवित्र चीजों पर ऐसे हमले किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा अमेरिका में (डोनाल्ड ट्रंप के बाद) नई सरकार बनने के बाद पहला आदेश स्कूल से संबंधित था, जिसमें शिक्षकों से कहा गया था कि वे विद्यार्थियों से उनके लिंग के बारे में बात न करें।

मूसलाधार बरसात के चलते दिल्ली-मुंबई रेलवे के मुख्य मार्ग पर खाचरोद-नागदा के मध्य बहने वाली चंबल नदी ने खतरे के निशान से ऊपर बहते हुए अपना रौद्र रूप दिखाया और सड़क मार्ग पर बने पुल से टकराते हुए बहती रही। नदी में स्थित चामुंडा माता का मंदिर पूरा डूब गया, सिर्फ शिखर की पताका लहराती नजर आ रही थी। पानी के थपेड़ों ने रेलवे की पुलिया के एक हिस्से की मिट्टी काट दी, जिसकी रेलवे लगातार चौकसी कर रहा है। क्षेत्र में अभी तक 50.15 इंच (1265 मिमी) वर्षा रिकॉर्ड की गई।

– चित्र एवं विवरण – ऋतुराज बुड़ावनवाला

खराब हालत देपालपुर की, 65 इंच बारिश से पानी ही पानी

पानी उतरा तो बर्बादी का नजारा सामने आया, 45 इंच बारिश हुई

इंदौर। शहर में कहर बरपाने के बाद रविवार को हल्की बारिश हुई। लेकिन, सोमवार से बारिश थम गई। पिछले 24 घंटे में इंदौर में सिर्फ 8 मिमी बारिश हुई। अब तक इंदौर में 45 इंच से ज्यादा बारिश हो चुकी। यह बारिश के सामान्य कोटे से 8 इंच ज्यादा है।

मौसम विभाग के मुताबिक बंगाल की खाड़ी से उठा सिस्टम इंदौर-उज्जैन संभाग में कमजोर पड़ गया। रविवार को यह लो प्रेशर के रूप में एक्टिव रहा, पर सोमवार को मौसम साफ़ है और धूप भी निकली। लेकिन, सोमवार को संभाग में कहीं-कहीं तेज बारिश का अनुमान भी लगाया गया। बारिश रुक गई, पर पानी उतरने के बाद की मुसीबत सामने आई। चंबल नदी में आई बाढ़ से देपालपुर क्षेत्र की करीब 200 बीघा की सोयाबीन फसल बर्बाद हो गई। देपालपुर के उत्तरासी गांव के हालात भी खराब है। यहां चंबल नदी की बाढ़ के कारण आसपास के गांवों में लगी सोयाबीन की फसलें खराब हो गई। किसानों का कहना है खेतों में जल भराव होने से अब फसलों को नया जीवन मिलना मुश्किल है। ग्रामीण क्षेत्रों में नदी, नालों और तालाब उफान पर हैं और यहां का पानी मुसीबत बना हुआ है। जिले में सबसे ज्यादा बारिश देपालपुर क्षेत्र में हुई। इस मौसम में देपालपुर में अभी तक 68 इंच से ज्यादा बारिश हुई। इस दौरान जहां 50 से ज्यादा गांवों की सोयाबीन की फसलों को नुकसान हुआ है वहीं यहां शाहपुरा गांव ऐसा है जहां सबसे ज्यादा अभी भी पानी भरा है।

शहर की निचली बस्तियों की हालत ज्यादा खराब है। घरों के सामने कीचड़ ही कीचड़ दिखाई दे रहा है। रविवार का दिन लोगों ने बिखरा सामान व्यवस्थित करने में लगाया। कई घरों में अंदर तक पानी घुसने से गृहस्थी बर्बाद हो गई। कबूतरखाना, नॉर्थतोड़ा, कुशवाह नगर, महेश नगर व चंदन नगर की बस्तियों के जिन परिवारों को शिफ्ट किया था, वे रविवार सुबह घर तो लौटे, पर हालात रहने लायक नहीं है। शाम को सब वापस धर्मशालाओं लौट आए। शहर के कुछ इलाकों में अभी भी पानी भरा है। सियागंज, चंदन नगर से लेकर नॉर्थ तोड़ा सहित कई कॉलोनियों में कमर तक पानी जमा है। इससे व्यापार पर असर हुआ। क्योंकि लोग दुकान ही नहीं खोल सके। शनिवार को भी इसी वजह से दुकानें बंद थीं। रविवार को भी यही स्थिति रही।

एमटीएच अस्पताल का तलघर तालाब बन चुका है। करंट न फैले, इसलिए चारों लिफ्ट बंद करना पड़ी। गर्भवती व डॉक्टरों को सीढ़ियों या रैंप का इस्तेमाल करना पड़ेगा। पानी निकालने के लिए नगर निगम से मशीन बुलवाई गई। अस्पताल प्रशासन के मुताबिक पानी निकालने में 4 दिन और लगेंगे।

मुंबई-दिल्ली एक्सप्रेस-वे का मध्यप्रदेश का हिस्सा 20 सितंबर से शुरू होगा

पहले दिन से टोल-टैक्स वसूली होगी, निर्धारित गति 120 किमी तय

इंदौर। बहुप्रतीक्षित मुंबई-दिल्ली एक्सप्रेस-वे पर वाहनों की आवा-जाही 20 सितंबर से शुरू हो रही है। इसका सबसे ख़ास पक्ष यह है कि 8 लेन वाले इस एक्सप्रेस-वे पर पहले दिन से ही वाहनों से टोल-टैक्स लगने लगेगा। प्रदेश के तीन जिलों रतलाम, मंदसौर और झाबुआ जिले से गुजरने वाले एक्सप्रेस-वे पर टोल-टैक्स वसूलने की पूरी तैयारी कर ली गई।

नेशनल हाईवे अथॉरिटी आफ इंडिया के इस 1380 किमी लंबे एक्सप्रेस-वे का 244.5 किलोमीटर में से 90 किमी रतलाम जिले में,51 किमी झाबुआ जिले में और सबसे ज्यादा 102 किमी हिस्सा मंदसौर में आता है। एक्सप्रेस-वे के मध्यप्रदेश वाले हिस्से का लोकार्पण पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करने वाले थे। लेकिन, अब इसे बिना किसी तामझाम के शुरू किया जा रहा है।

इस एक्सप्रेस-वे पर टोल की दर लागत पर आधारित होगी। जिस खंड में पुल-पुलिया व इंटरचेंज ज्यादा होंगे वहां पर टोल-टैक्स ज्यादा लगेगा। राजस्थान के दौसा वाले हिस्से के मान से कार व हल्के वाहनों के लिए टोल की दर 2.20 रुपए से 2.25 रुपए प्रति किलोमीटर तक हो सकती है। लेकिन, बड़े यात्री वाहनों और ट्रकों के लिए यह दर 7 से 7.35 रुपए तक हो सकती है। अभी टोल-टैक्स की दरों की जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई, पर जल्द ही यह घोषित कर दी जाएगी।

मुंबई-दिल्ली के केंद्र में रतलाम– मुंबई से दिल्ली तक के 1380 किमी के सफर में 12 से 13 घंटे लगेंगे। जबकि, अभी करीब 22 घंटे लगते हैं। गौर करने खास बात यह है कि रतलाम इस एक्सप्रेस-वे का केंद्र है और मुंबई और दिल्ली के लिए समान रूप से 6 से 7 घंटे का समय लगेगा। रतलाम के केंद्र में होने से इसका सबसे ज्यादा फ़ायदा भी रतलाम को होगा। रतलाम से धामनोद के समीप होकर व जावरा के भूतेड़ा के समीप इंटरचेंज होने से दो स्थानों से वाहनों की एक्सप्रेस-वे पर आवाजाही हो सकेगी। इससे बांसवाड़ा, उज्जैन, आगर, इंदौर से आने वाले वाहन भी रतलाम या जावरा होकर ही निकलेंगे। रतलाम में बनने वाले मेगा इंडस्ट्रियल पार्क को भी एक्सप्रेस-वे से जोड़ा जाएगा। इससे यहां व्यापारिक व आर्थिक गतिविधियां बढ़ेंगी।

स्पीड नियंत्रण के लिए सीसीटीवी – इस एक्सप्रेस-वे पर वाहनों की निर्धारित गति 120 किमी की होगी। दो और तीन पहिया वाहनों को इस रास्ते पर आने की सख्त मनाही होगी। प्रवेश नहीं दिया जाएगा। 120 किमी प्रति से ज्यादा की स्पीड पर इस एक्सप्रेस-वे पर चालान कटेगा। स्पीड पर नियंत्रण के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। एक्सप्रेस-वे के प्रोजेक्ट मैनेजर मुताबिक, एक्सप्रेस वे पर वाहनों की आवाजाही 20 सितंबर से शुरू होगी। इस पर निर्धारित दरों से ही टोल वसूली होगी। हर सेक्शन में इसकी दर भी अलग-अलग है।

मध्यप्रदेश में कहां-कहां से गुजरेगा – दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे से उज्जैन, देवास, इंदौर को भी जोड़ा जाएगा। रतलाम केंद्र की सीमा के पास बने रेस्ट पाइंट पर ट्रामा सेंटर, होटल, रेस्टोरेंट, फूड कोर्ट तैयार हो चुके हैं। खास बात है कि यहां एक? हेलिपैड भी बनाया गया है। दुर्घटना की इमरजेंसी होने पर मरीजों को एयर लिफ्ट किया जा सकेगा। झाबुआ में तलावड़ा से महूड़ी का माल से यह एक्सप्रेस-वे रतलाम पहुंचेगा। फिर रावटी, सैलाना, पिपलौदा, व जावरा के कुम्हारी से गुजरकर लसूड़िया से मंदसौर जिले में पहुंचेगा। रतलाम जिले के 87 गांव दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर आएंगे। इस एक्सप्रेस-वे पर गरोठ में शामगढ़ रोड और भानपुरा में नीमथुर से प्रवेश कर सकेंगे। मंदसौर जिले में एक एंट्री सीतामऊ से भी मिलेगी. गरोठ और जावरा में लॉजिस्टिक हब बनाया जाएगा। मुंबई-दिल्ली एक्सप्रेस-वे जयपुर, किशनगढ़, अजमेर, कोटा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, भोपाल, उज्जैन, इंदौर, अहमदाबाद, वडोदरा और सूरत जैसे व्यापारिक केंद्र के बीच कनेक्टिविटी बढ़ेगी।

पश्चिमी मध्य प्रदेश में अभी भी खतरा बरकरार, नदियों में बाढ़ के हालात

इंदौर। पश्चिमी मध्य प्रदेश में बारिश का सिलसिला अभी थमा नहीं है। कई जिलों में अच्छी बारिश हो रही है। लेकिन, रविवार को तेज बारिश का सिलसिला थम गया। लेकिन, अधिकांश जिलों में बाढ़ की स्थिति बरकरार है। नर्मदा नदी और उसकी सहायक नदियां उफान पर है। सभी बांधों के गेट से छोड़े जा रहे पानी के कारण कई गांव डूब प्रभावित हो गए। नर्मदा, कालीसिंध, चंबल, शिप्रा जैसी नदियों में तेज पानी के कारण धार, खरगोन, खंडवा, बड़वानी, उज्जैन, अलीराजपुर और झाबुआ जिलों में जलभराव की स्थिति निर्मित हो गई। रविवार दोपहर तक प्रदेश में इतना पानी गिर गया कि यह सामान्य बारिश से सिर्फ एक प्रतिशत कम है। अनुमान है कि सोमवार को यह कमी पूरी हो जाएगी।

इंदौर शहर के निचले इलाकों में भी कई बस्तियों में पानी भर गया। स्कूलों के पहुँच मार्ग भी डूबे हुए हैं, इस कारण प्रशासन ने सोमवार को भी इंदौर के स्कूलों में अवकाश घोषित किया। इंदौर जिले का वर्षा का कोटा 36-37 इंच है, जो अभी 44 इंच तक पहुंच गया है। झाबुआ में एक तालाब के फूटने से इसमें आठ लोग बह गए। उज्जैन जिले के बड़नगर में बाढ़ में फंसी गर्भवती महिला को हेलीकॉप्टर से निकाला गया। धार जिले के मनावर का एकलबारा गांव नर्मदा में पानी बढ़ने से डूब में आ गया। रतलाम मंडल के पंच पिपलिया और अमरगढ़ के बीच रेलवे ट्रैक की मिट्टी बहाने के कारण दिल्ली-मुंबई अपलाइन ट्रैक प्रभावित हुआ। मंदसौर की शिवना नदी इतनी चढ़ी कि भगवान पशुपतिनाथ का जलाभिषेक कर आई। यहां नदी का पानी मंदिर के गर्भगृह तक पहुंच गया।

रतलाम, अलीराजपुर, झाबुआ और मंदसौर जिलों में अति बारिश होने की आशंका है। इससे आकस्मिक बाढ़ की स्थिति भी बनने की चेतावनी जारी की गई। फ़िलहाल इन जिलों में रेड अलर्ट जारी किया गया है। बड़वानी और धार जिलों में कहीं-कहीं अति भारी बारिश हो सकती है। खरगोन, इंदौर, उज्जैन, नीमच जिलों में कहीं-कहीं भारी बारिश और वज्रपात की घटना हो सकती है। इसके अलावा हरदा, बुरहानपुर, देवास, खंडवा, अगर, भिंड, मुरैना, श्योपुर कला, सिंगरौली, सीधी, रीवा, सतना, अनूपपुर और शहडोल जिला में कहीं कहीं गरज चमक और वज्रपात हो सकता है।

अभी भी रेड अलर्ट में – रविवार की स्थिति में पिछले 24 घंटे के दौरान धार में सर्वाधिक 301.3 मिलीमीटर, रतलाम में 242, खंडवा में 162, इंदौर में 144, खरगोन में 110 मिलीमीटर बारिश होने से स्थिति बिगड़ गई। वहीं रविवार दिन भर में स्थिति में सुधार आया। सुबह 8:30 से शाम के 5:30 बजे तक रतलाम में 21, धार में 16, उज्जैन 8, इंदौर 6.6, गुना में 5, शिवपुरी 1, पचमढ़ी 0.2 भोपाल 0.2 मिलीमीटर बारिश दर्ज हुई। इसके अलावा भोपाल शहर और नौगांव में भी पानी गिरा।

बारिश के बाद भी यहां अवर्षा – अभी भी प्रदेश के कुछ जिले ऐसे हैं जो अभी भी रेड जोन में हैं। भोपाल, अशोकनगर, गुना, सतना, रीवा, सीधी, दमोह और सिंगरौली जिले रोड जोन में शामिल हैं। यहां 20 प्रतिशत से 37 प्रतिशत तक कम बारिश होने से चिंता बनी हुई है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि अब प्रदेश में मानसूनी बारिश की सक्रिता कम हो सकती है। सोमवार से मानसूनी ट्रक लाइन गुजरात की तरफ बढ़ जाएगी।

द्वारकापुरी में कारों के कांच फोड़े

इंदौर। शहर के पश्चिमी इलाके के द्वारकापुरी में बदमाशों ने रविवार रात फिर सड़क पर खड़ी कारों के कांच फोड़े। सुबह जब लोग जागे तो उन्होंने कारों के कांच टूटे देखे। द्वारकापुरी पुलिस को सोमवार सुबह सूचना मिली कि सूर्यदेव नगर में बदमाशों ने तोड़फोड़ की घटना की है। सूचना के बाद डायल 100 मौके पर पहुंची। यहां टूल इंजीनियर शांताराम इंगले की कार के कांच फोड़कर बदमाश भाग गए। नजदीक ही खड़ी एक अन्य कार पर भी बदमाशों ने पत्थर मारे। वहीं दूसरी गली में भी कुछवाहनों में बदमाशों ने घर के बाहर खड़े वाहनों में तोड़फोड़ की है। जहां घटना हुई वहां से कुछ ही दूरी पर दिग्विजय नगर और अहीरखेड़ी मल्टी है। जहां पांच दिन पहले गांजे के विवाद में बदमाशों ने हवाई फायर हुए थे। लोगों ने बताया कि रात में उन्हें आवाज नहीं आई। सुबह जब मार्निंग वॉक के लिए लोग उठे तो उन्होंने कारों के शीशे फूटे देखे। पुलिस अज्ञात बदमाशों की तलाश में है।

रतलाम मंडल के गोधरा खंड में ट्रैक सस्पेंड, कई ट्रेनें प्रभावित

इंदौर। लगातार भारी बारिश के कारण रतलाम मंडल के रतलाम गोधरा खंड में अमरगढ़-पंच पिपलिया स्टेशनों के मध्य किलोमीटर 597/25-35 पर ट्रैक पैरामीटर में लगातार बदलाव के कारण अप ट्रैक को सस्पेंड किया गया है जिसके कारण कई ट्रेनें प्रभावित हुई है। रेस्टोरेशन कार्य प्रगति पर है-

(1) 16 सितम्बर, 2023 को बरौनी से चलने वाली गाड़ी संख्या 19038 बरौनी-बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस वाया रतलाम-चित्तौड़गढ़-अजमेर-पालनपुर-अहमदाबाद-वडोदरा (सुधार पूर्व में 17 सितंबर था)

(2) 17 सितंबर को मिरज से चली गाड़ी संख्या 12493 मिरज-निजामुद्दीन एक्सप्रेस वाया कल्याण-भुसावल-इटारसी-भोपाल-बीना-वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी-ग्वालियर-आगरा कैंट-मथुरा जंक्शन।

(3) 17 सितंबर को भोपाल से चलने वाली गाड़ी संख्या 19340 भोपाल दाहोद एक्सप्रेस नागदा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा नागदा से दाहोद के मध्य निरस्त रहेगी।

(4) 16 सितंबर को बीकानेर से चली गाड़ी संख्या 04711 अहमदाबाद स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा अहमदाबाद से बांद्रा टर्मिनस के मध्य निरस्त रहेगी।

(5) 16 सितंबर को इंदौर से चली गाड़ी संख्या 19310 इंदौर-गांधीनगर शांति एक्सप्रेस अहमदाबाद पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा 17 सितम्बर को 19309 गांधीनगर-इंदौर एक्सप्रेस, अहमदाबाद स्टेशन से पूर्वा अनुसार परिवर्तित मार्ग से चलेगी।

(6) 17 सितंबर को उदयपुर सिटी से चली गाड़ी संख्या 22902 उदयपुर सिटी-बांद्रा टर्मिनस वाया उदयपुर सिटी-हिम्मतनगर-असारवा-अहमदाबाद-वडोदरा चलेगी।

(7) 17 सितंबर को बांद्रा टर्मिनस से चलने वाली गाड़ी संख्या 04712 बांद्रा-टर्मिनस बीकानेर स्पेशल एक्सप्रेस निरस्त रहेगी।

संपादकीय

एशिया कप : भारत की 'लंका विजय'

एशिया कप जीतना भारतीय क्रिकेट टीम के लिए नई बात नहीं है, लेकिन इस बार श्रीलंका के प्रेमदासा स्टेडियम में रोहित शर्मा के रणबांकुरों ने जिस लाजवाब तरीके से श्रीलंका को हराकर विजय प्राप्त की, वह अगले साल विश्वकप क्रिकेट में भारत की जीत को संभावनाओं को और ताकत देने वाली है। भारतीय क्रिकेट टीम ने एशिया कप आठवीं बार जीता है। वैसे भी एशिया में भारत के अलावा श्रीलंका और पाकिस्तान ही ऐसी दो टीमें हैं, जो विश्वस्तरीय टीमें समझी जाती हैं। भारत का श्रीलंका में ही श्रीलंका को दयनीय तरीके से हराना विश्व क्रिकेट के इतिहास में यादगार बन गया है। क्योंकि ऐसा खेल कभी कभार ही देखने को मिलता है। यकीनन इस विजय के मुख्य शिल्पकार भारत के तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज रहे, जिन्होंने कुल 6 विकेट लिए। साथ ही एक ही ओवर में चार विकेट लेने का रिकॉर्ड भी बनाया। एक ऑटो चालक के होनहार बेटे मोहम्मद सिराज के रूप में भारत को एक विश्वस्तरीय तेज गेंदबाज मिला है, जो विकेट की प्रकृति को समझकर गेंदबाजी को कहर बरपा सकता है। सिराज इस एशिया कप की भारत के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है। उनसे देश को बहुत अपेक्षाएं हैं। मोहम्मद सिराज ने केवल अपनी कमाल गेंदबाजी से भारत को जिताया बल्कि प्लेयर ऑफ मैच के रूप में मिली 5 हजार डॉलर की इनामी राशि को श्रीलंका के ग्राउंड कार्यकर्ताओं को समर्पित कर अनुकरणीय उदाहरण भी पेश किया। इसमें शक नहीं कि ग्राउंड मैन्स ने बारिश के दौरान पिच को ठीक से नहीं बचाया होता तो शायद सिराज वैसा चमत्कार नहीं दिखा पाते, जो उन्होंने कर दिखाया। श्रीलंकाई क्रिकेट टीम नए और युवा चेहरों से भरी है। फिर भी उन्होंने जिस तरह सेमीफाइनल पाकिस्तान को हराया था, उसे देखकर लग रहा था कि वो फाइनल में भारत को कड़ी टक्कर देंगे। इसका दूसरा कारण यह भी था कि कोलम्बो को प्रेमदासा स्टेडियम का पिच उनके लिए जाना पहचाना था और घरेलू दर्शकों को भरपूर समर्थन उन्हें मिलने वाला था। श्रीलंका की टीम ने जीत के अति आत्मविश्वास में टॉस जीतकर पहले बैटिंग ले ली और यही सब गड़बड़ हो गया। मैच शुरू होते ही दूसरे ओवर में भारतीय गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने श्रीलंकाई बल्लेबाजों को पेवेलियन भेजने का जो सिलसिला शुरू किया, उसे सिराज ने पंख दे दिए। यह साफ दिख रहा था कि श्रीलंकाई बल्लेबाज भारतीय गेंदबाजों की लाइन और लैंथ के आगे असहाय हैं। पूरी टीम मात्र 15 ओवरों में 50 रन पर आउट हो गई। इसी के साथ मैच का नतीजा भी तय हो गया। श्रीलंकाई टीम में अनुभव की कमी साफ दिखी। जबकि दूसरी पारी में भारत ने ओपनिंग बल्लेबाज के रूप में शुभमन गिल के साथ मिडिल ऑर्डर बल्लेबाज ईशान किशन को उतारा और दोनों ने महज 6 ओवरों में चौके मारकर और तेजी से रन बनाकर ट्रॉफी अपने नाम कर ली। अपनी टीम को ताश के पत्तों की तरह ढहता देख श्रीलंकाई दर्शक हैरान और हताश थे। उन्हें अपनी टीम से ऐसे प्रदर्शन की कतई उम्मीद नहीं थी। बहरहाल अगले विश्वकप क्रिकेट के लिए भारत के पास एक बेहतरीन टीम तैयार हो गई है। जाने माने पाक गेंदबाज शोएब अख्तर ने कहा भी कि भारत ने एक बेहतरीन टीम के साथ बॉक्स टिक कर दिए हैं। रोहित शर्मा की बेहतरीन फैसले लिए हैं। मुझे लगता है कि भारत की टीम वर्ल्ड कप के लिए खतरनाक हो गई है। इस बार मोटे तौर पर सभी खिलाड़ियों का प्रदर्शन अच्छा रहा है। अगर यही फार्म जारी रहा तो भारत में होने वाले अगला विश्वकप फिर भारत आ सकेगा। इसमें दो राय नहीं।

भारत जैसे देश में बहुभाषा के विरोध के खतरे

नजरिया

प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी

लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में प्रोफेसर हैं।

भाषा का संबंध इतिहास, संस्कृति और परंपराओं से है। भारतीय भाषाओं में अंतर-संवाद की परंपरा बहुत पुरानी है और ऐसा सैकड़ों वर्षों से होता आ रहा है। यह उस दौर में भी हो रहा था, जब वर्तमान समय में प्रचलित भाषाएं अपने बेहद मूल रूप में थीं। श्रीमद्भगवतगीता में समाहित श्रीकृष्ण का संदेश दुनिया के कोने-कोने में केवल अनेक भाषाओं में हुए उसके अनुवाद की बदौलत ही पहुंचा। उन दिनों अंतर-संवाद की भाषा संस्कृत थी, तो अब यह जिम्मेदारी हिंदी की है। जब हमारे पास एक भाषा होती है, तब हमें अंदाजा नहीं होता, कि उसकी ताकत क्या होती है। लेकिन जब भाषा लुप्त हो जाती है और सदियों के बाद किसी के हाथ वो चीजें चढ़ जाती हैं, तो सबकी चिंता होती है कि आखिर इसमें है क्या? ये लिपि कौन सी है, भाषा कौन सी है, सामग्री क्या है, विषय क्या है? आज कहीं पत्थरों पर कुछ लिखा हुआ मिलता है, तो सालों तक पुरातत्व विभाग उस खोज में लगा रहता है कि लिखा क्या गया है?

आज भारतीय भाषाओं के बीच संवाद को व्यापक रूप से प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है। भारतीय भाषाओं में बीच संवाद सैंकड़ों वर्षों से जारी है और इनका विकास भी साथ-साथ ही हुआ है। मसलन बांग्ला और मैथिली में इतनी समानता है कि उनमें अंतर करना मुश्किल है, इसी तरह अवधी और ब्रज भाषा तथा हिंदी और उर्दू में भी ऐसा ही है। हिंदी और उर्दू दैनिकों की भाषा पर हुए एक शोध में देखा गया कि उनमें केवल 23 प्रतिशत शब्द ही अलग थे। हिंदी पत्रकारिता के विकास में मराठी, बांग्ला और दक्षिण भारतीय भाषाओं के योगदान की अनदेखी नहीं की जा सकती। आज पूरे भारत में भारतीय भाषाओं के बढ़ते प्रभाव को देखा जा सकता है। भाषाई पत्रकारिता को हम भारत की आत्मा कह सकते हैं। आज लोग अपनी भाषा के समाचार पत्रों की ओर तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। इसलिए भाषाई समाचार पत्रों की प्रसार संख्या तेजी से बढ़ रही है। अलग-अलग बोलियों में अखबार प्रकाशित हो रहे हैं। क्षेत्रीय भाषाओं में रेडियो और टेलीविजन अपने कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं। इतना ही नहीं, जिस स्मार्टफोन के द्वारा हम सोशल मीडिया के संपर्क में रहते हैं, वहां भी भारतीय भाषाओं का विशेष ख्याल रखा जाता है।

आज से कुछ समय पहले तक गांवों की खबरों के लिए चार चार दिन तक इंतजार करना पड़ता था, जबकि आज व्हाट्सएप और ईमेल के द्वारा आसानी से खबरें प्राप्त हो रही हैं। जिलों, कस्बों और मोहल्लों से आज अखबार प्रकाशित हो रहे हैं। ईमेल से अखबारों के पृष्ठ भेजना आसान हो गया है। पहले अंग्रेजी भाषा के अखबारों पर निर्भरता ज्यादा होती थी, जिसके भारतीय पाठक मात्र 15 प्रतिशत हैं। अब जब अलग-अलग बोलियों और भाषाओं में अखबार प्रकाशित हो रहे हैं, तो सूचना सशक्तिकरण बढ़ रहा है। अब विभिन्न दूतावासों के मीडिया प्रकोष्ठ और विदेशी एजेंसियां भी खबरों के लिए क्षेत्रीय एवं भाषाई मीडिया का लाभ ले रहे हैं। दूसरी तरफ हर अखबार अपने ईपेपर के जरिए दूरदराज के पाठकों तक पहुंच रहा है। हम सब जानते हैं कि इंटरनेट की कोई सीमा नहीं है, ऐसे में क्षेत्रीय अखबार विदेशी धरती पर भी उसी दिन पढ़े जा रहे हैं, जिस दिन वे प्रकाशित होते हैं।

आप वर्ष 2040 की कल्पना कीजिए। तब तक हमारा भारत विश्व की एक बड़ी आर्थिक महाशक्ति बन चुका होगा। गरीबी, कुपोषण, पिछड़ापन काफी हद तक मिट चुके होंगे। देश के लगभग 60 प्रतिशत भाग का शहरीकरण हो चुका होगा। सारा देश डिजिटल जीवन पद्धति को अपना चुका होगा। अब आप सोचिए कि उस भारत के अधिकतर नागरिक अपने जीवन के सारे प्रमुख काम किस भाषा में कर रहे होंगे? पूरे देश में शिक्षा, प्रशासन, व्यापार, शोध, पत्रकारिता जैसे हर बड़े क्षेत्र में किस भाषा का उपयोग हो रहा होगा? वह देश भारत होगा या सिर्फ़ इंडिया? उस इंडिया में संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल हमारी 22 बड़ी और 1600 से अधिक छोटी भाषाओं-बोलियों की स्थिति क्या होगी? वर्तमान में जिस तरह अंग्रेजी का चलन तेजी से बढ़ रहा है, क्या उसके बीच हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं को स्थान मिलेगा।

यूनेस्को के पूर्व महानिदेशक कोचिरो मत्सूरा ने कहा था कि, 'एक भाषा की मृत्यु उसे बोलने वाले समुदाय की विरासत, परंपराओं और अभिव्यक्तियों

का नष्ट हो जाना है।' संसार में लगभग 6000 भाषाओं के होने का अनुमान है। भाषा शास्त्रियों की भविष्यवाणी है कि 21वीं सदी के अंत तक इनमें केवल 200 भाषाएं जीवित बचेंगी। इनमें भारत की सैकड़ों भाषाएं होंगी। यूनेस्को के अनुसार भारत की आदिवासी भाषाओं में से 196 भाषाएं अभी भी गंभीर संकटग्रस्त भाषाएं हैं। संकटग्रस्त भाषाओं की इस वैश्विक सूची में भारत सबसे ऊपर है। यूनेस्को का भाषा एटलस 6000 में से 2500 भाषाओं को संकटग्रस्त बताता है। भारत की अनुमानित 1957 में कम से कम 1416 लिपिहीन मातृभाषाएं हैं। ये सब इस वक्त संकट में हैं।

यूनेस्को के कहने पर विश्व के श्रेष्ठ भाषाविदों ने किसी भी भाषा की जीवंतता और संकटग्रस्तता नापने के लिए 9 कसौटियां निर्धारित की हैं। इनमें पहली कसौटी है, एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी के बीच उस भाषा का अंतरण। दूसरी कसौटियों में प्रमुख हैं ज्ञान विज्ञान के आधुनिक क्षेत्रों में उस भाषा में काम हो रहा है या नहीं। वह भाषा नई तकनीक और आधुनिक माध्यमों को कितना अपना रही है? उस भाषा के विविध रूपों का दस्तावेजीकरण कितना और किस स्तर का है? उस समाज की महत्वपूर्ण संस्थाओं की उस भाषा के बारे में नीतियां और रुख़ कैसे हैं? इसमें अंतिम लेकिन सबसे महत्वपूर्ण कसौटी हैज्उस भाषा समुदाय का अपनी भाषा के प्रति रुख़ क्या है, भाव क्या है? इनमें से किसी भी कसौटी पर किसी भी भारतीय भाषा को तोल लीजिए, तुरंत समझ में आ जाएगा कि भविष्य के संकेत संकट की और इशारा करते हैं या विकास की और। भारतीय चरित्र, इजराइली चरित्र जैसा नहीं है, जिसने 2000 साल से मृत पड़ी हिब्रू को आज वैज्ञानिक शोध, नवाचार और आधुनिक ज्ञान निर्माण की श्रेष्ठतम वैश्विक भाषाओं में एक बना दिया है। जिसके बल पर 40 लाख की जनसंख्या वाला इजरायल एक दर्जन से ज्यादा विज्ञान के नोबेल पुरस्कार जीत चुका है। सारे इस्लामी देशों की शत्रुता के बावजूद अपनी पूरी अस्मिता, धमक और शक्ति के साथ अजेय बना विश्व पटल पर विराजमान है।

भाषा मनुष्य की श्रेष्ठतम संपदा है। सारी मानवीय सभ्यताएं भाषा के माध्यम से ही विकसित हुई हैं। याद रखिए...आदिम समाज तो हो सकते हैं, लेकिन आदिम भाषाएं नहीं हो सकतीं। शहीद भगत सिंह ने 15 वर्ष की उम्र में ये लिखा था कि, 'पंजाब में पंजाबी भाषा के बिना आगे नहीं बढ़ा जा सकता।' गांधी जी ने 1938 में ही स्पष्ट कहा था कि, 'क्षेत्रीय भाषाओं को उन का आधिकारिक स्थान देते हुए शिक्षा का माध्यम हर अवस्था में तुरंत बदला जाना चाहिए।' महात्मा गांधी का ये भी मानना था कि अंग्रेज़ी भाषा के मोह से निजात पाना स्वाधीनता के सब से ज़रूरी उद्देश्यों में से एक है। भाषाओं का राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में योगदान होता है। शब्दों को हमने ब्रह्म माना है। महात्मा गांधी ने अंग्रेजी में 'हरिजन' प्रकाशित किया, लेकिन उसे जन-जन तक पहुंचाने के लिए उन्होंने उसे गुजराती और हिंदी में भी स्थापित किया। भारतीय भाषाओं के बीच अंतर-संवाद को हमें अगर समझना है तो गुजराती में 70 पुस्तकों की रचना करने वाले फादर वॉलेस और गुजरात में कई विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की स्थापना करने वाले सयाजीराव गायकवाड़ के बारे में पढ़ना चाहिए। उत्तर-दक्षिण भारत की भाषाओं में व्यापक अंतर होने के बावजूद उनमें अंतर-संवाद और अनुवाद होता आया है।

भारत एक छोटे यूरोप की तरह है। यहां विविध भाषाएं हैं और भाषा ही मेल-मिलाप कराती हैं। भाषाई विविधता और बहुभाषी समाज आज की आवश्यकता है और समस्त भाषाओं के लोगों ने ही विश्व में अपनी उपलब्धियों के पदचिन्ह छोड़े हैं। आज हम एक बहुभाषी दुनिया में रहते हैं। दुनियाभर में लोग बेहतर अवसरों की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान में प्रवास करते हैं। जहां उनकी भाषाएं और संस्कृति, नए क्षेत्र की भाषा और संस्कृति से एकदम अलग होती है। इसलिए उन्हें एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है, जो दोनों संस्कृतियों को आपस में एकीकृत कर सके, जिसके लिए उन प्रवासियों को निश्चित तौर पर एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है। पश्चिम बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र जैसे राज्यों में भी एक शिक्षित व्यक्ति को कम से कम तीन भाषा का ज्ञान होता है। यहां के लोगों को अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का ज्ञान होता है। इसके साथ ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संपर्क साधने के लिए अंग्रेजी भाषा को भी ये लोग सीख लेते हैं।

भारत का प्रत्येक व्यक्ति मूलतः बहुभाषी है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हमारा किसी एक भाषा के सहारे काम चल ही नहीं सकता। हमें अपनी बात बाकी लोगों तक पहुंचाने के लिए और उनके साथ संवाद करने के लिए एक भाषा से दूसरे भाषा के बीच आवाजाही करनी ही पड़ती है। जैसे हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं का मिश्रित रूप है 'हिंदुस्तानी जुबान'। हिंदुस्तानी जुबान में होने वाले संवाद की मिठास और संप्रेषण की सहजता देखने लायक है। भारत सदैव वसुधैव कुटुम्बकम की बात करता आया है और सभी भाषाओं को साथ लेकर चलने के पीछे भी यही भावना है। जहां भाषा खत्म होती है, वहां संस्कृति भी उसके साथ दम तोड़ देती है। हमें सभी भाषाओं को महत्व देना चाहिए, उन्हें समझना चाहिए और उनके संपर्क का माध्यम हिंदी है, इसे स्वीकार करना चाहिए। याद रखिए, भाषा के माध्यम से हम केवल दुनिया से ही नहीं, बल्कि स्वयं से भी संवाद करते हैं।

हिन्दू महिलाओं पर पाबंदियों के लिए मुस्लिम हमलावर जिम्मेदार हैं?

मुद्दा

राम पुनियानी

लेखक आईआईटी मुंबई में शिक्षक रहे हैं। अंग्रेजी से रूपांतरण अमरीश हरदेनिया।

आरएसएस का जन्म स्वाधीनता आन्दोलन से उपजे जातिगत और लैंगिक समानता की स्थापना के अभियान की खिलाफत में हुआ था. उस समय भारत एक राष्ट्र के रूप में उभर रहा था और इस प्रक्रिया से सामंती पदक्रम कमज़ोर हो रहा था और जाति, वर्ग और लिंग से ऊपर उठ कर सभी को समान अधिकार देने की बात हो रही थी. इसी की प्रतिक्रिया में मुस्लिम और हिन्दू राष्ट्रवादी उभरे, जो धर्म के नाम पर सामाजिक ऊंचनीच को बचाए रखना चाहते थे.

हिन्दू राष्ट्रवादी आरएसएस ने भारत के स्वर्णिम अतीत की काल्पनिक कथा गढ़ी. वह उस काल को गौरवशाली बताता है जब सामाजिक व्यवस्था मनुस्मृति के कानूनों से संचालित थी. उसका दावा है कि हिन्दू मूल्य महान हैं. वे सभी जातियों को बराबरी का दर्जा देते हैं और महिलाओं को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं. मुस्लिम आक्रान्ताओं और लुटेरों के देश पर हमलों से उन गौरवशाली मूल्यों का पतन हुआ. हिन्दू समुदाय में महिलाओं को उच्च दर्जा हासिल था परन्तु मुस्लिम हमलावरों की हरकतों के चलते, महिलाओं पर कई तरह के प्रतिबन्ध लगाना हिन्दुओं की मजबूरी बन गई और इसी कारण सती प्रथा का जन्म हुआ. हिन्दू महिलाओं पर बंदिशों के पीछे के कारण को समझाने के लिए हिन्दू राष्ट्रवादियों ने यह मिथक गढ़ा.

यही दावा हाल में आरएसएस सह कार्यवाह (महासचिव) कृष्ण गोपाल ने नारी शक्ति संगम के तत्वाधान में महिला सशक्तिकरण विषय पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही. भारत में महिलाएं कैसे सशक्त से निशक्त हुईं, इसे समझाते हुए उन्होंने कहा, '12वीं सदी के पहले तक महिलाएं काफी हद तक आजाद थीं परन्तु मध्यकाल (मध्यकालीन भारत) में हालात बदल गए. वह बहुत कठिन समय था...पूरा देश गुलामी से जूझ रहा था...महिलाएं खतरे में थीं. लाखों महिलाओं को अगवा कर दूसरे देशों में बेच दिया गया. (अहमद शाह) अब्दाली, (मुहम्मद) गौरी और (महमूद) गजनी यहाँ से महिलाओं को ले गए और उन्हें बेच दिया...वह हमारे देश के अपमान का दौर था. तो हमारी महिलाओं की रक्षा के लिए हमारे समाज ने उन पर कई तरह की रोकें लगा दीं.'

शत्रु राजा के राज्य में लूटपाट करना और पराजितों को गुलाम बनाना केवल मुस्लिम आक्रान्ताओं तक सीमित नहीं था. हिन्दू और अन्य राजाओं ने भी विजित इलाकों को लूटा, महिलाओं को अगवा किया और पुरुषों को गुलाम बनाया. चोल राजा, श्रीलंका से बड़ी संख्या में लोगों को गुलाम बनाकर लाये थे. छत्रपति शिवाजी महाराज की सेना, कल्याण राज्य को जीतने के बाद वहां से धन-दौलत के अलावा, वहां के मुस्लिम शासक की बहू को भी अपने साथ ले गयी थी. जिन पाबंदियों की बात कृष्ण गोपाल कर रहे हैं, वे दक्षिण एशिया में मुस्लिम राजाओं के कदम रखने के पहले से हिन्दू महिलाओं पर लागू थीं. सती प्रथा, जिसके अंतर्गत हिन्दू विधवाओं को उनके पति की चिता पर जिंदा जला दिया जाता था, भी पहले से भारत में विद्यमान थी.

प्राचीन भारत में भी महिलाएं संपत्ति और शिक्षा के अधिकारों से वंचित थीं. प्राचीन ग्रंथों में सती प्रथा का वर्णन है. महाभारत के अनुसार, पाण्डु की पत्नी माद्री सती हुई थीं. इसी तरह, भगवान कृष्ण के पिता वासुदेव की चारों पत्नियाँ भी अपने पति की चिता पर सती हो गई थीं. सच तो यह है कि पितृसत्तामकता और अपने वंश की श्रेष्ठता का अभिमान, महिलाओं के दमन और सती प्रथा की जड़ में थे. रोमिला थापर के अनुसार, 'पितृसत्तामक समाज में महिलाओं की पराधीनता', 'कुल के सम्मान की रक्षा' और 'महिलाओं की यौनिकता पर नियंत्रण' सती प्रथा के उदय के पीछे के प्रमुख कारक थे.

विद्या देहेजिया के अनुसार, सती प्रथा क्षत्रिय कुलीन वर्ग में जन्मीं और अधिकांश मामलों में हिन्दुओं के योद्धा वर्ग तक सीमित रही.

उत्तर-गुप्त काल में, व्यापार-व्यवसाय में गिरावट, महिलाओं के स्थिति में गिरावट का कारण बनी. उनके शिक्षा प्राप्त करने पर रोक लगा दी गयी, बाल विवाह होने लगे और विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया. इसी के कारण सती जैसी भयावह प्रथा को बढ़ावा मिला. अपनी पुस्तक 'वीमेनः हर हिस्ट्री' में चंद्रबाबू और थिल्गावती ने इस स्थिति का सारगर्भित वर्णन किया है- 'लड़कियों को बहुत कम या न के बराबर स्वतंत्रता हासिल थी. लड़कियों की शादी बहुत छोटी आयु में कर दी जाती थी....उन्हें शिक्षा तक पहुँच नहीं थी...और सती प्रथा के पालन को श्रद्धास्पद माना जाता था.'

अब आरएसएस इस स्थिति से कैसे निपटे? आरएसएस केवल पुरुषों का संगठन है. इसने राष्ट्र सेविका समिति नामक एक संगठन बनाया ज़रूर है परन्तु वह आरएसएस के अधीन है. इस संगठन के नाम से यह जाहिर है कि वह इस मुद्दे पर हिन्दू राष्ट्रवादी सोच को प्रतिबिंबित करता है. इस संगठन के नाम से 'स्वयं' शब्द गायब है.

राष्ट्र सेविका समिति अपनी महिला अनुयायियों को क्या सिखा रही है यह संघ परिवार की कई महिला नेत्रियों के कथनों से जाहिर है. समिति का नेतृत्व, महिलाओं को पराधीन रखने के पक्ष में है. भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विजयाराजे सिंधिया ने रूपकुंवर सती काण्ड के बाद, सती प्रथा के समर्थन में संसद के समक्ष प्रदर्शन का नेतृत्व किया था. उस समय संसद, सती प्रथा पर रोक लगाने के लिए नया कानून बनाने पर विचार कर रही थी. विजयाराजे के अनुसार, सती एक गौरवशाली परंपरा है और हिन्दू महिलाओं को सती होने का अधिकार है. समिति की एक अन्य शीर्ष नेता, मृदुला सिन्हा जो बाद में गोवा की राज्यपाल बनीं ने सेवी पत्रिका को अप्रैल 1994 में दिए गए एक साक्षात्कार में हिन्दू महिलाओं को यह सलाह दी थी कि वे पति के हाथों पिटाई को स्वीकार करें. उन्होंने दहेज़ प्रथा का बचाव किया और महिलाओं का आव्हान किया कि जब तक बहुत ज़रूरी न हो, वे घर से बाहर जाकर काम न करें.

आरएसएस के पूर्व प्रचारक प्रमोद मुत्तालिक की राम सेने ने मंगलौर में पब से लौट रही लड़कियों की पिटाई लगाई थी. वैलेंटाइन्स डे पर युवा युगलों पर हमले, संघ परिवार के सदस्य बजरंग दल की गतिविधियों का हिस्सा रहा है. सन् 2020 में 10 नवम्बर को, गोवा पुलिस ने एक विधि महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापक शिल्पा सिंह के खिलाफ इसलिए एफआईआर दर्ज की थी क्योंकि उन्होंने विवाहित हिन्दू स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाले मंगलसूत्र की तुलना, पालतू कुत्ते के पट्टे से की थी. संघ की विद्यार्थी शाखा एबीवीपी ने महाविद्यालय प्रशासन से शिल्पा सिंह की शिकायत भी की थी.

भाजपा सरकार ने गीता प्रेस, गोरखपुर को 2023 के गाँधी शांति पुरस्कार से नवाज़ा है. यह प्रकाशक उन्हीं मूल्यों का पैरोकार है जिन्हें संघ परिवार बढ़ावा देना चाहता है. अपनी पुस्तकों के ज़रिये यह संस्थान जाति और लैंगिक मसलों पर मनुमृति के मूल्यों को पुर्नस्थापित करना चाहता है. इस प्रकाशक की कई पुस्तकें, हिन्दू महिलाओं को पुरुषों के अधीन रहने की सलाह देती हैं. इनमें से कुछ हैं हनुमान प्रसाद पोद्दार की 'नारी शिक्षा', स्वामी रामसुखदास की 'गृहस्थ में कैसे रहें? और जय दयाल गोयनका की 'स्त्रियों के लिए कर्तव्य शिक्षा' और 'नारी धर्म'.

इसके अलावा, संघ परिवार ने काल्पनिक 'लव जिहाद' के नाम पर हिन्दू महिलाओं को नियंत्रित करने और मुसलमानों को निशाना बनाने का अभियान चलाया हुआ है. इन संस्थाओं के प्रतिनिधि, घर-घर जाकर हिन्दू परिवारों के यह सन्देश दे रहे हैं कि वे अपनी लड़कियों और बहनों पर 'नज़र रखें'. चाहे वह 1920 हो या 2009, हिन्दू दक्षिणपंथियों के अभियान का आधार पितृसत्तामक मूल्य होते हैं. इनमें भोली-भाली हिन्दू महिलाओं को मुस्लिम पुरुषों के हाथों शिकार होते दिखाया जाता है. इसमें इस बात को नज़रअंदाज़ किया जाता है कि हिन्दू महिलाओं को प्रेम करने और अपनी पसंद से विवाह करने का अधिकार है.

आरएसएस का नेतृत्व, समाज के पितृसत्तामक मूल्यों को बढ़ावा देना चाहता है और भारत के हिन्दू समाज के बुराईयों का दोष बाहरी कारकों पर डालते हैं. वे भारत के सामाजिक ढांचे और हिन्दू धर्मग्रंथों के मूल्यों की कमियों को नज़रअंदाज़ कर रहे हैं.

चौपटलाल जी का दुःख

खुखरी बुआ और दोनाली के कारण चौपटलाल जी गिरने लगें थें। सड़क पर नहीं खुद की नजरों में। आज दस - दस रूपये की चीजें तालों में बँद की जाने लगीं थीं। चौपटलाल जी का दिल कतई ये गँवारा नहीं करता था, कि वो इतना नीचे गिरें। इस गिरने के क्रम में वो अपने आप से आँखें नहीं मिला पा रहें थें। अपने पूरे जीवण काल में उन्होनें इतनी ओछी हरकतें नहीं देखीं थीं। जितना कि वो अब देख रहे थें। खाने - पीने की छोटी- छोटी चीजों के चलते उनके यहाँ रार होने लगा था। इन मेहरियों के चलते ही। साबुन -सोड़ा, अच्छे फल - फ्रूट, काजू -

कटाक्ष

महेश केशरी

मेवे, अच्छे कपड़े, बर्तन सब पर मेहरियाँ अपना - अपना अधिकार जमाने लगीं थीं। हाँलाकि चौपटलाल जी के यहाँ पैसों की कोई कमी नहीं थी। भरी - पूरी लक्ष्मी जी और साक्षात् कुबेर उनके घर में बिराजते थें। लेकिन, मेहरियों ने पूरा घर खराब कर दिया था। चौपटलाल, जी के घर में अब अशाँति रहने लगी थी। चौपटलाल जी इसी अशाँति से परेशान थे। घर की मेहरियों ने चौपटलाल जी का जीना हराम कर दिया था। सुबह - शाम, बात - बात पर किचकिच होने लगी थी। चौपटलाल जी की दिली ख्वाहिश थी कि इन मेहरियों को कहीं अज्ञात वास मिलना चाहिए था। हमेशा की लिये। पाँड़वों की तरह। या भगवान् श्रीराम की तरह इनका वनवास केवल चौदह वर्षों के लिये नहीं होना चाहिए था। बल्कि आजीवण होना चाहिये था। या आलिफ लैला के बोतल में बँद जिन्न की तरह इन सारी खुखरियों और दोनालियों को बोतल में बँद करके किसी अज्ञात टापू पर फेंक देना चाहिए था। प्रायः हर घर में आपको खुखरी सरीखी बुढ़िया मिल जायेंगी। जिनको प्रायः दूसरे के फटे में टाँग डालने की आदत होती है। और वो दूसरों की चिंता में ही दुबली होती जातीं हैं। खुखरी और दोनाली सरीखे लोग दूसरों के सुख से दुखी रहने वाले लोगों में से होते हैं। इन दोनालियों को बात -बात में झगड़ा चाहिए होता है। अशाँति दूत अगर इन खुखरियों और दोनालियों को कहा जाये। तो इनके तारीफ में कसीदे पढ़ना ही माना जायेगा।

ये दिलों पर ताले किसने लगाये। कभी कभी मैं ऐसा सोचता हूँ। तो चौपटलाल जी की कहानी सुनकर दिल भर आता है। मैंने चौपटलाल जी से पूछ लिया। अच्छा चौपटलाल जी तालों का इतिहास कितना पुराना है, बताईये। तो तालों की बाबत चौपटलाल जी का जो दर्द था। वो छलक आया। तालों की जब - जब बात होती है द्य चौपटलाल जी जार - जार रोते हैं। चौपटलाल जी का सबसे बड़ा दुःख ये ताला ही था। जो उनके और उनके भाई संकटलाल के दिलों पर लग गया था। पहले दिल पर ताले लगे। फिर, घर पर भी ताले लगने लगे। हर चीज चुराई और छुपाई जाने लगी थी।

चौपटलाल जी की एक आदत थी; कि जब वे घर में होते तो उनका ध्यान दहेज में मिले रेफ्रिजरेटर पर चला जाता। रेफ्रिजरेटर में भला ताले की क्या जरूरत है? हमेशा उनके मन ये प्रश्न कौंधता रहता।

रेफ्रिजरेटर में एक ताला था। लेकिन रेफ्रिजरेटर में भला ताला क्यों होता है। ये चौपटलाल जी समझ नहीं पाते थें।

आरंभिक दिनों में उनको इसके उपयोगी होने पर ही शक था। लेकिन इन तालों का इस्तेमाल इसलिए भी होना है। उनको ये बहुत बाद में पता चला।

जो ताला चौपटलाल जी की शादी के इन बारह वर्षों में कभी बँद नहीं होता था। वो अब बँद -बँद सा रहने लगा। शोधकर्ता बतातें हैं कि चौपटलाल के समय से ही शायद ताले का आविष्कार हुआ था।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वह पी.के.शर्मा तो कोई और ही होगा

व्यंग्य

डॉ. आलोक सक्सेना

लेखक व्यंग्यकार हैं।

बिना थके राजा विक्रमादित्य ने शव को फिर पेड़ पर से नीचे उतारा और अपने कंधे पर रखकर चुपचाप श्मशान की तरफ चल दिए। राजा विक्रमादित्य को पता था कि रास्ते में बेताल उन्हें एक कहानी सुनाएगा ताकि मेरा मौन टूट जाए और वह फिर शव सहित पेड़ पर वापस जाकर लटक सके। उन्हें यह भी पता था कि कहानी सुनाने के बाद बेताल उनसे एक प्रश्न पूछेगा और यदि मैंने उसका तर्क संगत सही-सही उत्तर नहीं दिया तो वह मेरा सिर टुकड़े-टुकड़े कर देगा। अभी वह सोच ही रहे थे कि बेताल उन्हें इस प्रकार कहानी सुनाने लगाः

'हे विक्रम! एक सरकारी कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के दौरान जब हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर्मचारी का नाम जोरदार शब्दों में पुकारा गया,- 'पी.के.शर्मा'। तो पहले तो कोई भी अपनी सीट से नहीं उठा। फिर जब स्वयं प्रतियोगिता अधिकारी नवरंग प्रसाद जी ने श्रीमान प्रदुत्यर्ष कुमार शर्मा जी की तरफ हाथ से इशारा करते हुए कहा, 'भाई, आपका ही नाम तो पुकारा जा रहा है।' इस बात पर उन्होंने थोड़ा विरोध करते हुए कहा, 'महोदय, मेरा नाम तो प्रदुत्यर्ष कुमार शर्मा है, पी.के.शर्मा तो कोई और ही होगा।'

उनकी बात पर प्रतियोगिता अधिकारी नवरंग प्रसाद जी बोले, 'भाई, आप तो हिंदी के विद्वान हैं तभी तो हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रेमचंद को मात दे दी। मैं ठहरा अज्ञानी। मैंने तो एम.ए. हिंदी तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण किया है। वो तो इस कार्यालय में महानिदेशक महोदय को एम.ए. हिंदी विषय में उत्तीर्ण और कोई व्यक्ति न मिला तो मुझ जैसे समन्वयन अधिकारी को ही दे दिया सितंबर माह में प्रतियोगिताएं आयोजित करवाने का काम। इस समय हमारे कार्यालय में न हिंदी विभाग है और न कोई हिंदी अधिकारी। खैर छोड़िए यह सब बातें आइए, शर्माजी मंच पर आइए। फिलहाल अभी तो अपना पी.के.शर्मा लिखा हुआ प्रशस्ति पत्र और नकद पुरस्कार की धनराशि स्वीकार कर लीजिए। कल मेरे कक्ष में आ जाइएगा मैं आपको एक बिना नाम लिखा हुआ प्रशस्ति पत्र दे दूंगा आप खुद अपने हाथों से ही अपना पूरा नाम उस पर लिख लीजिएगा। हमारे पास तो देवनागरी लिपि में आपका सही-सही पूरा नाम लिख पाने वाले न तो लिपिक हैं, न सहायक और मैं खुद भी नहीं। यहां तो बस किसी तरह से हिंदी प्रतियोगिताओं को करवाने हेतु नैमित्तिक डाटा एंट्री ऑपरेटर से काम चलाया जा रहा है।'

'हे विक्रम! मैंने एक सरकारी महानिदेशालय के हिंदी विभाग में पहुंचकर अपना संपर्क वहां के हिंदी अधिकारी से किया तो मुझे पता चला कि उस महानिदेशालय में पिछले तीन दशकों से राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने तथा सरकारी कामकाज में उसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए प्रति वर्ष सितंबर माह में तमाम सारी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। नगद पुरस्कार भी बांटे जाते हैं लेकिन इस महानिदेशालय का एक भी उच्चाधिकारी न तो इन प्रतियोगिताओं में ही भाग लेना पसंद करता है और न ही वर्षभर के दौरान अपनी विभागीय फाइलों पर हिंदी में अपना टिप्पण और आलेखन करता है। खासकर अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारी और कर्मचारी तो आगे आते ही नहीं। सभी अभियंता हैं इसलिए उनके दिलोदिमाग पर तो अंग्रेजी का भूत ही सवार रहता है। हिंदी भाषा में कामकाज करने में उन्हें अंदर से बहुत दिक्कत महसूस होती है। विक्रम, अब मुझे तुम ही बताओ कि तुम्हारे अपने देश में हिंदी भाषा की दुर्दशा को बचाने और समृद्धि के लिए इन उच्चाधिकारियों और कर्मचारियों का क्या किया जाए, प्रतिवर्ष हिंदी पखवाड़े के नाम पर पांच-छह एक सी प्रतियोगिताओं का होना और पुरस्कार के नाम पर अच्छा-खासा धन लाभ वितरण मजाक नहीं तो और क्या है, यहां तक देखा गया है कि इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभागी तक प्रतिवर्ष एक से ही होते हैं। वह भी गिने चुने। और तो और मूल स्वरचित कविता पाठ में तालियों के स्थान पर 'वाह-वाह' करते हुए ग़ज़ल पाठ को प्रथम पुरस्कार दे दिया जाता है। निर्णायक तक हिंदी भाषा प्रति प्रतियोगी कवि सम्मलेन और मुशायरे के अंतर तक को नहीं जानते-समझते। यानी प्रत्येक प्रतियोगिता में केवल खानापूर्ति और मजाक।'

इस बार राजा विक्रमादित्य पूरी दृढ़ता से बोले, 'प्रत्येक वर्ष सभी सरकारी कार्यालयों, महानिदेशालयों, बैंक व सार्वजनिक उपक्रमों में चौदह सितंबर को हिंदी दिवस, पखवाड़ा और माह मनाकर केवल प्रोत्साहन पुरस्कार बांट-बांट कर राजभाषा हिंदी की उन्नति व कामकाज में लाने वाली बात बनने वाली नहीं है। इस प्रकार हिंदी की समृद्धि नहीं हो सकती। तीस साल हो गए राजभाषा प्रयोग हेतु पुरस्कार बांटते-बांटते। अतः अब हिंदी भाषा की उन्नति के लिए पुरस्कार बहुत बट लिए, अब तो कानून बनना चाहिए। सरकारी कार्यालयों में अब कानून के दम पर ही अब राजभाषा हिंदी को सभी विभागों में लागू किया जा सकता है। यहां अब हिंदी नहीं तो दंड होगा- नवीन कानून बनाना होगा।'

'अब तक प्रोत्साहन पुरस्कार बहुत बट लिए। अब हिंदी नहीं तो दंड होना चाहिए। जो भी सरकारी अधिकारी या कर्मचारी हिंदी भाषा में काम न करे तो उसकी वार्षिक वेतन वृद्धि, पदोन्निति एवं यहां तक कि उसे प्रत्येक छह माह पर मिलने वाले महंगाई भत्ते की किस्त आदि पर रोक रूपी दंड निर्धारित किया जाना चाहिए। मुझे विश्वास है कि इस प्रकार की कार्रवाई से हिंदी भाषा के प्रयोग हेतु लकड़ी के दम पर बंदर नाचे वाली कहावत चरितार्थ होती हुई स्वयं नजर आएगी परिणामस्वरूप राजभाषा हिंदी भाषा की व्यावहारिक एवं प्रायोगिक बढ़ोत्तरी होगी तथा उसका चौमुखी विकास अवश्य होगा।'

राजा विक्रमादित्य के इस प्रकार अपना मौन भंग करते ही बेताल शव सहित उनके कंधे से उड़ा और जाकर फिर उसी पेड़ पर उल्टा लटक गया।

गणेश चतुर्थी पर विशेष

सामाजिक क्रान्ति का पर्व है गणेशोत्सव

रमेश सर्राफ धमोरा

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार है। इनके लेख देश के कई समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं।)

गणेश चतुर्थी मनाने के दौरान लोग भगवान गणेश की पूजा करते है। गणेश हिन्दू धर्म में सबसे ज्यादा पूजे जाने वाले देवता है। यह उत्सव खासतौर से महाराष्ट्र में मनाया जाता है। हालाँकि अब ये भारत के लगभग सभी राज्यों में मनाया जाने लगा है। गणेश चतुर्थी पर लोग पूरी भक्ति और श्रद्धा से ज्ञान और समृद्धि के भगवान की पूजा करते है। भगवान गणेश को बुद्धि का देवता माना जाता है। हिंदू धर्म में किसी भी नए काम को प्रारंभ करने से पहले भगवान गणेश की पूजा की जाती है। माना जाता है कि भगवान गणेश की पूजा करने के बाद प्रारंभ होने वाला कार्य हर हाल में पूरा होगा। भगवान शिव व माता पार्वती के पुत्र गणेश को विघ्नहर्ता भी कहा जाता है।

गणेश शब्द का अर्थ होता है जो समस्त जीव के ईश अर्थात् स्वामी हो। गणेश जी को विनायक भी कहते हैं। विनायक शब्द का अर्थ है विशिष्ट नायक। वैदिक मत में सभी कार्य के आरम्भ जिस देवता का पूजन से होता है वही विनायक है। गणेश चतुर्थी के पर्व का आध्यात्मिक एवं धार्मिक महत्त्व है। मान्यता है कि भगवान गणेश विघ्नो के नाश करने और मंगलमय वातावरण बनाने वाले हैं। गणेश चतुर्थी का त्योहार महाराष्ट्र, गोवा, तेलंगाना, केरल और तमिलनाडु सहित पूरे भारत में काफी जोश के साथ मनाया जाता है। किन्तु महाराष्ट्र में विशेष रूप से गणेशोत्सव को 10 दिनों तक बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। इस त्योहार को गणेशोत्सव या विनायक चतुर्थी भी कहा जाता है।

पुराणों के अनुसार इसी दिन भगवान गणेश का जन्म हुआ था। गणेश चतुर्थी पर भगवान गणेशजी की पूजा की जाती है। कई प्रमुख जगहों पर भगवान गणेश की बड़ी-बड़ी प्रतिमायें स्थापित की जाती हैं। इन प्रतिमाओं का नो दिन तक पूजन किया जाता है। बड़ी संख्या में लोग गणेश प्रतिमाओं का दर्शन करने पहुंचते है। नो दिन बाद गणेश प्रतिमाओं को समुद्र, नदी, तालाब में विसर्जित किया जाता है। गणेश चतुर्थी का त्योहार आने से दो-तीन महीने पहले ही कारीगर भगवान गणेश की मिट्टी की मूर्तियां बनाना शुरू कर देते हैं। गणेशोत्सव के दौरान बाजारों में भगवान गणेश की अलग-अलग मुद्रा में बेहद ही सुंदर मूर्तियां मिल जाती है। गणेश चतुर्थी वाले दिन लोग इन मूर्तियों को अपने घर लाते हैं। कई जगहों पर 10 दिनों तक पंडाल सजे हुए दिखाई देते हैं जहां गणेश जी की मूर्ति स्थापित होती हैं। प्रत्येक पंडाल में एक पुजारी होता है जो इस दौरान चार विधियों के साथ पूजा करते हैं। सबसे पहले मूर्ति स्थापना करने से पहले प्राणप्रतिष्ठा की जाती है। उन्हें कई तरह की मिठाईयां प्रसाद में चढ़ाई जाती हैं। गणेश जी को मोदक काफी पंसद थे। जिन्हें चावल के आटे, गुड़ और नारियल से बनाया जाता है। इस पूजा में गणपति को लड्डूओं का भोग लगाया जाता है।

इस त्योहार के साथ कई कहानियां भी जुड़ी हुई हैं जिनमें से उनके माता-पिता माता पार्वती और भगवान शिव के साथ जुड़ी कहानी सबसे ज्यादा प्रचलित है। शिवपुराण में रुद्रसंहिता के चतुर्थ खण्ड में वर्णन है कि माता पार्वती ने स्नान करने से पूर्व अपने मैल से एक बालक को उत्पन्न करके उसे अपना द्वारपाल बना दिया था। भगवान शिव ने जब भवन में प्रवेश करना चाहा तब बालक ने उन्हें रोक दिया। इस पर भगवान शंकर ने क्रोधित होकर अपने त्रिशूल से उस बालक का सिर काट दिया। इससे पार्वती नाराज हो उठीं। भयभीत देवताओं ने देवर्षि नारद की सलाह पर जगदम्बा की स्तुति करके उन्हें शांत किया। भगवान शिवजी के निर्देश पर विष्णुजी उत्तर दिशा में सबसे पहले मिले जीव (हाथी) का सिर काटकर ले आए। मृत्युंजय रुद्र ने गज के उस मस्तक को बालक के धड़ पर रखकर उसे पुनर्जीवित कर दिया। माता पार्वती ने हर्षातिरेक से उस गजमुख बालक को अपने हृदय से लगा लिया। ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने उस बालक को सर्वाध्यक्ष घोषित करके अग्र पूज्य होने का वरदान दिया।

महान क्रांतिकारी बंकिम चंद्र चटर्जी ने 1882 मे वन्देमातरम नामक एक गीत लिखा था। जिस पर भी अंग्रेजों ने प्रतिबंध लगा कर गीत गाने वालों को जेल मे डालने का फरमान जारी कर दिया था। इन दोनों बातों से लोगो मे अंग्रेजो के प्रति बहुत नाराजगी व्याप्त हो गयी थी। लोगो मे अंग्रेजो के प्रति भय को खत्म करने और इस कानून का विरोध करने के लिए महान स्वतंत्रता सेनानी लोकमान्य तिलक ने गणपति उत्सव की स्थापना की और सबसे पहले पुणे के शनिवारवाड़ा मे गणपति उत्सव का आयोजन किया गया। देश की आजादी के आन्दोलन में गणेश उत्सव ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। 1894 मे अंग्रेजों ने भारत मे एक कानून बना दिया था जिसे धारा 144 कहते हैं जो आजादी के इतने वर्षों बाद आज भी लागू है। इस कानून मे किसी भी स्थान पर 5 से अधिक व्यक्ति इकट्ठे नहीं हो सकते थे। और ना ही समूह बनाकर कहीं प्रदर्शन कर सकते थे।

1894 से पहले लोग अपने अपने घरों में गणपति उत्सव मनाते थे। लेकिन 1894 के बाद इसे सामूहिक तौर पर मनाने लगे। पुणे के शनिवारवाड़ा के गणपति उत्सव में हजारों लोगों की भीड़ उमड़ी। लोकमान्य तिलक ने अंग्रेजों को चेतावनी दी कि हम गणपति उत्सव मनाएंगे अंग्रेज पुलिस उन्हे गिरफ्तार करके दिखाये। कानून के मुताबिक अंग्रेज पुलिस किसी राजनीतिक कार्यक्रम में एकत्रित भीड़ को ही गिरफ्तार कर सकती थी। लेकिन किसी धार्मिक समारोह मे उमड़ी भीड़ को नहीं।

20 अक्टूबर 1894 से 30 अक्टूबर 1894 तक पहली बार 10 दिनों तक पुणे के शनिवारवाड़ा मे गणपति उत्सव मनाया गया। लोक मान्य तिलक वहां भाषण के लिए हर दिन किसी बड़े नेता को आमंत्रित करते। 1895 मे पुणे के शनिवारवाड़ा में 11 गणपति स्थापित किए गए। उसके अगले साल 31 और अगले साल ये संख्या 100 को पार कर गई। फिर धीरे -धीरे महाराष्ट्र के अन्य बड़े शहरों अहमदनगर, मुंबई, नागपुर, थाणे तक गणपति उत्सव फैलता गया। गणपति उत्सव में हर वर्ष हजारों लोग एकत्रित होते और बड़े नेता उसको राष्ट्रीयता का रंग देने का कार्य करते थे। इस तरह लोगों का गणपति उत्सव के प्रति उत्साह बढ़ता गया और राष्ट्र के प्रति चेतना बढ़ती गई।

1904 में लोकमान्य तिलक ने लोगों से कहा कि गणपति उत्सव का मुख्य उद्देश्य स्वराज्य हासिल करना है। आजादी हासिल करना है और अंग्रेजों को भारत से भगाना है। आजादी के बिना गणेश उत्सव का कोई महत्व नहीं रहेगा। तब पहली बार लोगो ने लोकमान्य तिलक के इस उद्देश्य को बहुत गंभीरता से समझा। आजादी के आन्दोलन में लोकमान्य तिलक द्धारा गणेश उत्सव को लोकोत्सव बनाने के पीछे सामाजिक क्रान्ति का उद्देश्य था। लोकमान्य तिलक ने ब्राह्मणों और गैर ब्राह्मणों की दूरी समाप्त करने के लिए यह पर्व प्रारम्भ किया था जो आगे चलकर एकता की मिसाल बना।

लोकमान्य तिलक ने जिस उद्देश्य को लेकर गणेश उत्सव को प्रारम्भ करवाया था वो उद्देश्य आज कितने सार्थक हो रहे हैं। आज के समय में पूरे देश में पहले से कहीं अधिक धूमधाम के साथ गणेशोत्सव मनाये जाते हैं। मगर आज गणेशोत्सव में दिखावा अधिक नजर आता है। आपसी सद्भाव व भाईचारे का अभाव दिखता है। आज गणेश उत्सव के पण्डाल एक दूसरे के प्रतिस्पर्धात्मक हो चले हैं। गणेशोत्सव में प्रेरणाएं कोसों दूर होती जा रही हैं और इनको मनाने वालों में एकता नाम मात्र की रह गयी है। इस बार हमें एक बार फिर से संगठित होकर गणेशोत्सव को इतनी खुशी व धूमधाम से मनाना चाहिए जिससे समाज मे एकता व भाईचारा बढ़ सकें। सही मायने में तभी हमारी पूजा सार्थक हो सकेगी।

एक आखरी यात्रा है घर की ओर लौटना

दृष्टिकोण

राग तेलंग

लेखक स्तंभकार हैं।

जो रचता है वही जन्मने की पीड़ा से गुज़रता है,यह आत्यंतिक अनुभूति की बात है। उम्र के एक पड़ाव पर आकर एक दिन आपको एक जबर्दस्त धक्का लगता है। जैसे बिना चेतावनी संकेत के रोड पर आए अमानक ढंग से बने स्पीड ब्रेकर पर होता है। अचानक आपकी स्पाईन पर धक्का लगने से आपका दिमाग हिल जाता है ठीक वैसे ही। उम्र के उस पड़ाव पर लगा यह अनपेक्षित प्रहार एक नई शुरूआत का संकेत होता है। वापस न लौटने की तमाम आशंकाओं को लांघ कर यह होशमंदी का प्रारंभ,शुभारंभ होता है। और इस तरह एक दिन आप जाग जाते हैं। आपको अपनी कहानी समझ आ जाती है, अपने होने का सबब भी,अंधेरा छंट जाता है रोशनी के रेशे से,आप उसके वाई-फ़ाई नेटवर्क में दाखिला पा जाते हैं,एक पुरानी दुनिया बिदा हो जाती है।

अब एक लेखक,एक चित्रकार,एक संगीतकार जागता है,जो अंततः एक ऑर्केस्ट्रा के निर्देशक का रूप ले लेता है। यह धक्का सबके जीवन में आता है,आना है,बस फ़र्क इतना ही है उसे कितने बोध के साथ पकड़ा जाता है। यह शिफ्ट ऑफ कांशसनेस है या डार्क नाइट ऑफ सोल की उपमा भी इसे मिली हुई है। यहां से आपका सब कुछ एक सौ अस्सी डिग्री घूम जाता है। जीवन नाम की जो नेमत मिली हुई है उसकी यहां कड़ी परीक्षा होती है जिसे संकल्पवान ही पार कर सकते हैं,यह समुंदर के तूफान में लहरों को चीरते हुए असीम को पार करने के बराबर है। इसका गवाह सिर्फ आकाश होता है,सिर्फ! क्योंकि तब आप होश के पार होते हैं। यहां से एक नई शुरूआत होती है। यह सत्यानुभूति के बाद एक समझ की ओर लौटने की यात्रा है। जब आपकी आधी कहानी हो जाती है तब आप अपनी कहानी को अपने मुताबिक अंत की ओर यात्रा कराते हैं। यही अवेयरनेस है। अवेयरनेस को अवेयर होकर ही देखा-समझा जा सकता है। इस दौरान ही परमानंद है।

लौटती हुई यात्रा में सब कुछ स्लोमोशन होता हुआ साफ दिखता है, दृश्य, ध्वनियां,स्मृतियां सहित सब कुछ। आप जाग कर समझ पाते हैं कि अहं,लालच,काम, मोह,ईर्ष्या,मद,क्रोध आदि तो सब स्पीड ब्रेकर ही थे जो हमेशा से मानक रहे आते हैं बस एक अचानक आया स्पीड ब्रेकर ही इन गति अवरोधकों से परिचय करा गया ऐसा सोचकर अब आपको दीवानों की तरह हंसी आती है। आगे लौटती हुई यात्रा में आपको अपने अतीत यानी जाते हुए की यात्रा के बारे में सोचकर अपने-आप पर,अपनी नादानी पर भी तरस आता है। एक झटके में दिमाग के पट खुल जाते हैं और एकाएक आसपास का सारा नाटक समझ आ जाता है। रेलगाड़ी के इंजन का एक धक्का सारे डिब्बों के रिजल्टेन्ट धक्के के रूप में वापस इंजन को मिलता है और इंजन अपनी गति को पा जाता है। बिना इस जर्क के कुछ नहीं बदलता,शून्य में प्रवेश के लिए जहां असीम गतियां विचरा करती हैं शुरूआत के लिए बड़ा यानी ईश्वरीय धक्का चाहिए, ईश्वरीय इसलिए कहा कि डार्क नाइट ऑफ सोल नामक धक्के में ईश्वर ही संभालता है और अपनी गोद में लेकर आगे की यात्रा कराता है।

इस बिंदु पर आपके सारे बिलीफ,विश्वास,समझ,परसेप्शन सब पलट जाते हैं वन एट्टी डिग्री। यहां से ईश्वर जन्म लेता है नया और वास्तविक ईश्वर। अब आपको समझ आता है कि आप उसके बच्चे हैं। अब आगे आपकी संतुलित होने प्रक्रिया की शुरूआत होती है। आप अपने आप पर फोकस्ड हो जाते हैं। पहले आग भड़कती है फिर वही पानी अवस्थाएं होना शुरू होती है।

आप पाते हैं कि आपका विपरीत हमेशा आपके साथ रहता है। बाएं की तरह हमेशा दायां भी मगर उल्टी दिशा में। दोनों के बीच संतुलन बना रहे इसके वास्ते ही आप रोज़-बरोज़ घर से निकला करते हैं,चलते हैं,यात्राएं करते हैं। एक नाच की समस्त मुद्राएं इस संतुलन की नैसर्गिक ज़रूरत को परिलक्षित करती हैं। सारे द्वंद्व समाप्त होते ही आपके दिमाग के बाएं-दाएं में साम्यता,एकरूपता आ जाती है। पोलराइजेशन की क्रिया यहां ठहर जाती है,नियंत्रित हो जाती है।

संतुलन का यह गुण धारण करने के पूर्व आपको अनेकानेक भौतिक और वर्चुअल यात्राएं कराता है और अंततः एक दिन जब संतुलन सध जाता है तब गंगा आपके ऊपर हां! ठीक ऊपर आकर विराजमान हो जाती है और एक अजस्र स्रोत आपको धारण करता है,यहां पर आपके निर्देश पर ग्रेविटी काम करती है। ग्रेविटी के बाशिंदे अब आपकी बाट जोहते हैं कल तक बात कुछ और ही थी। ऋण और धन के बीच संतुलन ही सुचालकता का तैयार सर्किट है। फिर यह सुपर सुचालकता अपनी भाषा आप में उतारती है और आगे समझ बनती है कि ज़र्रे-ज़र्रे में एक ठंडी आग है जिसका नाम पानी है। यही पानी भाप बनकर ऊपर उठता है सब में से होकर और जो सबके पानी की उस एक भाषा से वाकिफ हो जाता है उसके ऊपर आकर पानीदार बादल टिक जाता है और गंगोत्री बनकर टिका रहता है उसके चाहते तक और फिर चेहरे पर धूप उतरती है। फिर सितारा अकेले रहना सीख जाता है, फिर दूरी ही सही मगर लोग सिर्फ उसी की चाह रखते हैं। वह सबके भीतर सदा उतराया करता है।

समग्र रूप में जैसे एक घना जंगल करता है कुछ-कुछ वैसा ही तारों भरा आकाश भी करता है। जो भाव-भाषा आकाश में तैरती है वही ज़मीन पर भी घटती है दूसरे रूप में। गंगोत्री की बात के संदर्भ में यह भी सोचें कि यदि पेड़ में जड़ से लेकर शीर्ष के पत्तों तक पानी की भाषा न तैरे तो बादलों का आह्वान हो भी कैसे! बारिश पेड़ों के बुलाने से होती है यह समझाने की बात नहीं समझने की है। हाइड्रोकार्बन आधारित इस जीव-जगत का सत्य वह पानी ही है जिसे यहां ठंडी आग निरूपित किया गया है। यही ठंडी आग हरेक के भीतर है,जिसमें जग गई वो जी गया,जीवन समझ आ गया। पता पड़ गया कि इस जीवन का एक उद्देश्य है,कैजुअली आने और आकर चले जाने में इसका हेतु नहीं। जब तक आप अपने को निर्मित और संचालित करने वाले को नहीं जान पाए तो फिर आपने महज कहानी ही पढ़ी,फ़कत पन्ने ही पलटे, लेखक और उसकी रचना प्रक्रिया को तो जाना ही नहीं। अगर आप स्वयं के क्रिएटर न हो सके तो आप शो रूम में रखे शो पीस से ज़्यादा कुछ न हो सके।

ईश्वर सतत आप पर निगाह रखे हुए रहता है,आप उससे कब जुड़ना चाहते हैं इसकी राह देखता रहता है। आप जिस दिन सामानों से घिरे, भरपूर व्यस्त बने रहने वाली इस निरर्थक जीवनशैली से तंग आ जाएंगे और खाली होने के क्षण के लिए तैयार मिलेंगे,कोई बात होगी,कोई एक आएगा एक धक्का देगा और एक नई शुरूआत होगी। एक सफ़र शुरू होगा। एक कहानी बनेगी खुद से अपने-आप तक पहुंचने की। हम जीते-जी अपने घर तक सही सलामत पहुंच जाएं यही तो सब चाहते हैं! घर की ओर लौटना एक ज़्यादा ज़रूरी और आख़िरी यात्रा है। ईश्वर आपकी यात्रा सफल करे।

निर्विघ्नम् कुरु मे देव

रमेश रंजन त्रिपाठी

गणेश जी का प्राकट्य कब हुआ? जब मनुष्य के हृदय में सबकुछ निर्विघ्न संपन्न हो जाने की कामना का उदय हुआ। कार्य की सफलता हेतु बुद्धिमानी, चतुराई, संसाधन, तत्परता, धैर्य और भाग्य के पक्षधर होने की आवश्यकता होती है। तमाम दुश्वारियों के बीच काम की बात सुनने, सूंघने, अविचल बने रहने, खाने तथा दिखाने के अलग-अलग दांतों की तरह गोपनीयता बनाए रखने की मानसिकता और आवश्यकतानुसार वक्रतुण्ड की भाँति टेढ़ेपन की महत्ता को गजानन के स्वरूप से बेहतर कौन अभिव्यक्त कर सकता है? लंबोदर में सारी सूचनाओं और दिमागी भोजन को पचा जाने की क्षमता, शूर्पवत कानों से सुनी-सुनाई बातों को फटक कर उपयोगी और व्यर्थ को अलग-अलग छाँटने की योग्यता विशिष्ट नेता यानी विनायक के अतिरिक्त किससे मिल सकती है?

किसी कार्य के सफलतापूर्वक पूरा होने की अभिलाषा ने इंसानों के मन के साथ बाहर भी आकार ग्रहण करना शुरू कर दिया। इसके लिए कल्याण अर्थात् शिव रूपी पिता तथा शक्ति यानी उमा रूपी माता के पुत्र गणेश को कुशल-क्षेम का उत्तरदायित्व सौंपने में किसी को हिचक क्यों होती? गणों के विशिष्ट अधिपति की अर्द्धांगिनी पूर्ण सफलता की पर्याय सिद्धि और ज्ञान पाने के लिए आवश्यक बुद्धि ही हो सकती हैं। ऐसे माता-पिता और उनके बेटे-बहू जहां विराजमान हों, वहाँ शुभ और लाभ बालक बनकर आंगन में खेलेंगे ही!

मनुष्य ने होश संभाला तो पाया कि विघ्न-बाधाएँ पहले से मुँह बाए खड़ी हैं। जब तकलीफें आदिकाल से मौजूद हैं तो उनके विनाशक भी तो अनादि हुए। विघ्नेश्वर इतने प्राचीन हैं कि उनके माता-पिता ने अपने विवाह के समय भी उनकी पूजा की थी। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रत्येक कार्य की शुरुआत गणनायक की पूजा से की जाती है, चाहे वह पावन अवसर कल्याणकारी शिव और शक्ति, शांति, वैभव, प्रसिद्धि की देवी उमा के दाम्पत्य सूत्र में बंधने का ही क्यों न हो। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'श्रीराम चरित मानस' में शिव-पार्वती विवाह के प्रसंग में गणेश पूजन का उल्लेख करते हुए कहा है कि सुननेवालों को आश्चर्य नहीं होना चाहिए क्योंकि देव अनादि होते हैं। तात्पर्य यह है कि पौराणिक आख्यानों में अलंकारिक भाषा का पर्याप्त उपयोग किया गया है। अनेक किंवदंतियाँ प्रचलित हो गईं। भारतीय समाज में कार्य की शुरुआत को श्रीगणेश करना कहा जाता है। बालक-बालिकाओं को शिक्षित करने की शुरुआत श्रीगणेश का ध्यान करने से होती है।

विघ्नों का हरण करने वाले गणेश जी के स्वरूप पर सम्मोहित जनमानस के बड़े वर्ग ने उन्हें सर्वशक्तिमान और सृष्टि के नियंता परमपिता के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। गणेश पुराण की रचना हुई। गजानन स्वयं अष्टविनायक के रूप में प्रकट हुए। उनके अवतारों का वर्णन मिलता है। हाथी का सिर, एकदंत, मूषक वाहन, महाभारत लेखन, प्रथम पूज्य जैसे कई प्रसंगों पर अनेक कथाएँ कही जाने लगीं। गणपति को परमेश्वर मानने वालों के गाणपत्य समुदाय को मान्यता मिली। वैष्णव, शैव, शाक्त और सौर संप्रदाय भी हैं जो विष्णु, शिव, शक्ति और सूर्य की उपासना करते हैं।

धीर, गंभीर, विशाल, शक्तिशाली हाथी को सनातन धर्म में प्रथम पूजनीय देवता के विग्रह रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। यद्यपि अनेक जीवों को हिंदू धर्म में पूज्य माना जाता है परंतु हाथी जैसी प्रतिष्ठा अन्य किसी को नहीं मिली। दसों दिशाओं को थामने की क्षमता दिग्गजों के अलावा किसमें हो सकती थी? देवताओं के राजा और स्वर्ग के अधिपति इंद्र की प्रतिष्ठा में ऐरावत हाथी और वज्र चार चाँद लगा देते हैं। मानवीय शक्ति का पैमाना हाथियों का बल माना जाता था। महाभारत में पांडुपुत्र भीमसेन के शरीर में दस हजार हाथियों के बल का वर्णन मिल जाता है। जो भव्यता और विशालता गजराज में है, अन्यत्र कहाँ? हाथी और छह अंधों की कहानी प्रसिद्ध है। कई लोगों ने उसे स्कूल के कोर्स में पढ़ा है। अंधे व्यक्ति हाथी को छूकर देखते हैं और उन्हें वह खंभे, पेड़ के तने, दीवार, नली, पंखे और रस्सी जैसा प्रतीत होता है। अपनी बात मनवाने के लिए उनमें झगड़े की नौबत आ जाती है। अक्ल की आँखों पर पट्टी बांधे लोग अधूरी और व्यर्थ की बातों पर आज भी लड़ते रहते हैं न?

अंग्रेजों के राज में महाराष्ट्र में भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को घरों में बिठाए जानेवाले गणपति को लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने सार्वजनिक मंच पर लाकर उत्सव का रूप प्रदान किया ताकि लोगों को एकत्र होने का बहाना मिल सके और उन्हें आजादी का आव्हान करने का सुअवसर।

गणेश जी सर्वसुलभ सहृदय देवता हैं। भक्तगण अनगिनत रूपों में उनका स्मरण, ध्यान, पूजा, आराधना कर भवसागर को पार करने में आनेवाली बाधाओं को दूर भगाया करते हैं।

गणेश जन्मोत्सव

सुख समृद्धि का त्योहार है गणेश चतुर्थी

बाल मुकुन्द ओझा

लेखक स्तंभकार हैं।

भगवान गणेश के जन्मोत्सव को गणेश चतुर्थी के रूप में जाना जाता है। देश के सर्वाधिक लोकप्रिय त्योहारों में गणेश चतुर्थी एक है। गणेश चतुर्थी का त्योहार हर साल भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से शुरू होकर 10 दिन बाद अनंत चतुर्दशी के दिन बप्पा के मुर्ति विसर्जन के बाद समाप्त होता है। इसकी सही तिथि को लेकर कई लोगों के मन में दुविधा है कि गणेश चतुर्थी 18 सितंबर को मनाया जाएगा या 19 को। इस साल भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि 18 सितंबर 2023 और 19 सितंबर 2023 दो दिन पड़ रही हैं। शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि 18 सितंबर 2023 को दोपहर 12:39 बजे से शुरू होकर 19 सितंबर 2023 को दोपहर 1:43 बजे खत्म होगी। उदया तिथि मानने वाले लोग 19 सितंबर 2023 को गणेश चतुर्थी मनाएंगे। इस दिन ब्रह्म, शुक्ल और शुभ योग बन रहे हैं। वहीं आप उदया तिथि को नहीं मानते हैं तो 18 सितंबर को आप धुमधाम से गणेश चतुर्थी मना सकते हैं। इस तरह गणेश उत्सव इस साल 19 सितंबर 2023 से 28 सितंबर 2023 तक चलेगा।

हमारे देश में प्रत्येक घर में तब तक कोई शुभ काम पूरा नहीं माना जाता जब तक वहां भगवान गणेश की पूजा न हो। इसके पीछे मान्यता है कि किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत इस दिन करने से फल अच्छा मिलता है। इस दिन गणेश जी की पूजा करने से घर में सुख, समृद्धि और संपन्नता आती है। कई लोग व्रत रखते हैं। व्रत रखने से भगवान गणेश खुश होते हैं और श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूरी

होती हैं। यह दिन भगवान गणेश की पूजा, आदर और सम्मान करने के लिए मनाया जाता है।

भारतीय जनजीवन में गणेशजी का अद्वितीय स्थान है। पंच देवताओं में वे अग्रगण्य हैं। प्रत्येक उत्सव, समारोह अथवा अनुष्ठान का आरंभ उन्हीं की पूजा-अर्चना से होता है। वे विद्या और बुद्धि के देवता हैं। इसके साथ ही वे विघ्न-विनाशक भी हैं। भगवान गणेश का अवतार ज्ञान, समृद्धि और सौभाग्य के रूप में हुआ है। इस कारण हमारे देश में किसी भी अच्छे काम की शुरूआत से पहले भगवान गणेश का आह्वान एक आम बात है। साथ ही इस त्योहार से हम अपने जीवन में शांति, समृद्धि और सद्भाव ला सकते है। पंचदेवों में से एक भगवान गणेश सर्वदा ही अग्रपूजा के अधिकारी हैं और उनके पूजन से सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति मिलती है। श्रीगणेश के स्वतंत्र मंदिर कम ही जगहों पर देखने को मिलते हैं परंतु सभी मंदिरों, घरों, दुकानों आदि में भगवान गणेश विराजमान रहते हैं। इन जगहों पर भगवान गणेश की प्रतिमा, चित्रपट या अन्य कोई प्रतीक अवश्य रखा मिलेगा। लेकिन कई स्थानों पर भगवान गणेश की स्वतंत्र मंदिर भी स्थापित है और उसकी महता भी अधिक बतायी जाती है। भारत ही नहीं भारत के बाहर भी भगवान गणेश हैं।

पौराणिक मान्यताओं के मुताबिक एक बार मां पार्वती स्नान करने से पूर्व अपनी मैल से एक सुंदर बालक को उत्पन्न किया और उसका नाम गणेश रखा। फिर उसे अपना द्वारपाल बना कर दरवाजे पर पहरा देने का आदेश देकर स्नान करने चली गई। थोड़ी देर बाद भगवान शिव आए और द्वार के अन्दर प्रवेश करना चाहा तो गणेश ने उन्हें अन्दर जाने से रोक दिया। इसपर भगवान शिव क्रोधित हो गए और अपने त्रिशूल से गणेश के सिर को काट दिया और द्वार के अन्दर चले गए। जब मां पार्वती ने पुत्र गणेश जी का कटा हुआ सिर देखा तो अत्यंत क्रोधित हो गई। तब ब्रह्मा, विष्णु सहित सभी देवताओं ने उनकी स्तुति कर उनको शांत किया और भोलेनाथ से बालक गणेश को जिंदा करने का अनुरोध किया। उनके अनुरोध को स्वीकारते हुए एक गज के कटे हुए मस्तक को श्री गणेश के धड़ से जोड़ कर उन्हें पुनर्जीवित कर दिया। पार्वती जी हर्षातिरेक हो कर पुत्र गणेश को हृदय से लगा लेती हैं तथा उन्हें सभी देवताओं में अग्रणी होने का आशीर्वाद देती हैं। ब्रह्मा विष्णु, महेश ने उस बालक को सर्वाध्यक्ष घोषित करके अग्रपूज्य होने का वरदान देते हैं।

होशंगाबाद की हलचल

अफवाहों पर खरीद फरोख्त का खेल

संजीव डे राय

नगर का इतिहास प्राचीन होने से नगर में ऐसी कुछ भूमि यहां है, अंग्रेजी शासन में वे विकसित हुई, उस भूमि पर काबिज लोगों ने जनहित के कार्यों में उन भूमि का उपयोग किया सामाजिक कार्यों में योगदान दिया आज उन संस्थाओं पर भूमाफियाओं की नजर पड़ गई। दस्तावेजों का हेर फेर कर ये भूमाफिया उन भूमि को हथियाने का प्रयास कर रहे है। इस समय इन भूमि का मूल्य कई गुना होने से जिन संस्थाओं का इन भूमि पर कब्जा है उन्हें मीडिया में प्रचारित कर सफाई देनी पड़ रही कि ऐसी कोई भूमि बेची नही जा रही है, कोरी अफवाह है.! ईसाई मिशनरी की करोड़ों की भूमि नगर में है। और तथाकथित लोग तरह तरह की अफवाह नगर में फैला रहे है।

यह मजाक नहीं तो और क्या है..?

पीड़ित मानव सेवा के लिए जानी जाती

रेडक्रॉस सोसायटी का मुख्यालय पर अपना भवन होते हुए भी उसका अपने भवन पर कब्जा नहीं है..! दूसरी तरफ रेडक्रॉस सोसायटी ने जिला अस्पताल के भवन पर अतिक्रमण कर कब्जा जमा रखा है। यह आश्चर्य की बात है। रेडक्रॉस सोसायटी संस्था के अध्यक्ष कलेक्टर हैं और उनकी जमीन पर किसी दूसरे ने कब्जा कर रखा है। फिर ताज्जुब की बात यह भी है कि जिस शिक्षा समिति ने कलेक्टर को अपनी संस्था का अध्यक्ष बना रखा था उस संस्था ने नगरपालिका की बेशकीमती जमीन पर कब्जा कर दुकान, कार्यालय और स्कूल बना रखा..!

रक्तदान प्रोग्राम हाईजैक हुआ

रेडक्रॉस सोसायटी की भागीदारी में हालिया पंजाब केसरी के प्रधान संपादक की स्मृति में रक्त दान शिविर का आयोजित हुआ। शिविर में 33 लोगों ने रक्तदान किया लेकिन शिविर में शामिल बहुचर्चित एक स्वयं सेवी संस्था ने इस शिविर को ही हाईजैक कर दिखाया ..! बहुचर्चित स्वयं सेवी संस्था के दर्जन भर पदाधिकारी सदस्य शिविर में शामिल हुए उसमें तीन सदस्यों ने रक्तदान किया लेकिन अखबारी प्रचार में बाजी मार दिखाई, बहुचर्चित स्वयं सेवी संस्था यहां रेडक्रॉस सोसायटी चेयरमैन की आंखों में धूल झोंकने में सफल हुई, संस्था रक्तदान करने वालों को हेलमेट देने के लिए जो पांच हेलमेट साथ लाई थी लेकिन वे भी सिर में घुस नहीं रहे थे।

मात्र 54 हजार का बिल भुगतान नहीं किया..?

पीड़ित मानव सेवा के लिए जानी जाती रेडक्रॉस सोसायटी का चिकित्सालय प्रांगण स्थित कार्यालय के रिनोवेशन के बाद उसे सजाने व्यवस्थित दिखाने के लिए एक दुकान से फर्नीचर बगैरह खरीदा गया चार माह हो चले दुकानदार का बिल भुगतान नहीं हो पाया। रेडक्रॉस सोसायटी सचिव बार-बार नोटशीट बदलवा रहे लेकिन भुगतान नहीं करवा रहे। खुद सोसाइटी सदस्य इस मामले में भौंचक्के है कि रेडक्रॉस जैसी संस्था की खरीददारी में भी शक सुबह की गुंजाइश..?

साहब यह तो राजनीति है..?

प्रदेश के मुखिया ने एक खबरी चैनल पर गिरजा शंकर शर्मा का भाजपा छोड़कर कांग्रेस में शामिल होने वाली बात को कोई तब्बजो यह कहकर नहीं दी कि यह उनकी पुरानी आदत है वे पहले भी कांग्रेस में जा चुके यह बात गले नहीं उतरी..? मुखिया की जानकारी पर भाजपाई अचंभित है। भाजपा के फाउंडर मेंबर गिरजा शंकर शर्मा पार्टी से निकाले गए थे। जिन्होंने मुखिया के ग्राम जैत में जाकर नदी में उतरकर मुखिया के विरुद्ध बेधड़क मोर्चा खोला था लेकिन कांग्रेस में शामिल नहीं हुए थे.. ये खुद भाजपाई कार्यकर्ता कह रहे। पर गिरजा शंकर शर्मा वाकई दमदार साबित हो रहे भाजपा छोड़ने पर एक तरफ मुखिया गलत जानकारी दे रहे तो दूसरी तरफ उनके भाई सीतासरन शर्मा को अखबार में विज्ञापन पर देकर सफाई देनी पड़ रही है कि उन्होंने 2300 करोड़ से अधिक के विकास कार्य करवा कर नर्मदापुरम नाम को पहचान दिलाई है। जबकि गिरजा शंकर शर्मा का आरोप है कि विगत दस साल से भाजपा पटरी से उतर जनहितैषी के काम नहीं कर रही है।

अंडर करंट. ब्राह्मणों में भेद..!

इस समय टिकट कटवाने टिकट लाने का खेल युद्ध स्तर पर है। सिवनी मालवा विधानसभा छोड़कर जिले की तीनों विधानसभा में वर्तमान विधायकों का जमकर विरोध किया जा रहा। प्रतिद्वंद्वी समर्थकों के साथ भोपाल तक जाकर विरोध कर रहे। जिससे वर्तमान विधायक पशोपेश में है.. विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 137 में तो अब अंडर करंट विरोध का इस विषय को लेकर शुरू हो गया कि 137 का उम्मीदवार ब्राह्मण ही होना चाहिए माइग्रेट नहीं.. यानी ब्राह्मणों में भी भेद..

और अब अंत में चलते चलते..

भाजपा में रहे गिरजा शंकर शर्मा का पार्टी छोड़ जाना, कांग्रेस में शामिल होना यहां मंडल अध्यक्षों को नहीं सुहाया.. गिरजा शंकर जी ने जिस दिन भाजपा छोड़ी एक मंडल अध्यक्ष बीमार हो गए उनका इलाज घर पर चला, फिर जैसे ही उन्होंने कांग्रेस ज्वाइन की दूसरा मंडल अध्यक्ष इतना बीमार हो गया उन्हें निजी अस्पताल में इलाज कराने भर्ती कराना पड़ा ..

हरतालिका तीज पर पूजन हेतु बड़ी संख्या में ताप्ती तट पहुंची महिलाएं

सीएमओ ने अतिक्रमणकारियों के जोड़े हाथ

बैतूल/मुलताई। हरतालिका तीज पर बड़ी संख्या में महिलाओं ने मुलताई के ताप्ती सरोवर पहुंचकर पूजनपाठ किया और भगवान शिव की स्थापना के लिए रेत और बालू प्राप्त की, जिसका दूसरे दिन गणेश चतुर्थी के दिन ज्वारे के साथ जल में विसर्जन किया जाएगा। हरतालिका तीज पर सुबह से ही हजारों की संख्या में महिलाएं ज्वारा लेकर ताप्ती तट पहुंची मां ताप्ती एवं भगवान शिव की पूजा अर्चना की और भगवान शिव से अपने परिवार के सुख समृद्धि की कामना की। हरतालिका तीज के संबंध में पंडित गणेश शंकर त्रिवेदी बताते हैं कि इस दिन महिलाएं सरोवर या नदियों पर जाकर बालू एवं रेत घर लाती है जिससे प्रतीक के रूप में भगवान शिव की स्थापना की जाती है। इसके उपरांत रात में भगवान शिव का पूजन होता है हरतालिका की कथा का महिलाएं श्रवण कर असीम पुण्य की प्राप्ति करती है। इसके उपरांत दूसरे दिन 19 अगस्त को गणेश चतुर्थी पर महिलाएं फिर ज्वारे का विसर्जन करेगी और भगवान गणेश की घरों में प्रतिमाओं की स्थापना होगी। हरतालिका तीज पर पूजन पाठ का अपना महत्व है हरतालिका कथा से घर में सुख समृद्धि और शांति प्राप्त होती है पापों का नाश होता है। इसके उपरांत 20 सितंबर को ऋषि पंचमी पर बड़ी संख्या में महिलाएं ताप्ती तक पहुंचेगी और सप्त ऋषियों का पूजन पाठ कर रजोधर्म के दोशो का निवारण करेगी। ऋषि पंचमी पर लक्ष्मी नारायण मंदिर में पूरे दिन सामूहिक रूप पूजन अनुष्ठान होगा।

सीएमओ ने अतिक्रमण करने वालों के जोड़े हाथ- नगर के ताप्ती परिक्रमा मार्ग में अतिक्रमण बड़ी समस्या बनते जा रहा है और स्थिति यह है कि किसी भी धार्मिक पर्व पर बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं और विशेष तौर से महिलाओं को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। परिक्रमा क्षेत्र की पक्की दुकानदारों ने भी दुकान के अंदर से अधिक दुकान बाहर लगाकर रखी है। आज इसकी शिकायत जब नगर पालिका को मिली तो नगर पालिका सीएमओ ने मौके पर पहुंचकर दुकानदारों से हाथ जोड़कर निवेदन किया कि वह अपनी दुकानों को अंदर कर ले। दुकानों के बाहर लगाए जाने से अव्यवस्था हो रही थी और महिलाओं को परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। जिसकी सूचना नगर पालिका को मिलने के बाद नगर पालिका अध्यक्ष नीतू परमार, उपाध्यक्ष शिवकुमार माहोरे, सभापति निर्मला उबनारे, सुरेश पौनीकर, सीएमओ आरके इवनाती, कांग्रेस नेता किशोर सिंह परिहार, शेख ज़किर , प्रह्लाद सिंह परमार, गुलशन शेलकरी आदि मौके पर पहुंचे और उन्होंने व्यवस्था बनवाई।

बदहाली और बर्बादी के खिलाफ जन आक्रोश

● 19 सितम्बर को प्रारंभ होगी जन आक्रोश की 11,000 किमी की यात्रा..

नर्मदापुरम। 18 सालों की प्रदेश की बदहाली और बर्बादी का जनता में शिव राज के ख़िलाफ जो असंतोष है वह अब जन आक्रोश में तब्दील हो गया है। इस जन आक्रोश को लेकर मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी सम्पूर्ण प्रदेश की दो सौ तीस विधानसभा क्षेत्र में सात जन आक्रोश रैली निकालेगी इस सम्बन्ध में जानकारी देते हुए मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी प्रदेश प्रवक्ता व जन आक्रोश यात्रा 5 मीडिया प्रभारी समन्वयक राजकुमार केलू उपाध्याय ने बताया कि प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में जन आक्रोश यात्रा क्रमांक 5 की एक बैठक आयोजित की गयी जिसमें राष्ट्रीय महासचिव एवं प्रदेश कांग्रेस प्रभारी रणदीप सिंह सुरजेवाला ,राष्ट्रीय सचिव एवं प्रदेश कांग्रेस सहप्रभारी संजय कपूर ,पूर्व केन्द्रीय मंत्री प्रदीप जैन, यात्रा प्रभारी व पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश पचौरी , प्रदेश संगठन प्रभारी राजीव सिंह, यात्रा सह प्रभारी सुखदेव पांसे , जिला संगठन प्रभारी संजय शर्मा, चंद्रिका प्रसाद द्विवेदी,अवधेश सिसोदिया, चौधरी गंभीर सिंह ,सिवनी जिला कांग्रेस अध्यक्ष राजकुमार खुराना, बैतूल जिला कांग्रेस अध्यक्ष ग्रामीण हेमन्त वागद्रे , होशंगाबाद(नर्मदापुरम) जिला कांग्रेस अध्यक्ष पुष्पराज पटेल , हरदा जिला कांग्रेस अध्यक्ष ओम पटेल,जिला संगठन मंत्री स्पेंसर लाल, मधुसूदन यादव, जयप्रकाश त्रिपाठी एवं कांग्रेस नेता शामिल थे। राजकुमार केलू उपाध्याय ने बताया कि 1400 किमी चलने वाली इस यात्रा मार्ग क्रमांक 5 की यात्रा के रूट एवं विधानसभा क्षेत्रों में तारीख का निर्धारण किया गया है यात्रा 19 सितम्बर को हरदा से प्रारंभ होगी एवं बैतूल , छिन्दवाड़ा , सिवनी होते हुए होशंगाबाद (नर्मदापुरम) में यात्रा पहुंचेगी यह यात्रा पांच जिलों की विधानसभाओं में पहुंचेगी ।

आज मंगलवार को बैतूल जिले में प्रवेश करेगी जनआक्रोश यात्रा

बैतूल। भाजपा के 18 वर्ष के शासनकाल में प्रदेश में अनुसूचित जाति एवं जनजाति , पिछड़ा वर्ग के साथ ही युवा एवं महिलाओं के साथ हो रहे अत्याचार , भ्रष्टाचार के साथ ही बेरोजगारी को ले कर प्रदेश की जनता में आक्रोश व्याप्त है । प्रदेश में चारों ओर अराजकता , अपराध , भय ,लूट और भ्रष्टाचार की खुली छूट है

इस कारण आदिवासी , पिछड़ा वर्ग किसान , दलित , बेटियाँ , बच्चे , नौजवान सभी की एक ही आवाज है भाजपा की शिवराज सरकार हटाओ और प्रदेश बचाओ।

प्रदेश की इस आवाज को ले कर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर जन आक्रोश यात्रा 19 सितम्बर को यात्रा प्रभारी पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुरेश पचौरी एवं सह प्रभारी पूर्व केबिनेट मंत्री एवं मुलताई विधायक सुखदेव पांसे के नेतृत्व में हरदा जिले से प्रारंभ हो कर बैतूल जिले में प्रवेश करेगी। यात्रा के साथ राष्ट्रीय सचिव एवं मध्यप्रदेश के सह प्रभारी संजय कपूर , पूर्व केन्द्रीय मंत्री प्रदीप जैन बैतूल जिले के संगठन प्रभारी चंद्रिका प्रसाद व्दिवेदी , विधायक निलय डागा ,धरमू सिंह सिरसाम एवं ब्रम्हा भलावी भी साथ रहेंगे। यह जानकारी देते हुए जिला संगठन मंत्री स्पेंसर लाल ने बताय कि जन आक्रोश यात्रा बैतूल जिले के घोड़ाडोंगरी विधानसभा क्षेत्र के पाटाखेड़ा में सायं 4 बजे पहुचेगी जहां एक नुक्कड़ सभा को सम्बोधित करेगी। इसके पश्चात सांय 6 बजे चिचोली पहुँच कर एक आम सभा को सम्बोधित करेंगे एवं रात्रि विश्राम बैतूल में करेंगे।

दूसरे दिन 20 सितम्बर को बैतूल में सुबह 11 बजे प्रेस कांफ्रेंस , दोपहर 12 बजे गांधी चौक में आमसभा , दोपहर 2.30 बजे झल्लार बस स्टेण्ड के पास नुक्कड़ सभा , भैसदेही विधानसभा के ग्राम गुदगांव में दोपहर 4 बजे आमसभा पश्चात रात्री विश्राम बैतूल में रहेगा । यात्रा के तीसरे दिन 21 सितम्बर को प्रातः 11 बजे आमला में बस स्टेण्ड पर आमसभा पश्चात दोपहर 2 बजे मुलताई पहुचेगी जहां कांग्रेस के नेता गण एक आमसभा को सम्बोधित करेंगे। जन आक्रोश यात्रा बैतूल जिले से छिन्दवाड़ा जिले के पाण्डुरना विधानसभा क्षेत्र के लिए प्रस्थान करेगी।

पूरी यात्रा में अपने - अपने विधानसभा क्षेत्र में सभी ब्लाक कांग्रेस , मण्डलम , सेक्टर , बूथ के पदाधिकारी , सेवादल , महिला कांग्रेस , युवक कांग्रेस , भाराछा संगठन , आदिवासी कांग्रेस , किसान कांग्रेस एवं सभी प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों को उपस्थित रहने का अनुरोध किया है ।

महाराष्ट्र समाज में दस दिवसीय गणेशोत्सव आज से

देवास। महाराष्ट्र समाज में सिद्धि विनायक मंदिर में श्री की स्थापना के साथ दस दिवसीय गणेशोत्सव आज 19 सितम्बर से प्रारंभ होगा। जानकारी देते हुए समाज प्रवक्ता अतुल मद्धव ने बताया कि स्थापना के पश्चात सच्चिदानंद मंडल द्वारा भजन संध्या, नाट्य वंदना उज्जैन का मराठी नाटक ,अभिव्यक्ति कला संस्थान का हिंदी हास्य नाटक ,अंताक्षरी प्रतियोगिता, कराओके गीत संगीत,आनंद मेला, सांस्कृतिक कार्यक्रम ,तथा बेलगांव के कलाकार योगेश रामदास द्वारा मराठी गायन की प्रस्तुति समाज परिसर में होगी। सभी समाजजनों से आग्रह है कि प्रतिदिन शाम 7.30 बजे होने वाली श्री की आरती तथा उसके पश्चात होने वाले रंगारंग कार्यक्रम में उपस्थित रहकर दस दिवसीय कार्यक्रम को सफल बनाएं।

जिला जेल में बंदी कैदियों द्वारा बनाए गए मिट्टी की श्रीगणेश प्रतिमा/कलेक्टर श्री गुप्ता को जेल अधीक्षक हिमानी मनवारे ने की भेंट

देवास । जिला जेल में बंदी कैदियों द्वारा चंद्रयान थीम पर मिट्टी की श्रीगणेशजी की प्रतिमा बनाई गई। जेल अधीक्षक हिमानी मनवारे ने कैदियों द्वारा बनाई गई प्रतिमा को कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता को भेंट की। जेल अधीक्षक हिमानी मनवारे ने कैदियों द्वारा करीब ढाई सौ से अधिक मिट्टी की श्रीगणेशजी प्रतिमा बनाई गई है जो की विभिन्न विभागों को भेंट की गई है। साथ ही जेल के बाहर एक स्टॉल भी लगाया गया है ताकि लोग मिट्टी की प्रतिमा खरीद सकें।

नगर निगम गणेशोत्सव में कर रहा इको फ्रेंडली पांडाल प्रतियोगिता

देवास/मोहन वर्मा। नगर निगम द्वारा एक नई पहल शहर में स्थापित किये जा रहे 10 दिवसीय श्री गणेश जी के पांडालो के मध्य इको फ्रेंडली पांडाल प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। जिसके अंतर्गत पांडाल संचालको को अपने पांडाल को जीरो वेस्ट थीम एवं पर्यावरण के अनुकूल तैयार किया जाना है। इस प्रतियोगिता के आयोजन का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण एवं वातावरण में सुधार, सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग पर पुर्णतः प्रतिबंध, स्टील के बर्तन एवं पर्यावरण हितेषी वस्तुओ को बढावा देना, पंडाल में अपशिष्ट न्यूनीकरण एवं अपशिष्ट प्रबंधन,पंडाल में पर्यावरण अनुकूल पहल,पंडाल में वेस्ट टू आर्ट पहल, जिससे देवास शहर साफ एवं स्वच्छ रहे। निगम द्वारा इसके निरीक्षण हेतु प्रथक से टीम बनाई जावेगी जो सभी पंडालो का निरिक्षण करेगी, प्रथम 3 पांडाल संचालक को 2 अक्टूम्बर को सम्मानित किया जावेगा द्यनिगम टीम द्वारा उल्लेखित बिन्दुओ के आधार पर पांडाल का निरिक्षण किया जावेगा। जिसमे पांडाल के आस पास साफ-सफाई हो, पांडाल परिसर में बड़े वाले डस्टबिन उपलब्ध हो, पांडाल परिसर में स्वच्छता से संबधित सन्देश लिखे हो,यदि पानी की व्यवस्था है तो वहां डिस्पोजल का उपयोग न किया गया हो, कार्यक्रम में सिंगल यूज प्लास्टिक जैसे प्लास्टिक की चम्मच, प्लास्टिक के डिस्पोजल, प्लास्टिक की कटोरी, दोने आदि का उपयोग प्रतिबंध हो, पांडाल के सजावट में पर्यावरण हितेषी सामग्री का उपयोग किया गया हो, पंडाल में पर्यावरण अनुकूल पहल हो, पंडाल में सामाजिक एवं पर्यावरण संबंधी संदेश लिखे हो।

विधायक एवं महापौर प्रतिनिधि दुर्गेश अग्रवाल ने कहा की निगम द्वारा यह नवाचार किया जा रहा है। जिसमे स्वच्छ पांडाल प्रतियोगिता आयोजित की गई है। उल्लेखित स्वच्छता की गाईड लाईन का पालन करें साथ ही भगवान श्रीगणेश जी के पांडाल के आसपास मे सफाई हो, पांडाल मे बडे डस्टबीन रखे गये हों पांडाल मे सिंगल यूज प्लास्टिक की सामग्री का उपयोग व अन्य प्रकार की स्वच्छता को बाधित करने वाली सामग्रीयो को प्रतिबंधित कर प्रतियोगिता मे भाग लेकर एक आर्दश उदाहरण प्रस्तुत करें। इसमे नागरिको की भी महत्वपूर्ण भूमिका हेतु उन्हें प्रेरित करें। सभापति रवि जैन ने कहा कि भगवान श्रीगणेश जी की स्थापना शहर मे जिन पांडालो पर की जा रही है निगम द्वारा स्वच्छता अभियान अनतर्गत शहर के सभी पांडालो मे स्वच्छता गाईड लाईन का पालन कर हो रही पांडालो मे स्वच्छता की प्रतियोगिता मे भाग लेकर अपने पांडालों को स्वच्छात मे नम्बर वन लाने का संकल्प लें। स्वच्छता की इस प्रतियोगिता के अभियान मे जुडकर पांडाल को साफ व स्वच्छ रखें। प्रतियोगिता मे पांडाल के पदाधिकारियो के साथ साथ पांडाल मे आने वाले श्रद्धालुओ की भी अहम भूमिका होकर इस अभियान की सार्थकता सिद्ध होगी।

आयुक्त रजनीश कसेरा ने कहा कि नगर निगम द्वारा प्रति वर्ष गणेशोत्सव के अवसर पर विशेष रूप से सफाई कार्यो पर फोकस किया जाता है किन्तु इस वर्ष सफाई व्यवस्थाओ हेतु इको फ्रेंडली पांडाल की प्रतियोगिता आयोजित की गई है। जिसमे गणेश जी के स्थापित सर्वश्रेष्ठ पांडाल को 2 अक्टुबर गांधी जयंती पर पुरस्कृत किया जावेगा।

नवरात्रि पर्व पर माताजी टेकरी पर भक्तों के लिए सुविधाओं की तैयारी बैठक

नवरात्रि पर रोप वे की सुविधा सुबह 6 बजे से रात्रि 11 बजे तक रहेगी

देवास। मोहन वर्मा। जिले में आगामी नवरात्रि पर्व 15 अक्टूबर से मनाया जाएगा। नवरात्रि पर्व की तैयारियों के संबंध में माँ चामुंडा शासकीय देवस्थान प्रबंध समिति कार्यालय में बैठक आयोजित हुई। बैठक में एएसपी श्री जयवीर सिंह भदौरिया, एसडीएम श्री बिहारी सिंह, नगर निगम आयुक्त श्री रजनीश कसेरा, डिप्टी कलेक्टर श्री अभिषेक शर्मा, सीएसपी देवास कोतवाली श्री दिशेष अग्रवाल, सीएसपी बीएनपी श्री संजय शर्मा नगर निगम उपायुक्त डॉ. पुनीत शुक्ला, माताजी टेकरी के पुजारी, लोक निर्माण विभाग, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, विद्युत, नगर निगम, वन विभाग, यातायात, स्वास्थ्य विभाग, संबंधित विभागों के अधिकारी तथा टेकरी पर नियमित रूप से आने वाले श्रद्धालुगण सहित अन्य संबंधित उपस्थित थे।

बैठक में अनुविभागीय अधिकारी एवं सचिव माँ चामुण्डा शासकीय देवस्थान प्रबंध समिति देवास श्री बिहारी सिंह ने कहा कि सभी संबंधित अधिकारी नवरात्रि पर्व प्रारंभ होने से पहले सभी तैयारियां पूर्ण कर लें। नवरात्रि पर रोप वे की सुविधा सुबह 06 बजे से रात्रि 11 बजे तक रहेगी। पार्किंग व्यवस्था उज्जैन रोड, डीआरपी लाइन, कैलादेवी रोड, सिविल लाईन, उत्कृष्ट विद्यालय, भोपाल चौराहा और मण्डी में रहेगी। जहां पार्किंग है वहीं जूते, चप्पल रखने के लिए स्टेण्ड की व्यवस्था और पीने का पानी और बाथरूम की व्यवस्था भी की जायेगी। सीढी मार्ग से अतिक्रमण हटाया जायेगा और दुकानों के सामने चुना डालकर मार्किंग की जायेगी।

टेकरी पर दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं को सुगमता से दर्शन हों, इसके लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। टेकरी स्थिति समस्त मंदिरों एवं सम्पूर्ण टेकरी क्षेत्र की चौबीसों घंटे साफ-सफाई की जाये। नवरात्रि के दौरान श्रद्धालुओं के लिए सुविधाजनक दर्शन की सुविधा की दृष्टि से टेकरी पर पानी व छाया सहित आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराई जाएगी। टेकरी पर कंट्रोल रूम बनाये, कैमरे लगाये और 24 घंटे मॉनिटरिंग करें।

अनुविभागीय अधिकारी एवं सचिव माँ चामुण्डा शासकीय देवस्थान प्रबंध समिति देवास श्री बिहारी सिंह ने कहा कि टेकरी पर उच्च गुणवत्ता की सुविधाएं उपलब्ध कराई जायेगी। जिससे बाहर से आने वाले श्रद्धालुजन देवास के इस प्रसिद्ध स्थान की व्यवस्थाओं की प्रशंसा करें। टेकरी पर स्थित अन्न क्षेत्र को ओर अच्छे से विकसित किया जायेगा। टेकरी स्थिति समस्त मंदिरों एवं सम्पूर्ण टेकरी क्षेत्र की नियमित साफ सफाई की जायेगी। श्रद्धालुओं के लिए सुविधाजनक दर्शन की सुविधा की दृष्टि से शेड लगाए जायेंगे। टेकरी पर पानी व छाया सहित आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जायेगी। श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए पर्याप्त व्यवस्थाएं की जायेगी। नवरात्रि पर्व के दौरान शहर के महत्वपूर्ण स्थानों पर एलईडी लगाई जाएगी तथा एलईडी के माध्यम से दोनों माताजी के दर्शन की सुविधा आमजन को उपलब्ध कराई जायेगी। टेकरी पर पीने के पानी की समुचित व्यवस्था की जाएगी। टेकरी क्षेत्र में निर्बाध विद्युत व्यवस्था के लिए कर्मचारियों की तैनाती की जाये।

मवेशी को बचाने के चलते बस-डंपर में भिड़त

दोनों ड्राइवर समेत 15 यात्री घायल

बैतूल। जिला मुख्यालय बैतूल से भोपाल जा रही एक यात्री बस की रेत के डंपर से जोरदार भिड़ंत हो गई। इस भिड़ंत में लगभग 15 यात्री घायल हो गए, जबकि तीन मवेशियों की मौत हो गई। हादसा सोनाघाटी के पास हुआ है। घटना की जानकारी मिलते ही 108 एम्बुलेंस और पुलिस मौके पर पहुंच गई और घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया। बस और डंपर के बीच भिड़ंत इतनी जबरदस्त थी कि दोनों आपस में फंस गए और इन्हें क्रेन की मदद से अलग किया गया। बस बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई है।

घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार सोमवार सुबह 6 बजे बैतूल से भोपाल की ओर जा रही लक्ष्मी नारायण बस सोना घाटी के पास सड़क पर बैठे मवेशियों को बचाने के चक्कर में डंपर से जा भिड़ी। इस दुर्घटना में यात्री बस में सवार लगभग 15 लोग घायल हो गए। कुछ लोगों को गंभीर चोट आना बताया जा रहा है। घटना सुबह 6 बजे की है, जबकि कोतवाली पुलिस 2 घंटे देरी से मौके पर पहुंची। इस दौरान सड़क पर बैठे तीन गौवंश की मौत डंपर के नीचे दबने से हो गई।

बस में बैठे यात्रियों और प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक बस और डंपर की टक्कर से 15 लोग घायल हो गए हैं। बस और डंपर के ड्राइवर बुरी तरह फंस गए थे जिन्हें आसपास के लोगों की मदद से बाहर निकल गया और अस्पताल भेजा गया। घटना का मूल कारण सड़क पर बैठे आवारा मवेशी बताई जा रहे हैं जिन्हें बचाने के चक्कर में बस और डंपर आपस में भिड़ गए और यह हादसा हो गया। इस घटना के सम्बंध में कोतवाली टीआई आशीष सिंह पवार ने बताया कि सभी घायलों को और दोनो ड्राइवर को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सभी घायलों के बयान भी दर्ज किए जा चुके हैं।

पूर्व सांसद ने प्रतिभावान बच्चों को किया सम्मानित

बैतूल। नगर पालिका बैतूल के वीर सावरकर तरणताल में कुछ समय पूर्व आयोजित कार्यक्रम में पूर्व सांसद, पूर्व विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें प्रतिभावान बच्चों को सम्मानित कर उन्हें प्रोत्साहन राशि देने का कहा था। इसी कड़ी में सोमवार को श्री खण्डेलवाल ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले पांच प्रतिभावान बच्चों एवं उनके प्रशिक्षकों को अपने निवास पर सम्मानित कर प्रोत्साहन राशि भेंट की गई।

पूर्व सांसद श्री खण्डेलवाल ने एमपी त्रेथनॉल एसोसिएशन द्वारा भोपाल में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में ब्रान्ज मेडल विजेता महिमा यादव, हरियाणा में आयोजित नेशनल टूर्नामेंट के विजेता अंकित प्रजापति, स्टेट स्वीमिंग काम्पीटीशन में ब्रान्ज मेडल विजेता विनीत कवड़कर एवं त्रेथनॉल एसोसिएशन द्वारा भोपाल में आयोजित नेशनल स्वीमिंग काम्पीटीशन के विजेता देवेन्द्र यादव व सौरभ यादव को सम्मानित कर प्रोत्साहन राशि भेंट की गई। श्री खण्डेलवाल ने राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभावान बच्चों के कोच रामबरन पाल एवं गोवर्धन यादव को सम्मानित कर प्रोत्साहन राशि भेंट की।

सांची पार्लर में संदिग्ध आगजनी से हड़कंप

बैतूल। जिला मुख्यालय में आज तड़के सुबह चौपाटी पर एक मिल्क पार्लर में आग से लाखों का नुकसान हो गया। आग की सूचना के बाद फायर ब्रिगेड ने मौके पर पहुंचकर काबू पाया। आग का कारण स्पष्ट नही हो सका है । हालाकि प्रारंभिक तौर पर आग की वजह शार्ट सर्किट मानी जा रही है। लेकिन लोग इसे संदिग्ध मान रहे हैं।

शहर के अंबेडकर चौक स्थित चौपाटी पर आज सुबह करीब पांच बजे नेहरू पार्क के कोने पर सांची दूध पार्लर से धुआं उठता देखने के बाद मॉर्निंग वॉक पर आने वाले लोगों ने इसकी सूचना गंज पुलिस और फायर ब्रिगेड को दी। मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड ने आधा घंटे की मशक्कत के बाद इस आग पर काबू पाया। आग से दुकान में रखे फ्रिज और बाकी सामना जलकर खाक हो गया।

पार्लर संचालक अंगद यादव के मुताबिक पार्लर में दूध से बने उत्पाद और स्नैक्स रखे हुए थे।जबकि दूध पैकेट वगैरह को सुरक्षित रखने के लिए लाखों की लागत के फ्रिज रखे हुए थे। मौके पर पहुंचे बिजली विभाग के कर्मचारियों ने बिजली सप्लाई बंद कर फायर ब्रिगेड की मदद से आग पर काबू पाया।

अतिवृष्टि से फसलों को हुए नुकसान की किसानों से ली जानकारी

● पूर्व सांसद हेमंत खंडेलवाल ने प्रभावित किसानों से की चर्चा

बैतूल। बीते दिनों से जिले में लगातार हो रही बारिश से फसलों को बहुत नुकसान हुआ है। भारी बारिश से फसलों को हुए नुकसान का जायजा लेने पूर्व सांसद, पूर्व विधायक हेमंत खंडेलवाल ने रविवार को बैतूल विधानसभा क्षेत्र के बघोली एवं लोहारिया ग्रामों का दौरा कर खेतों में जाकर फसलों को हुए नुकसान का जायजा लिया। अतिवर्षा होने के कारण श्री खंडेलवाल ने लोहारिया ग्राम में खेत में स्थित राजेन्द्र मोहने के मकान में क्षेत्र के किसानों से चर्चा कर फसलों को हुए नुकसान के बारे में जानकारी ली। पूर्व सांसद श्री खंडेलवाल ने किसानों से कहा कि विपदा की इस घड़ी में वे एवं प्रदेश सरकार किसानों के साथ खड़ी है। उन्होंने किसानों को भरोसा दिलाया कि प्रशासनिक अधिकारियों से चर्चा कर अतिवृष्टि प्रभावित इलाकों में फसलों को हुए नुकसान के आंकलन के लिए जल्द से जल्द सर्वे शुरू करवायेंगे तथा प्रभावित किसानों को हुए नुकसान की शासन स्तर से यथा संभव मदद करवायेंगे। इस दौरान बघोली एवं लोहारिया ग्राम के किसान और ग्रामीण मौजूद थे।

एकलव्य महिला औद्योगिक संस्थान की दो प्रशिक्षणार्थियों को मुख्यमंत्री ने किया सम्मानित

बैतूल। शहर के शास.एकलव्य महिला औद्योगिक संस्थान की दो प्रशिक्षणार्थियों को भोपाल स्थित रविन्द्र भवन में आईटीआई दीक्षांत समारोह में मुख्यमंत्री शिवराज चौहान ने सम्मानित किया गया है। प्राचार्य श्री पंडाग्रे ने बताया कि इलेक्ट्रिशियन टेड्र की कु.शिवानी निगम एवं ऑफिस असिस्टेंट कंप्यूटर ऑपरेटर टेड्र की कु.अंकिता मसाने को अपने टेड्र में राज्य में प्रथम आने पर मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा पुरस्कृत किया गया। दोनों प्रशिक्षणार्थियों को संस्था प्राचार्य श्री रेवाशंकर पंडाग्रे, टेड्र प्रशिक्षण अधिकारी श्री सचिन सरले, श्रीमती भारती यादव, ड्राईंग प्रशिक्षण अधिकारी श्री चिंतामणी विश्वकर्मा, एम्प्लायबिलिटि स्कील प्रशिक्षण अधिकारी श्रीमती रितिका ठाकुर, वरिष्ठ प्रशिक्षण अधिकारी श्री दिलीप कुमार सोनी, श्रीमती पुष्पा बुनकर, श्रीमती विनिता पाटील सहित समस्त स्टाफ ने बधाई दी है। संस्था प्राचार्य श्री पंडाग्रे ने बताया कि दोनों ही छात्राओं ने अपने-अपने ट्रेड में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर संस्था एवं जिले को गौरवान्वित किया है।

जन आशीर्वाद यात्रा का धार विधानसभा में भव्य स्वागत,भोजशाला के दर्शन कर रोड शो प्रारंभ

गरीबों का जीवन बदलने वाले कामों के दम पर आशीर्वाद मांग रही भाजपा- देवेंद्र फडणवीस

धार। भारतीय जनता पार्टी की केंद्र और राज्य सरकारों ने बीते सालों में समाज के हर वर्ग के लिए काम किए हैं, देश और प्रदेश के विकास के लिए काम किए हैं। गरीबों का जीवन बदलने वाले इन कामों के दम पर ही भारतीय जनता पार्टी जन आशीर्वाद यात्राएं निकाल रही है, जिन्हें प्रदेश की जनता का भरपूर समर्थन मिल रहा है। यह बात महाराष्ट्र सरकार के उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कही ।

जन आशीर्वाद यात्रा का धार विधानसभा में अभूतपूर्व स्वागत- जन आशीर्वाद यात्रा ने रोड शो के लिए कार्यकर्ताओ का एकत्रीकरण भोजशाला पर किया गया रोड शो के पूर्व अतिथियों ने मां सरस्वती मंदिर भोजशाला में दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त कर रोड शो का शुभारंभ किया। जन आशीर्वाद यात्रा में रोड़ शो के दौरान रथ पर महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, वरिष्ठ नेता विक्रम वर्मा,कैबिनेट मंत्री मोहन यादव, धार विधायक नीना वर्मा , यात्रा जिला प्रभारी मुकाम सिंह किराड़े,पूर्व जिला अध्यक्ष दिलीप पटोंदिया,राजीव यादव रथ पर सवार होकर जनता का आशीर्वाद लेने धार नगर की प्रमुख सड़कों पर निकले धार नगर में 30 से अधिक मंचो से जन आशीर्वाद यात्रा का विविध संगठनो और समाजों ने पुष्प वर्षा कर अभूतपूर्व स्वागत किया । यात्रा में हजारों की संख्या में कार्यकर्ता व नेता शामिल हुए युवा मोर्चा के युवा कार्यकर्ता वाहन रैली के रूप में आगे आगे चल रहे थे रोड शो प्रमुख मार्गो से होती हुई मिलन महल में सभा के रूप में परिवर्तित हो गई। जनसभा को महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने संबोधित करते हुए कहा की धार की इस धरा को में प्रणाम करता हूं। मालवा और महाराष्ट्र का रिश्ता पुराना है ।देश में मोदी जी ने सरकार संभालने के बाद नारा दिया की ना खाऊंगा न खाने दूंगा । आज कोई भी गरीब के हक पर हाथ नही मार सकता है जन धन खातों के माध्यम से सीधे खाते में राशि डाली जाती है। आज हम दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और आने वाले दिनों में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने वाले हैं आज भारत विश्व गुरु की ओर अग्रसर होता दिख रहा है । इस देश ने 10 सालो तक कांग्रेस की सरकार भी देखी है रोज नए नए घोटाले देखने को मिलते थे और आज हम चांद पर पहुंच गए है। आज मोदी जी के नेतृत्व में भारत आगे बड़ रहा है। आज विश्व का नेतृत्व भारत कर रहा हे विश्व की आस मोदी जी से है । मध्यप्रदेश के विकास की गति बनाए रखने के लिए भाजपा की सरकार जरूरी है। ये आनेवाले पांच साल भारतमाता के लिए है। आज ये घमंडिया गठबंधन के लोग सनातन धर्म को मिटाने की बात कर रहे हैं । सनातन को मिटाने वाले मिट गए पर यह सनातन आज भी है। में पूछना चाहता हु कमलनाथ से की आप पांच साल सनातन को गाली देते हो और चुनाव आते ही मंदिर मन्दिर दौड़ते हो । हम किसी धर्म के खिलाफ नहीं है पर हर बार सनातन के ही खिलाफ क्यों बोला जाता है। हमारा एजेंडा गरीब कल्याण का एजेंडा हे सब का साथ सब का विकास का हे ।

क्षेत्र के विकास के लिए जनता दे रही धन्यवाद- जनसभा को संबोधित करते हुए उच्च शिक्षा मंत्री मोहन यादव ने कहा कि जन आशीर्वाद यात्रा के दौरान हम जहां भी जा रहे हैं, हमें जनता का व्यापक आशीर्वाद मिल रहा है। साथ में जनता हमें उनके क्षेत्र में हुए विकास के लिए धन्यवाद भी देती है। लोग खुद कहते हैं कि आजादी के बाद पहली बार गांव-गांव में अगर पक्की सड़कें बनी हैं, तो यह भाजपा सरकार ने बनवाई हैं। 500 साल के संघर्ष के बाद अयोध्या में भव्य भगवान राम का मंदिर निर्माण हो रहा है। नई शिक्षा नीति ने भगवान राम और श्री कृष्ण के विषय में पढ़ाया जाएगा । हमारे मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने धार को मेडिकल कॉलेज की सौगात दी है। लाडली बहाना योजना के माध्यम से मातृशक्ति को सम्मान से जीने का हक दिया है । हम प्रदेश भी जीतेंगे और 2024 में लोकसभा चुनाव भी भरी बहुमत से जीतेंगे । धार विधायक नीना वर्मा ने कहा की आज हम जन आशीर्वाद यात्रा निकाल रहे है । भाजपा की शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में जन हितैषी काम हो रहे हैं । आज हर वर्ग के लिए विकास की योजनाएं हैं । ये सब भाजपा सरकार में हो रहा है। जिलाध्यक्ष मनोज सोमानी ने स्वागत भाषण देते हुए कहा की इस जन आशीर्वाद यात्रा को सफल बनाने के लिए भाजपा के सभी कार्यकर्ता लगे थे ऐसे सभी कार्यकर्ताओ का में आभारी हूं ।

पत्रकारों के सवालों का जवाब दिया- देवेंद्र फडणवीस ने पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए कहा कि शिवसेना उद्धव ठाकरे की नहीं एकनाथ शिंदे की है । और एकनाथ शिंदे तथा भाजपा महाराष्ट्र में एक ही है। सनातन धर्म के बारे में उन्होंने कहा कि जो उसे खत्म करने की बात कहते हैं वह कुछ सोच ले कि वह क्या है सनातन धर्म कभी खत्म नहीं होगा। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि मंच पर कैबिनेट मंत्री राजवर्धन सिंह दत्तीगांव, पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा, यात्रा संभाग सह प्रभारी जयपाल सिंह चावड़ा, भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी, धार विधायक नीना वर्मा, सावन सोनकर, गोलू शुक्ला, यात्रा जिला प्रभारी मुकाम सिंह किराड़े, यात्रा विधानसभा प्रभारी अशोक जैन, पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष क्रमशः प्रभु राठौर, विनोद शर्मा, दिलीप पटोंदिया, राजीव यादव, पूर्व विधायक करण सिंह पंवार, पूर्व सांसद सावित्री ठाकुर, प्रदेश सह मीडिया प्रभारी दीपक टीनू जैन, भाजपा नेता देवेंद्र पटेल ,नरेश राजपुरोहित प्रकाश धाकड़, सन्नी रिन, विश्वास पांडे, मोर्चा जिला अध्यक्ष जय सुर्या, पूनमचंद फकीरा, कुसुम सोलंकी सहित मंडल अध्यक्ष क्रमशः विपिन राठौर,नितेश अग्रवाल, अमित पाटीदार, नारायण सिंह पटेल, दिलीप पटेल,मनोज धाकड़, गणेश जायसवाल,सह मीडिया प्रभारी दीपक सिंह रघुवंशी सहित जिले पदाधिकारी भाजपा के वरिष्ठ नेता मंचासीन रहे। सभा का संचालन जिला महामंत्री प्रकाश धाकड़ ने किया व आभार संजय वैष्णव ने माना।

सोहागपुर विधानसभा में क्या तीन पंचवर्षीय मिथक ध्वस्त होगा, स्थानीय प्रत्याशी को लेकर मुहिम

सुबह सवेरे। सोहागपुर। नर्मदापुरम जिले की महत्वपूर्ण विधानसभा सोहागपुर पर पूरे क्षेत्रवासियों की निगाहें टिकी हुई हैं। अभी तक तीन पंचवर्षीय कार्यकाल में भाजपा विधायक विजयपालसिंह ने विजयश्री प्राप्त की थी। लेकिन मूलरूप से सोहागपुर क्षेत्रवासियों के लिए बनी विधानसभा में इस बार सब ठीक-ठाक नहीं चल रहा है। शहरीय ही नहीं ग्रामीणों क्षेत्रों के नागरिक के मन-मस्तिष्क में पिछले पंचवर्षीय कार्यकाल क्रियाकलापों के कारण स्थानीय जनप्रतिनिधि की चाहत बढ़ गई है।जो आगामी विधानसभा के चुनाव में भाजपा कांग्रेस के लिए परीक्षा की घड़ी है।जन आकांक्षाओं के अनुरूप युवा प्रत्याशी जनता-जनार्दन को नेतृत्व दे।।इन तीन पंचवर्षीय कार्यालय में भी क्षेत्र के नेताओं एवं कार्यकत्ताओं ने स्थानीय प्रत्याशी का मुद्दा उठाया ही नहीं। लेकिन स्थानीय युवा भाजपा नेता, बनखेड़ी बूथ विस्तारक, एवं जिला स्वदेशी जागरण मंच संयोजक विशाल गोलानी ने सोहागपुर विधानसभा से स्थानीय प्रत्याशी को लेकर अप्रैल माह से मुहिम चलाई थी।इस मुहिम में वरिष्ठ भाजपा नेता एवं पूर्व कृषि उपज मंडी अध्यक्ष राजा भैया पटैल कंधे-से-कंधा मिलाकर साथ साथ चल रहे थे। आपने सोहागपुर विधानसभा में स्थानीय प्रत्याशी को लेकर खुलकर साथ देने के उपरांत, प्रदेश संगठन के अलावा राष्ट्रीय स्तर के नेताओं से मुलाकात करके अवगत कराया था कि, जनता-जनार्दन भाजपा के साथ है। लेकिन जनता इस बार स्थानीय प्रत्याशी की चाहत रखती है। हालांकि पिछले 15 दिनों से सोहागपुर विधानसभा से स्थानीय प्रत्याशी को लेकर भाजपाइयों ने लामबंद होकर प्रदेश के नेताओं के यहां दस्तक दे दी है। जिसमें जनपद अध्यक्ष जालमसिंह पटैल, पूर्व मंडी कमेटी अध्यक्ष राजा भैया पटैल ब्लाक भाजपा अध्यक्ष एवं जनपद उपाध्यक्ष राघवेन्द्रसिंह पटैल , प्रदेश भाजपा कार्यकारिणी सदस्य राजो मालवीय, प्रान्शु राने , भरतजी पटैल, भगवानसिंह पटैल,हरिनारायण यादव राधाकृष्ण मंच जिला अध्यक्ष, रामकिशोर यादव पूर्व जिला पंचायत सदस्य माखननगर, पूर्व सरपंच देवेंद्र यादव समैन सहित करीबन एक दर्जन सरपंच, पूर्व सरपंच सहित कई नामचीन कार्यकर्ता एवं नेताओं की टोली ने प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बी डी शर्मा, प्रदेश भाजपा प्रभारी भूपेंद्र यादव, संभागीय संगठन प्रभारी पंकज जोशी आदि से सोहागपुर विधानसभा क्षेत्र से स्थानीय प्रत्याशी को लेकर चर्चा की। वहीं सोहागपुर विधानसभा में चल रहे समस्त क्रियाकलापों की विस्तृत जानकारी दी। इसके साथ जनहितैषी योजना में व्यापक गड़बड़ी के मामले भी संबंधितों को बताए जाने की चर्चाएं हैं। सभी ने आग्रह किया है कि योग्य कार्यकर्ता को इस बार सोहागपुर विधानसभा से प्रत्याशी बनाया जाए। जो मूलतः सोहागपुर विधानसभा क्षेत्र का हो। हम सभी एक जुट होकर भाजपा प्रत्याशी को विजयश्री दिलाएंगे। इधर जिला भाजपा उपाध्यक्ष सुरेश पटैल भाई साहब भी अपनी मुहिम सोहागपुर विधानसभा चुनाव क्षेत्र से सक्रिय होकर कर रहे हैं। सोहागपुर विधानसभा में नवीन प्रत्याशी ही भाजपा की नैया पर लगा पाएगा।

अग्रसेन जयंती महोत्सव 2023 की समिति का हुआ गठन

धार। अग्रवाल समाज धार के द्वारा प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी महाराजा अग्रसेन जयंती बड़े उत्साह और उल्लास के साथ मनाई जाएगी।

अग्रसेन जयंती महोत्सव मनाने के लिए अग्रवाल समाज धार की बैठक का आयोजन रविवार शाम को अग्रसेन भवन में किया। समाज अध्यक्ष योगेश अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में अग्रसेन जयंती महोत्सव 2को धूमधाम से पारंपरिक हर्षोल्लास से मनाने का निर्णय लिया। बैठक में सर्व सहमति से संयोजक नवीन गर्ग , सचिव दीपेश बिंदल, अजय अग्रवाल, कोषाध्यक्ष दीपक अग्रवाल, गौरव सांघी, क्रीडा

मंत्री वैभव अग्रवाल,आयुष अग्रवाल, प्रिंस गोयल,तरुण गर्ग प्रचारमंत्री श्याम मंगल लेबड, पत्रिका समिति में मुरली अग्रवाल, राजेश अग्रवाल, अंकित गोयल, को मनोनीत किया। बैठक में राजेंद्र मोदी,मोहन अग्रवाल,प्रवीण गर्ग,सतीश गोयल,राजेंद्र अग्रवाल, जितेंद्र अग्रवाल, पराग अग्रवाल,विनय अग्रवाल, अभिषेक अग्रवाल, मयंक अग्रवाल, अंकुश अग्रवाल, पीयूष अग्रवाल सहित कार्यकारिणी सदस्य मौजूद थे जानकारी मिडिया प्रभारी श्याम मंगल लेबड़ ने दी।

आगामी त्यौहारों को लेकर नालछा थाने पर हुआ शांति समिति की बैठक का आयोजन

आगामी सभी त्योहारों को परंपरानुसार मनाने के लिए ग्रामवासियों से थाना प्रभारी ने की अपील

सुबह सवेरे। नालछा। आगामी समय में आने वाले त्योहारो जिनमे प्रमुख रूप से गणेश चतुर्थी,तेजा दशमी,डोल ग्यारस,ओर तेरस तिथी पर निकलने वाली झांकियों व चल समारोह के साथ गणेश प्रतिमा विसर्जन को लेकर पुलिस थाना परिसर नालछा में शांति समिति की बैठक का आयोजन किया गया. गांव के जनप्रतिनिधियों व वरिष्ठ नागरिकों के साथ गणेशोत्सव समितियों के सदस्य,झांकी निर्माता ओर डीजे साउंड सिस्टम के संचालक भी शामिल हुए .बैठक में सभी से चर्चा कर आयोजनो की जानकारियां व सभी के सुझाव भी लिए गए . नालछा थाना प्रभारी ईश्वरसिंह चौहान ने बैठक में उपस्थित सभी नागरिकों से आगामी

त्योहारों ओर आयोजनों को परंपरागत रूप से पूर्ण उत्साह के साथ शांति पूर्ण तरीके से मनाने की अपील भी की . ग्राम पंचायत नालछा सरपंच मोहन डावर,उपसरपंच राकेश कुशवाह,वरिष्ठ अशौक मिरदवाल, संतोष राठौड़, विनोद ठाकुर,भोजपाल दरबार,महेश जायसवाल, निखिल ग्वाल,डॉ. महेश यादव, मनोज मोदी, जादूसिंह चौहान, अमित गुर्जर, राकेश गुर्जर, अर्जित यादव, सोनू मंडवाल, संतोष मंडलोई, जितेंद्र गुर्जर, पत्रकार राम कुशवाह, रविन्द्र सिसौदिया, नालछा पंचायत सचिव जगदीश गिरवाल, नालछा थाने से एसआई नरपत जमरा,एसआई देवकरण सोलंकी, एएसआई कमल यादव, एएसआई प्रेम सिंह धाकड़, एएसआई ओशाब खान, एएसआई रामेश्वर, प्रधान आरक्षक धर्मेश रायकवाड, प्रधान आरक्षक अनिल दसोरिया, आरक्षक राहुल निनामा, आरक्षक श्याम परमार सहित नगरवासी मौजूद थे.

आरडी स्कूल की फाउंडर डायरेक्टर शिक्षाविद् ऋतु खण्डेलवाल ने फिनलैंड देश की शिक्षा प्रणाली का किया अध्ययन

● दुनिया में नंबर 1 मानी जाती है फिनलैंड की शिक्षा प्रणाली

● देश के चुनिंदा शिक्षाविद् अध्ययन यात्रा में हुए थे शामिल

बैतूल। दुनिया में नंबर 1 शिक्षा प्रणाली वाले फिनलैंड देश की समूची शिक्षा प्रणाली का अध्ययन करने आरडी पब्लिक स्कूल की डायरेक्टर, शिक्षाविद् फाउंडर डायरेक्टर, शिक्षाविद् ऋतु खण्डेलवाल ने गत दिनों देश के चुनिंदा शिक्षाविदों के साथ फिनलैंड की अध्ययन यात्रा की। फिनलैंड की हेलसिंकी यूनिर्वसिटी के आमंत्रण पर समूचे मध्यप्रदेश से श्रीमती खण्डेलवाल 4 दिन की अध्ययन यात्रा पर गई थी। अध्ययन यात्रा के दौरान उन्होंने हेलसिंकी यूनिर्वसिटी के चुनिंदा स्कूलों का भ्रमण कर वहां की शिक्षा प्रणाली का अध्ययन किया एवं शिक्षा प्रणाली से संबंधित विभिन्न कार्यशालाओं में शामिल होकर वर्ल्ड क्लास रिसर्च बेस एजुकेशन सिस्टम की बारिकियों को समझा। अध्ययन यात्रा के दौरान उन्होंने वहां की शिक्षा नीति, केरिकूलम, सिलेबस, टीचर सेलेक्शन, तनाव रहित वातावरण, शिक्षकों का समर्पण भाव, शिक्षा में स्वायतता के बारे में वहां के एजुकेशन एक्सपर्ट से जानकारी सांझा की। देशभर के चुनिंदा शिक्षाविदों के साथ श्रीमती ऋतु खण्डेलवाल ने शिक्षा को सर्वश्रेष्ठ बनाने वाली हेलसिंकी यूनिर्वसिटी के सदस्यों से भी विशेष रूप से चर्चा की। श्रीमती खण्डेलवाल ने बताया कि अध्ययन के दौरान उन्होंने पाया कि वहां का तनावरहित वातावरण एवं शिक्षकों का समर्पण भाव ही फिनलैंड की शिक्षा प्रणाली को शिक्षा के क्षेत्र में दुनिया में सर्वश्रेष्ठ बनाए हुए

है।

देश के ये शिक्षाविद् अध्ययन यात्रा में हुए शामिल- दुनिया की नंबर 1 शिक्षा प्रणाली में शुमार फिनलैंड देश की वर्ल्ड क्लास हेलसिंकी यूनिर्वसिटी के आमंत्रण पर वहां की शिक्षा प्रणाली का अध्ययन करने के लिए मध्यप्रदेश से एकमात्र शिक्षाविद् आरडी पब्लिक स्कूल की फाउंडर डायरेक्टर ऋतु खण्डेलवाल 11 से 14 सितम्बर तक 4 दिन की अध्ययन यात्रा पर फिनलैंड गई थी। अध्ययन यात्रा में देश के चुनिंदा शिक्षाविद् लोधा इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर एजुकेशन, मुंबई के हेड ऑफ कैरिक्लुम एंड क्वालिटी आशा नारायणास, ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल रांची के अकेडमिक डायरेक्टर डॉ.सिमी मेहता, वेल्थ ग्रुप ऑफ इंस्टीटियूशन चैन्नई के गणेश प्रीथा, संत अतुलानंद कान्वेंट स्कूल के असिसटेंट डायरेक्टर आयुस्मान सिंह वाराणासी, एमईएस इंडियन स्कूल, हमीदा कादर, दोहा कतर, भारतीय विद्या भवन जीएम विद्या मंदिर के एकेडमिक डायरेक्टर आशीष कुमार सरकार नागपुर, जी लर्न लिमिटेड के हेड एकेडमिक एंड कन्टेंट डिलीवरी किंगस्टोन माइकल डिसूजा मुंबई सहित अन्य शिक्षाविद् शामिल थे।

तनावरहित माहौल-शिक्षकों का समर्पण ने शिक्षा के क्षेत्र में दुनिया में सर्वश्रेष्ठ बनाया- वर्ल्ड क्लास एजुकेशन वाले फिनलैंड देश की शिक्षा प्रणाली के संबंध में आरडी पब्लिक स्कूल की डायरेक्टर श्रीमती ऋतु खण्डेलवाल ने बताया कि वहां का तनावरहित वातावरण एवं शिक्षकों का समर्पण भाव ही फिनलैंड को शिक्षा के क्षेत्र में दुनिया में सर्वश्रेष्ठ बनाए हुए है। उन्होंने बताया कि सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रणाली का मुख्य आधार हिलसिंकी यूनिर्वसिटी है। यहां की शिक्षा नीति का हर 10 वर्षो में बदलाव कर उसे सुदृढ़ बनाया जाता है। शिक्षा नीति को बेसिक मॉडल पर तैयार किया जाता है तथा यहां की शिक्षा नीति कॉनसिस्टेंट एवं लॉग टर्म विजन के साथ बनाई जाती है। श्रीमती खण्डेलवाल ने बताया कि फिनलैंड में अधिकारों के विकेन्द्रीकरण के साथ स्कूल टीचर एवं नगरीय निकाय के अधिकारी मिलकर शिक्षा सिलेबस तैयार करते है जिससे जो शिक्षकों के महत्व को रेखांकित करते है।

बुनियादी शिक्षा पर दिया जाता है जोर- श्रीमती खण्डेलवाल ने बताया कि फिनलैंड के

एजुकेशन सिस्टम में बुनियादी शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाता है। वहां 6 साल के पहले अर्ली चाइल्ड हूड एजुकेशन पर ध्यान दिया जाता है तथा कक्षा 1 से 9वीं तक बुनियादी शिक्षा पर जोर रहता है। कक्षा 9वीं के बाद बच्चे या तो वोकेशन शिक्षा को चुन सकते है या अपर सेकेण्ड्री स्कूल की पढ़ाई करते है। उन्होंने बताया कि वहां कक्षा 12वीं की पढ़ाई करने के बाद बच्चे यूनिर्वसिटी जा सकते है लेकिन पूरा एजुकेशन सिस्टम ओपन है जिसमें बच्चें किसी भी वक्त मैन स्ट्रीम से वोकेशनल और वोकेशनल से मैन स्ट्रीम स्कूल की ओर जा सकते है। वहां 18 वर्ष तक बच्चों का पढ़ना अनिवार्य है। फिनलैंड एजुकेशन सिस्टम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वहां कक्षा 1 से लेकर पीएचडी तक की पूरी शिक्षा निःशुल्क है साथ ही बच्चों और शिक्षकों को भरपूर स्वायतता है लेकिन शिक्षकों की चयन प्रणाली अत्यंत ही कठिन है। शिक्षकों के चयन में सिर्फ और सिर्फ योग्यता पर ही फोकस रखा जाता है।

राइट क्लिक

कश्मीर अब- 2

अब आप श्रीनगर के 'लाल चौक' में बेखौफ घूम सकते हैं...

अजय बोकिल

बारह साल पहले जब कश्मीर गया था तो श्रीनगर के हृदय स्थल 'लाल चौक' देखने की इच्छा जताने पर हमारे साथ मौजूद सुरक्षा कर्मियों ने सलाह दी थी कि आप कहीं भी अपनी मर्जी से न जाएं। पहले हमे बताएं और सुरक्षा घेरे में ही चलें। क्योंकि कहीं भी अनहोनी हो सकती है। लाल चौक तो उन दिनो पत्थरबाजों का 'स्वर्ग' बना हुआ था। इसके आसपास की बस्तियों को अलगाववादियों का अड्डा माना जाता था। लिहाजा हमने सुरक्षाकर्मियों के साथ ही लाल चौक देखा। तब भी बाजार खुला था, लेकिन लाल चौक के घंटाघर पर कोई झंडा नहीं था। आवाजाही थी, लेकिन माहौल में तनाव साफ महसूस किया जा सकता था।

लाल चौक दरअसल एक चौक है, जहां घंटाघर बना है। यह करीब एक सदी से कश्मीर में राजनीतिक और व्यापारिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। इस घंटाघर को लाल चौक नाम 1917 में रूस में हुई साम्यवादी क्रांति के बाद वामपंथियों ने दिया था। ये वामपंथी और स्थानीय लोकतंत्र समर्थक तत्कालीन महाराजा हरिसिंह की राजशाही के खिलाफ लड़ाई लड़ रहे थे।

इस लाल चौक को अलग महत्व तब मिला जब 1947 में भारत की आजादी के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने यहां पहली बार तिरंगा फहराया। उसके बाद कश्मीर के कई बड़े नेता जिनमे पूर्व मुख्यमंत्री शेख अब्दुल्ला भी शामिल हैं, यहां तिरंगा फहराते रहे। 1980 में इस चौक पर घंटाघर का निर्माण किया गया। लेकिन 1990 में कश्मीर में अलगाववादी ताकतों के उभार के बाद यह लाल चौक कश्मीर में आतंक और आजादी के समर्थक तत्वों का अड्डा बन गया। सुरक्षा कर्मियों और गैर कश्मीरियों पर यहां हमले होने लगे। लाल चौक में तिरंगा फहराना असंभव हो गया और पत्थरबाजी आम हो गई। इस बीच 1992 में भाजपा नेता मुरली मनोहर जोशी ने अपनी एकता यात्रा का समापन भारी सुरक्षा के बीच तिरंगा फहराकर इसी लाल चौक पर किया था। जबकि इस साल 29 जनवरी को कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भी अपनी 'भारत जोड़ो यात्रा' का समापन लाल चौक में तिरंगा फहराकर किया था। इस दौरान वहां माहौल सामान्य था।

बीते चार साल में बड़ा फर्क यह देखने को मिला कि इसी घंटाघर के ऊपर तिरंगा अब स्थायी रूप से लहराने लगा है। इसे पिछले साल ही स्थापित किया गया है। स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत पूरे घंटाघर का नवीनीकरण और चौक का सौंदर्यीकरण किया जा रहा है। यहां फव्वारे और लोगों के बैठने के लिए बेचें लगा दी गई है। अब वहां पहले की तरह ज्यादा सुरक्षाकर्मी नहीं दिखते। यहां शहर का मुख्य बाजार भी है, इसलिए लोग आम दिनों की तरह आते- जाते, खरीदारी करते दिखे। श्रीनगर आने वाले सभी पर्यटक लाल चौक आते और तस्वीरें जरूर खिंचवाते हैं। कोकरनाग के आतंकी हमले में शहीद हुए वीरों को यहां आयोजित शोक सभा में लोगों ने श्रद्धांजलि भी दी।

लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि कश्मीर सब कुछ एकदम सामान्य है। वहां सुरक्षा बलों की भारी तैनाती से हालात को काबू में रखा हुआ है। लेकिन जब तब आतंकी हमले, घुसपैठ और कश्मीर में अलगाववाद भड़काने की कोशिश बदस्तूर जारी हैं। बीती 14 सितंबर को जब कश्मीर के कोकरनाग में बड़ा आंतकी हमला हुआ और इसमें सेना के दो और जम्मू कश्मीर पुलिस का एक वरिष्ठ अधिकारी सहित कुछ जवान भी शहीद हुए तो जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यीमंत्री और नेशनल कांफ्रेंस के नेता फारूख अब्दुल्ला ने सवाल उठाया था कि कौन कहता है कि कश्मीर में शांति बहाल हो गई है? फारूख का कहना इस मायने में सही था कि धारा 370 हटने के बाद भी कश्मीर घाटी में आतंकी हमले थमे नहीं हैं, तुलनात्मक रूप से उसमें कमी जरूर आई है। क्योंकि सुरक्षा बल आतंकियों के एक षड्यंत्र को नाकाम करते हैं तो वो दूसरा नया तरीका ढूंढ लेते हैं। कई लोगों ने 2019 के पुलवामा हमले पर सवाल उठाए थे। इस आत्मघाती हमले में सीआरपीएफ के 40 जवान शहीद हुए थे। इस हमले में भी आतंकियों ने नए तरीके का इस्तेमाल किया था। 14 फरवरी 2019 को यह हमला पुलवामा जिले के लेथपुरा गांव के बीचोबीच हुआ था। हालांकि विस्फोट के कारण बना भारी गड्ढा अब भर दिया गया है, लेकिन यह जगह अब पर्यटकों की जिज्ञासा का केन्द्र बन गई है। लेथपुरा अपने केसर व ड्राट फ्रूट मार्केट के लिए जाना जाता है। स्थानीय लोग बताते हैं कि इस हमले में आतंकी ने ढलान पर बने गांव के एक हिस्से को जम्मू- श्रीनगर राजमार्ग से जोड़ने वाली एक सड़क का इस्तेमाल किया था। वह ढलान से विस्फोटक भरी प्राइवेट कार में ऊपर आया और राजमार्ग से गुजर रहे सीआरपीएफ के काफिले से टकरा गया। इससे भयानक विस्फोट हुआ और सुरक्षाकर्मी कुछ समझ पाते, तब तक चालीस जवान मौत की नींद सो चुके थे। इस हमले से सबक लेकर अब सेना और पुलिस के कॉन्वाय (काफिले) जब निकलते हैं तो पूरे ट्राफिक को आधा किमी पहले ही रोक दिया जाता है और पूरा काफिला निकल जाने के बाद ही सामान्य नागरिकों को निकलने की अनुमति दी जाती है। इससे लोगों को असुविधा जरूर होती है, लेकिन पुलवामा जैसे हमलों को रोकने के लिए सुरक्षा बलों को यह कदम उठाना पड़ा है। कश्मीर में राजमार्ग की सुरक्षा का मुख्य जिम्मा सीआरपीएफ के पास है। श्रीनगर में भी सेना और सीआरपीएफ के हथियारबंद जवान जगह- जगह तैनात रहते हैं। स्थानीय लोगों को इसकी आदत हो गई है। कोकरनाग में भी आतंकियों ने अब एक तरीके का इस्तेमाल किया, जिसे ध्वस्त करने के लिए सेना को अपने आधुनिक हथियारों का प्रयोग करना पड़ रहा है। अब आंतकी ऊंची पहाड़ियों और जंगलों के रास्ते से हमला कर रहे हैं। अब सीधे शहरों में घुसकर हमला करने या टारगेट किलिंग की अपनी पुरानी रणनीति को उन्होंने बदल दिया है।

कश्मीर का मुद्दा जिंदा रखने के लिए पाकिस्तान और दूसरी अलगाववादी ताकतें हरदम सक्रिय रहती हैं। सरकार की सख्ती से अलगाववादियों की विदेशी फंडिंग पर काफी अंकुश लगा है। यह साफ हो चुका है कि पत्थरबाजी के पीछे इन्हीं लोगों का हाथ था। पाकिस्तान की पैरवी करने वाले हुर्रियत के सभी नेता सलाखों के पीछे हैं। लेकिन एक बात साफ है कि बीते चार बरस में फरक यह आया है आतंकियों को स्थानीय लोगों का समर्थन अब पहले जितना नहीं रह गया है। इस वजह से भी आतंकियों ने अपनी रणनीति बदली है। दूसरे, सेना केवल बंदूक ही नहीं चलाती। 'सद्भावना प्रोजेक्ट' के तहत वो स्थानीय लोगों का दिल जीतने की भी पूरी कोशिश कर रही है। इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत आर्मी कश्मीर घाटी में 45 आर्मी गुडविल स्कूल संचालित कर रही है। जिनमें 15 हजार से ज्यादा बच्चे पढ़ रहे हैं। इन स्कूलों में शिक्षक भी स्थानीय कश्मीरी ही होते हैं। ये सभी स्कूल सीबीएसई से सम्बद्ध है और इनमें प्रवेश पाने के लिए काफी होड़ मची रहती है। यही नहीं इन स्कूलों से निकलने वाले होनहार बच्चों को प्रतियोगी परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए सेना कोचिंग भी उपलब्ध कराती है। इसके अलावा सैनिक अस्पतालों में स्थानीय लोगों का इलाज भी किया जाता है। एक और बड़ा कदम सेना ने सरेंडर करने वाले आतंकियों को रोजगार देने का भी किया है ताकि पैसे के लालच में वो फिर आतंकी रास्ते पर न लौटें। इन लोगों को पूरी जांच- पड़ताल के बाद असैनिक कामों में लगाया जाता है। ऐसे कई लोग नई जिंदगी जी रहे हैं। इस बात को समझा जा सकता है कि पंजाब की तरह कश्मीर के लोग भी अब आतंक और खून खच्चर के उन पुराने दिनों में नहीं लौटना चाहते। लेकिन यह भी सही है कि वहां आतंकवाद का पूरी तरह खात्मा होने में बहुत वक्त लगेगा।

कुंवर रघुनाथ शाह के बलिदान दिवस पर कमलनाथ ने कहा आदिवासियों में कांग्रेस का डीएनए

पेसा कानून में घोटाला हुआ, मरकाम ने लगवाया नारा- शिकारपुर के वासी हैं, कमलनाथ आदिवासी हैं

भोपाल (नप्र)। भोपाल के मानस भवन में राजा शंकर शाह और कुंवर रघुनाथ शाह के बलिदान दिवस पर आदिवासी कांग्रेस ने कार्यक्रम आयोजित कराया। जहां कमलनाथ ने कहा, आदिवासियों का डीएनए कांग्रेस का है। बीजेपी सरकार ने पेसा कानून में भी घोटाला किया। कांग्रेस विधायक और पूर्व मंत्री ओमकार सिंह मरकाम ने कमलनाथ को लेकर नारा लगवाया- 'शिकारपुर के वासी हैं-कमलनाथ आदिवासी हैं '।

कमलनाथ के नारे लगवाने के बाद मरकाम ने आगे कहा- मुझसे कई लोगों ने पूछा, आप कौन होते हो कमलनाथ जी को आदिवासी का सर्टिफिकेट देने वाले? मैंने कहा दो प्रकार का सर्टिफिकेट मिलता है एक जन्म से मिलता है और दूसरा कर्म से मिलता है। कर्म के आधार पर यह समाज आपको आदिवासी का सर्टिफिकेट देता है। उम्मीद करता हूं कि आपका संघर्ष जरूरी है आप हमारे नेता हैं। भोपाल के मानस भवन में आयोजित इस कार्यक्रम में पीसीसी चीफ कमलनाथ, आदिवासी कांग्रेस के अध्यक्ष रामू टेकाम, पूर्व मंत्री ओमकार सिंह मरकाम सहित तमाम नेता मौजूद रहे। कमलनाथ ने मप्र सरकार पर जमकर हमला बोला।

आदिवासियों का डीएनए कांग्रेस का है...- कमलनाथ ने कहा रघुनाथ शाह, शंकर शाह की कुर्बानी का अपना इतिहास है। मैं दोहराना नहीं चाहता। ये हमारे लिए एक उदाहरण है कि किस तरीके से एक बाप बेटे ने अंग्रेजों के खिलाफ मुहिम छेड़ी। जेल गए और दोनों साथ-साथ तोप से उड़ा दिए गए। आप सब में एक बात बड़ी कॉमन है आप सबका खून, आप सबका डीएनए.. कांग्रेस का डीएनए है।

आदिवासियों पर हो रहा अत्याचार- मध्य प्रदेश में आदिवासियों को अपने अधिकारों के लिए लड़ना पड़ रहा है। आप सब ने सब कुछ सीखा अपने मेहनत करना सीख लेकिन मुंह चलाना नहीं सीखा। प्रदेश में अगर सबसे पहले किसी का हक है तो हमारे आदिवासी भाइयों का हक है। इस हक की लड़ाई को हम मिलकर लड़ेंगे। आज पूरे देश में आदिवासियों पर अत्याचार मध्य प्रदेश नंबर वन है। यह केंद्र सरकार के आंकड़े बताते हैं।

बड़े-बड़े अस्पताल बन गए, लेकिन डॉक्टर नहीं हैं

पीसीसी चीफ कमलनाथ ने कहा, मध्य प्रदेश में जिस प्रकार से हमारे आदिवासी दलित भाइयों पर अत्याचार किया जा रहा है। इस प्रकार की घटनाएं किसी से छिपी नहीं है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार उन कुकर्मों को दबाने का प्रयास करती है। भाजपा की सरकार को 18 साल हो गए। लेकिन अभी भी शिक्षा व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त है। हॉस्पिटल की बड़ी बड़ी बिल्डिंग बन गई। ठेके में कमीशन ले लिया। लेकिन अस्पतालों में डॉक्टर नहीं है। ये (बीजेपी) पेसा कानून की बात करते हैं। लेकिन पेसा कानून में आदिवासियों को कोई अधिकार नहीं मिला।

पेसा कानून कांग्रेस की देन, बीजेपी ने इसमें भी घोटाला किया...

आदिवासियों को 18 साल में दिया कुछ नहीं लेकिन सब कुछ छीन लिया। कितने साल लग गए पेसा कानून लाने में, अब पेसा का कानून लाए और उसकी भर्ती में भी घोटाला हो गया। पेसा कानून आपका अधिकार था। वह कांग्रेस पार्टी लाई थी। जब तक आदिवासी समाज संगठित होकर नहीं लड़ेगा। तब तक आप जहां के तहां खड़े रह जाएंगे।

कांग्रेस की सरकार 15 महीने रही। जिसमें से ढाई महीने आचार संहिता में गए। साढ़े 11 महीने हमने अपनी नीति और नीयत का परिचय दिया। हमने किसानों का कर्ज माफ किया। आदिवासियों के हितों की योजना बनाई। अब हमें नई शुरुआत करनी पड़ेगी। आप लोग अपना डिमांड पत्र बनाएं। आपको हाथ जोड़कर नहीं मांगना पड़ेगा। आप छाती ठोक कर मांग कीजिए।

आदिवासियों को अंतिम संस्कार के लिए भटकना पड़ता है...

कमलनाथ ने कहा, लोगों को अंतिम संस्कार के लिए भी भटकना पड़ता है। आपके पास कोई भूमि नहीं है। यह हालत 2023 में है। हमारे छात्रावासों की क्या हालत है? मैं इंदौर गया था सारे आदिवासी हॉस्टल के बच्चों के साथ हमने कार्यक्रम किया। एक भी गैर आदिवासी को आने नहीं दिया। उनकी बात सुनी।बच्चों ने बताया कि, कहीं पानी नहीं तो कहीं बिजली नहीं है। छत टपक रही है।

नौजवानों के भविष्य की चुनौती..

कमलनाथ ने कहा- आज सबसे बड़ी चुनौती हमारे आदिवासी नौजवानों के भविष्य की है। आज का आदिवासी और 20 साल के नौजवान में नई तड़प है। वह मजदूरी नहीं करना चाहता है। वह कोई ठेका नहीं चाहता। कोई कमीशन नहीं चाहता। वह तो अपने व्यवसाय या फिर अपने हाथों में को काम चाहता है।

कमलनाथ ने कहा, हमारी प्राथमिकता रहेगी। जितने भी पद हैं, जितने प्रमोशन रुके हुए हैं इस सब को हमें सुधारना पड़ेगा। आसानी से आपको नौकरी मिल सके। आदिवासी भाइयों को व्यवसाय शुरू करने का मौका मिले। हमें इसको बढ़ावा देना है। यह सारी बातें हमने सोचकर रखी है। मैं आपसे इतना चाहता हूं कि अगले 3 महीने में चुनाव है। यह चुनाव किसी उम्मीदवार पार्टी का नहीं मध्य प्रदेश के भविष्य का चुनाव है।

मैं आदिवासी समाज से सबसे ज्यादा उम्मीद करता हूं कि आप अपने समाज पर हुए अत्याचार की तस्वीर अपने सामने रख लीजिए। फिर फैसला कीजिए। कमलनाथ का साथ मत दीजिएगा। कांग्रेस का साथ मत दीजिएगा। लेकिन सच्चाई का साथ दीजिएगा। अगर हमारे प्रदेश का आदिवासी समाज सच्चाई का साथ देगा तो कांग्रेस का झंडा मध्य प्रदेश की विधानसभा में लहराने से कोई नहीं रोक सकता।

सिंधिया समर्थक प्रमोद टंडन ने भाजपा छोड़ी, दिनेश मल्हार का भी इस्तीफा

इस्तीफे का कारण भाजपा में उपेक्षा, इसलिए भाजपा छोड़ दी

इंदौर। विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा को शहर में एक और झटका लगा। इस बार ज्योतिरादित्य सिंधिया समर्थक प्रमोद टंडन और दिनेश मल्हार ने भाजपा से इस्तीफा दिया। दोनों ने अभी कांग्रेस वापसी की बात नहीं कह, पर समझा जा रहा है कि वे 23 सितंबर को कांग्रेस में चले जाएंगे।

इनके इस्तीफे का कारण भाजपा में उपेक्षा बताया जा रहा है। इसी के चलते इन्होने भाजपा छोड़ दी। इस्तीफा देने के बाद प्रमोद टंडन ने शायराना अंदाज पर टिप्पणी की कि 'कुछ तो कारण रहा होगा, यूं ही कोई बेवफा नहीं होता।' दिनेश मल्हार ने भी कहा कि अभी भाजपा से इस्तीफा दे दिया है, कुछ दिन में फैसला लूंगा कहां जाऊंगा। दिनेश मल्हार विद्यार्थी परिषद के पुराने कार्यकर्ता रहे हैं। वे राऊ विधानसभा से 2008 से ही टिकट की दावेदारी कर रहे थे। लेकिन, पार्टी ने कभी उनकी दावेदारी को गंभीरता से नहीं लिया। प्रमोद टंडन को सिंधिया का समर्थक माना जाता है, उनके कांग्रेस छोड़ने के बाद ही 8 जून 2020 को टंडन भी कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आए थे। बताया जा रहा कि दोनों 23 सितंबर को कांग्रेस ज्वाइन कर सकते हैं। इस दिन प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ का शहर में कार्यक्रम है। उनके सामने ये प्रमोद टंडन और दिनेश मल्हार कांग्रेस में आ सकते हैं। प्रमोद टंडन इंदौर की छात्र राजनीति से निकले हैं। वे युवक कांग्रेस और शहर कांग्रेस अध्यक्ष भी रह चुके हैं। सिंधिया समर्थक होने के कारण ही उन्हें शहर अध्यक्ष भी बनाया गया था। वे करीब 7 साल अध्यक्ष रहे थे। टंडन पिछले करीब 6 महीने से भाजपा में हो रही उपेक्षा के कारण नाराज थे। इसके बारे में वे भाजपा संगठन और संघ को जानकारी दे चुके थे।

भोपाल मेट्रो की पहली झलक

सुभाष नगर डिपो में हुए अनलोड, गणेश उत्सव के दौरान ट्रायल रन की संभावना

भोपाल (नप्र)। गणेश चतुर्थी से एक दिन पहले भोपाल मेट्रो की पहली झलक सामने आ गई। अब ट्रायल रन कब होगा, इसका इंतजार है। संभवतः दस दिवसीय गणेश उत्सव के दौरान ट्रायल रन हो जाए। सोमवार सुबह तीन कोच को अनलोड करने से पहले डायरेक्टर शोभित टंडन ने इनकी पूजा-अर्चना की। यहां मौजूद कर्मचारियों ने ताली बजाकर कोच को ट्राले से उतारने का काम शुरू किया। इसके बाद दो बड़ी क्रेन के सहारे एक-एक कोच को डिपो में ट्रालों से उतारा गया।

गुजरात के सांवली, बड़ोदरा से करीब 850 किमी की दूरी तय करके मेट्रो के 3 कोच रविवार देर रात भोपाल आ गए थे। 74 पहियों (ट्राले में 64 और इंजन 10 पहिए हैं।) के ट्रॉले से कोच शहरी हिस्सों से होते हुए सुभाष नगर डिपो लाए गए। टेस्टिंग के बाद ट्रायल की डेट तय होगी। 22 से 25 सितंबर के बीच ट्रायल किया जा सकता है। कोच गुजरात से 8 दिन में भोपाल पहुंचे हैं। रविवार रात में कोच शहरी सीमा तक आ गए थे। देर रात इन्हें सुभाष नगर डिपो तक लाया गया। कोच पहुंचने से पहले ही सुभाष नगर डिपो में अनलोडिंग से जुड़ी सारी तैयारियां पूरी कर ली गई थीं। मेट्रो कॉर्पोरेशन की पूरी टीम इस काम में जुटी रही।

हर कोच की इतनी लंबाई-चौड़ाई- हर कोच की चौड़ाई 2.9 मीटर और लंबाई 22 मीटर है। सोमवार सुबह 10 बजे कोच को पूजा-अर्चना कर ट्रैक पर लाया गया। डिपो 80 एकड़ जमीन पर बन रहा है। यही से मेट्रो ट्रेनों का संचालन होगा। ट्रेनों का नाइट हॉल्ट भी यही पर होगा।

इंदौर में पहले ही आ चुके- इंदौर में मेट्रो कोच 31 अगस्त को ही आ चुके हैं। अब तक टेस्टिंग होती रही। एक-दो दिन में ट्रायल हो सकता है।

ऑरेंज लाइन पर होगा ट्रायल- भोपाल के एम्स से सुभाष नगर तक बिछाई गई 6.22 किमी ऑरेंज लाइन पर यह कोच दौड़ेंगे। हालांकि, ट्रायल रन सुभाष नगर डिपो से रानी कमलापति स्टेशन के बीच ही होगा। मई-जून 2024 में आम लोग मेट्रो में सफर कर सकेंगे।

पांच स्टेशन पर होगा ट्रायल- प्रायोरिटी कॉरिडोर में कुल आठ स्टेशन हैं। इनमें एम्स हॉस्पिटल, अलकापुरी, डीआरएम ऑफिस, आरकेएमपी स्टेशन, सरगम टॉकीज, डीबी मॉल, केंद्रीय स्कूल और सुभाष नगर स्टेशन शामिल हैं। ट्रायल रन करीब साढ़े तीन किलोमीटर में सुभाष नगर स्टेशन से आरकेएमपी स्टेशन तक किया जाएगा। ट्रायल से पहले मेट्रो स्टेशनों पर लगे एस्कलेटर, लिफ्टस, स्ट्रक्चर/शेड, ट्रैक, अग्निशमन संबंधित कार्य चल रहे हैं।

ट्रायल रन के बाद सेफ्टी ट्रायल- मेट्रो के ट्रायल रन के बाद दिल्ली से टीम आएगी, जो सेफ्टी ट्रायल एवं अन्य गतिविधियां करेंगी। इसके बाद अगले वर्ष मई-जून 2024 में कमर्शियल/पैसेंजर ऑपरेशन का संचालन किया जाएगा।

बालाघाट में पुलिस पर नक्सलियों ने की फायरिंग

बालाघाट (नप्र)। बालाघाट में रविवार शाम देवरबेली चौकी के मलकुंआ और राशिमेटा के जंगल में हॉकफोर्स के जवानों और नक्सलियों के बीच एक्सचेंज ऑफ फायरिंग हुई। हॉकफोर्स की ओर से 8 से 10 राउंड फायर होने की जानकारी मिली है। पुलिस अधीक्षक समीर सौरभ ने बताया कि सर्चिंग कर रही हॉकफोर्स की टीम पर मलाजखंड दलम के नक्सलियों ने फायरिंग की। जवाब में हॉकफोर्स ने भी फायरिंग की। इसके बाद नक्सली जंगल का फायदा उठाकर भाग गए। नक्सली दल में लगभग 10 से 12 नक्सली थे। घटनास्थल की सर्चिंग में हॉकफोर्स को नक्सली टेंट, मल्टीमीटर, 12 वॉट बैटरी, यूएसबी चॉर्जर, बैटरी क्लिप, बर्तन, तिरपाल और बड़ी संख्या में दैनिक उपयोग की सामग्री मिली है। घटना के बाद पुलिस अलर्ट मोड पर है। पूरे क्षेत्र में अतिरिक्त अतिरिक्त सुरक्षाबलों के साथ जंगल में सर्चिंग तेज कर दी है।

मुख्यमंत्री ने अमर शहीद स्वतंत्रता सेनानी मदनलाल ढींगरा की जयंती पर किया नमन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने अमर शहीद स्वतंत्रता सेनानी मदनलाल ढींगरा की जयंती पर नमन किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने निवास कार्यालय स्थित सभागार में उनके चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की। श्री मदनलाल ढींगरा का जन्म 18 सितंबर 1883 को पंजाब प्रांत में हुआ। उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश लिया। लंदन में श्री ढींगरा प्रख्यात राष्ट्रवादी श्री विनायक दामोदर सावरकर तथा श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा के संपर्क में आए। वहां के सभी देशभक्त, श्री खुदीराम बोस, श्री कन्हाई लाल दत्त, श्री सत्येंद्र पाल और श्री काशीराम जैसे क्रांतिकारियों को मृत्युदंड दिए जाने से क्रोधित थे। परिणाम स्वरूप इंडियन नेशनल एसोसिएशन के वार्षिक उत्सव में स्वतंत्रता सेनानी मदनलाल ढींगरा ने सर विलियम हट कर्जन वायली पर गोलियां दाग दीं। प्रकरण की सुनवाई के बाद 17 अगस्त 1909 को ब्रिटिश सरकार द्वारा क्रांतिकारी श्री ढींगरा को फांसी दे दी गई।